स्वप्न और सत्य



डॉ० ब्रजमोहन गुप्त एम० ए०, डी० फिल०

प्रथमावृत्ति
१०००
सं० २००४ वि०

प्रकाशकः—
साहित्यकार-संसद् की ओर से
प्रयाग महिला-विद्यापीठ

मुद्रकः—
कृष्णा-प्रेस
२६ हिवेट रोड, प्रयाग ।

मूल्य
३॥)

अपना दृष्टिकोण—

कहानी और उपन्यास को उनके शैशव-काल में हल्के साहित्य में स्थान मिला था और तभी से दोनों उच्चतम और गहनतम साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्षकरते आ रहे हैं। कहानी मनोरंजक हो, यह मैं एक सफल कहानी की पहली शर्त मानता हूँ किन्तु उच्चकोटि की कहानियों से आशा करता हूँ कि उन में मानव-जीवन की गहनतम अनुभूतियों और भावनाओं का अभि-व्यक्तिकरण और विश्लेषण हो; वे पाठक की सौन्दर्य-बोध की भावना को स्पर्श करके उसे हलके मनोरंजन से कुछ अधिक उच्च-कोटि का आनन्द प्रदान करें और साथ ही अधिक से अधिक व्यक्तियों के लिए अधिक सुखमय संसार के निर्माण के लिए जो महान्-संघर्ष चल रहा है, उसे बल दें। मेरी आस्था है कि ये तीनों बातें एक दूसरे की विरोधी नही हैं और इनके समन्वय द्वारा ही उच्च कोटि की स्वस्थ कला का विकास हो सकता है। इस कसौटी पर प्रस्तुत संग्रह की सब कहानियाँ

खरी उतरती हैं, यह मेरा दावा नहीं है। आदर्श, दिशा-निर्देश और गति के लिए प्रेरणा देने के लिए होता है, दो क़दम बढ़ाकर प्राप्त कर लेने की वस्तु वह होता भी नहीं। सामाजिक विकास और उन्नति की राह में रोड़ा अटकाने वाले या जीवन के संघर्ष में हार मान कर बैठ रहने की प्रेरणा देने वाले साहित्य का सृजन मैं सामाजिक अपराध मानता हूँ। प्रस्तुत संग्रह की कहानियों में, इस अपराध से मैं स्वयं किस सीमा तक मुक्त रह सका हूँ, इस सम्बन्ध में अपना निर्णय देना मुझे अनावश्यक प्रतीत होता है।

'जय-पराजय' की अधिकांश कहानियाँ सन् १६३४-३५ में लिखी गई थीं। 'कुसुमाञ्जलि' के अतिरिक्त प्रस्तुत संग्रह की सभी कहानियाँ सन् १६३६-३८ की लिखी हुई हैं। उसी समय 'विशाल-भारत', 'हंस' और 'रूपाभ' में इनमें से अधिकांश प्रकाशित भी हुई थीं। उस समय इस संग्रह में दी गई वैज्ञानिक कहानियों की मौलिकता के सम्बन्ध में शंका प्रकट की गई थी। 'प्रेम-कीटाणु' के सम्बन्ध में मासिक 'ज्योति' ने लिखा था "...अगर यह मौलिक है तो हिन्दी-साहित्य की अमर वस्तु है।" 'अमरता' जैसी किसी वस्तु पर तो मेरा विश्वास नहीं है। हाँ, मौलिकता के सम्बन्ध में इतना कहना चाहूँगा कि यह कैसे संभव है कि विदेशी साहित्य की कोई रचना मेरे अतिरिक्त और किसी व्यक्ति को पढ़ने के लिए न मिली हो। वैज्ञानिक कहानियों में अँगरेज़ी नाम केवल इसलिए दे दिये थे कि वे उस वातावरण के अधिक अनुकूल बैठते हैं। 'विज्ञानशाला में' और 'षड्यन्त्र' के सम्बन्ध में मौलिकता का दावा मैं उस सीमा तक नहीं कर सकता जिस सीमा तक अन्य सब रचनाओं के सम्बन्ध में। बहुत बचपन में बड़े भाई ने ज़बानी दो किस्से सुनाए थे। एक की धूमिल सी छाया 'विज्ञानशाला में' और दूसरे का बहुत ही परोक्ष प्रभाव

'षड्यन्त्र' में आ गया है। बाद में प्रयत्न करने पर भी मैं पता न चला सकी कि उन ज़बानी सुनाए गए किस्सों का आधार किस भाषा और किस लेखक की रचनाएँ थीं।

प्रगतिवाद का जो अंकुर सन् १९३६-३७ के आस-पास उगा था दस वर्ष के कठिन संघर्ष के बाद प्रायः सभी विरोधी प्रवृत्तियों को पराजित करके लगभग पूर्णतया स्थापित हो चुका है। प्रगतिवाद की अधिकांश मान्यताओं पर प्रारम्भ से ही मेरा विश्वास रहा है, किन्तु सन् १९३६-३८ का युग अन्धकार और संघर्ष में नया रास्ता टटोलने का युग था और नई धारा का सूत्रपात करनेवालों के मस्तिष्क में भी उस समय प्रगतिवाद की सब मान्यताएँ उस रूप में स्पष्ट नहीं थीं जिस रूप में आज हैं। पाठकों के लिए तो नहीं, किन्तु निर्णायकों के लिए यह आवश्यक है कि वे इस बात का ध्यान रक्खें।

'साहित्यकार-संसद्' के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिसकी कृपा से आठ वर्ष तक फाइल में पड़ी हुई ये कहानियाँ पुस्तक-रूप में पाठकों के सामने जा रही हैं।

—व्रजमोहन

निर्देशिका

स्वप्न और सत्य

प
थ
नि
र्दे
श

आज मनोजकुमार को मरे लगभग दो वर्ष हो गये, इस सात सौ दिन से कुछ अधिक लम्बे अर्से में, वह मेरे हृदय की आँखों के सामने से, उसी प्रकार ओझल हो गया था, जिस प्रकार गर्म पानी में पड़ी नमक की डली अदृश्य हो जाती है; और आज जब वह मानो मेरे शरीर के रक्त की एक-एक बूँद में से सिमट-सिमटकर फिर हृदय में साकार हो उठा है तो लगता है, समय ने उसे मेरे हृदय से धो नहीं दिया था, बल्कि सम्पूर्ण शरीर में घोल दिया था जिससे वह और भी अधिक अच्छी तरह मेरी सत्ता के साथ एकाकार हो सके।

और आज मुझे जब ध्यान आता है कि मनोजकुमार है नहीं, मर गया तो बड़ा विचित्र-सा लगता है। मैं सोचता हूँ वह मर गया किन्तु मरकर गया कहाँ? वह गज भर चौड़ा, दो गज लम्बा और ढाई फुट ऊँचा लकड़ियों का रथ, लाल लपटों के झोकों में, उसे कहाँ उड़ा ले गया, उसकी क्षितिज के समान विस्तृत और नवविकसित कलिका के सौरभ के समान पवित्र आकांक्षाएँ और पर्वत के समान दृढ़ तथा सागर के समान गहन मनसूबे अन्तरिक्ष के किस कोने में भटकते-फिरते होंगे? उसका वह सुडौल शरीर तो निस्सन्देह पृथ्वी, जल,

वायु, अग्नि, आकाश आदि तत्त्वों में पुनः विभाजित हो गया होगा, किन्तु उसकी वे अपरिमित उच्च आकांक्षाएँ तथा शाश्वत दृढ़ मनसूबे किस तत्त्व के साथ एकाकार हुए होंगे, कौन-सा तत्त्व ऐसा महान् होगा जो उन्हें सागर में जल-बिन्दु के समान अपने में लय कर सका होगा? जब इन बे-ढंगे प्रश्नों का कुछ भी उत्तर कहीं से नहीं मिलता तो हृदय उससे सम्बन्ध रखनेवाली न जाने कितनी स्मृतियों को सींच-सींचकर हरा करने लगता है।

बात सन् तीस की है जब देश में सविनय आज्ञा-भंग आन्दोलन चल रहा था। उस दिन किसी नेता की मृत्यु के उपलक्ष में हड़ताल थी। कांग्रेस का लम्बा जलूस तिरंगा झंडा लिये शहर के सब स्कूल और दूकानें बन्द करवाता फिर रहा था। शहर के जिस कोने से जलूस निकल जाता, वह कोना 'भारतमाता की'जय' आदि नारों से गूँज उठता था। ऐसा प्रतीत होता था मानो जनता में जीवन और जागृति साकार हो उठी है! खद्दर की टोपी, खद्दर का कुर्ता, खद्दर की धोती, और चप्पल इसके अतिरिक्त और कोई भी पोशाक दिखाई नहीं देती थी। मैंने देखा मनोजकुमार सैंडल्स सफ़ेद जीन की पेंट, और सफ़ेद टुइल की आधी अस्तीनोंवाली टेनिस कालर की कमीज पहने है। उसके मेरे परिचय को अधिक समय नहीं हुआ था। उस पोशाक पर मेरी दृष्टि पड़ी, जैसे गुलाब के फूलों के ढेर में पड़े केले के फूल पर अनायास ही दृष्टि पड़ जाय; किंतु मैंने कहा कुछ भी नहीं। उसके हलकी मुस्कान-युक्त चेहरे में मेरे लिए आकर्षण था।

जुलूस जब हाई स्कूल बंद करा चुका तो डी० ए० बी० कालिज बंद कराने चला। दोनों में लगभग डेढ़ मील की दूरी है। जब मनोजकुमार ने कहा कि चलो जुलूस के साथ थोड़ा घूम आयें तो मुझे प्रसन्नता ही हुई।

हम दोनो जुलूस से कुछ दूर रहकर चल रहे थे और कुमार कुछ गर्म प्रतीत होता था। वह कहने लगा--देखो कांग्रेस का संगठन ग़लत ढंग से हुआ है। उसके लिए आवश्यक है कि वह कुछ और अधिक डेमोक्रेटिक हो, कुछ और अधिक डिक्टेटोरियल हो। उसकी यह कांग्रेस-जैसी संस्था की आलोचना, जिसके प्रति मेरी असीम श्रद्धा थी, मेरी समझ में ठीक तरह नहीं आ रही थी, क्योंकि उसके विचारों और मेरी समझ के बीच में उसकी सफ़ेद जीन की पेंट दीवार बन कर खड़ी हो जाती थी। उसने अपने विचारों की व्याख्या आरम्भ की--अधिक डेमोक्रेटिक से मेरा तात्पर्य है कि कांग्रेसभवन का निर्माण नीचे से ऊपर की ओर हो। ग्रामों तथा शहरों की कांग्रेस-कमेटियों को अधिक मजबूत, अधिक शक्तिशाली बनाया जाय। कार्य-प्रणाली के निर्णय में उनका विशेष हाथ हो। अधिक डिक्टेटोरियल से मेरा तात्पर्य है कि क्षेत्र-विशेष में कांग्रेस-प्रेसिडेंट को अपनी इच्छानुसार कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता हो और उसके अविरोध अधिकारों का वह क्षेत्र बहुत अधिक सीमित न बना दिया जाय। उसकी व्याख्या चल रही थी और हजारों व्यक्तियों के कंठों से निकले नारों की गगन-भेदी ध्वनि बीच-बीच में उस शृंखला को भंग कर देती थी। तभी मैं सोचने लगता था, क्या वह संस्था जिसने देश में इतनी जागृति फूँक दी है, व्यक्तियों में इतनी आशा और इतना जीवन भर दिया है, आलोचना के योग्य है! क्या इस शृंखला की कोई भी कड़ी ग़लत हो सकती है। इस तिरंगे झंड़े के नीचे एकत्रित हुए इन उत्साही व्यक्तियों को कौन अधिक समय तक स्वतंत्रता से दूर रख सकेगा!

उसी समय कुमार कह रहा था--देखो जिस प्रकार के अधिकांश चवन्नी-सदस्य कांग्रेस के आज हैं, उस प्रकार के यदि तैंतीस करोड़ सदस्य भी हो गये तो विशेष लाभ न होगा। हमें सदस्यों की संख्या

की अपेक्षा, उनके संगठन की अधिक आवश्यकता है। और जब हम दोनों लौट रहे थे तो हमने देखा, देश के नेता की मृत्यु को भूल कर विद्यार्थी-समाज हड़ताल की छुट्टी की प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिए मैदान में गुल्ली-डंडा खेल रहा है, बंद दुकानों पर कहीं चौपड़ बिछी है, कहीं ताश का जमघट है और कहीं कहीं दस-बीस अधिक समझ-दार व्यक्ति शतरंज के बादशाह, वजीर तथा प्यादों की लड़ाई लड़ कर देश की स्वतंत्रता का नकशा हल करने का प्रयत्न कर रहे हैं !

× × ×

कुमार गर्मियों की दुपहरी में प्रायः मेरे यहाँ आ जाया करता था। उस समय तक हिन्दी के मासिक पत्र पढ़ने का शौक मुझे नहीं हुआ था। पंजाब से 'भारती' उन दिनों निकलनी आरंभ हुई थी, जो कुछ महीने निकल कर बंद हो गई। कुमार 'भारती' तथा दो-चार और मासिक, साप्ताहिक पत्रों की प्रतियाँ उठा लाता था, उनमें से कविता, कहानियाँ, लेख आदि पढ़ कर सुनाता था। मुझे ऐसा लगता था जैसे उसे दूसरों को पढ़ कर सुनाने का 'रोग हो। रचनाओं की अपेक्षा कुमार की खातिर अधिक उन्हें सुन लेना पड़ता था। उन्हीं दिनों शतरंज खेलने की लत भी मुझे पड़ी और प्रायः शतरंज खेलते-खेलते राजनैतिक विषयें पर वाद-विवाद छिड़ जाता था। वह कहता—गांधीजी आधुनिक भारत के सबसे बड़े साधक और तपस्वी हैं। उन्हें कौन श्रद्धा की दृष्टि से न देखेगा ! किन्तु मैं कहना चाहता हूँ कि श्रद्धा और अंध-विश्वास को समानार्थक बना देना कल्याणकारी नहीं है, वह कभी कल्याणकारी नहीं हो सकता।

और तभी मैं घोड़े की शह देकर कहता, यह शह और वजीर पिट गया। वह और गर्मी के साथ उत्तर देता—ठीक है, किन्तु मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ कि इस बीसवीं शताब्दी में, जब कि सारा संसार एक

इकाई बन गया है, और भारत को संसार से काट कर अलग रखना किसी भी प्रकार संभव नहीं है, क्या मशीनरी को त्याग कर चर्खे-तकली को आधार बनाना श्रेयस्कर होगा ? क्या संभव है कि और देशों से व्यापार बन्द कर दिया जाय, या चर्खे के भरोसे उनसे कम्पीट किया जाय, या प्रत्येक भारतवासी को ऐसा बना दिया जाय कि वह दो आने गज का मिल का कपड़ा छोड़ कर चार आने गज़ का खद्दर खरीदे, जब कि न वह उतना सुन्दर है और न उतना मजबूत ?

और जब उसकी इस प्रकार की बातों से एक प्रकार की अशांति-सी मेरे हृदय में पैदा होने लगती तो बिना उसकी बात का कुछ उत्तर दिये ही मैं मन में सोचता—इस कुमार को जो देश के लिए कुछ भी नहीं करता, महज़ खयाली पुलाव पकाता है, उन लोगों के कार्य की आलोचना करने का क्या अधिकार है जिन्होंने देश की सेवा में अपने आपे को खपा दिया ? तभी वह और भी जोर के साथ कहता—तकली चर्खा लाभदायक होते हुए भी देश को उसके अन्तिम ध्येय तक नहीं पहुँचा सकते। देश को आवश्यकता है संगठित क्रांति की। देश के सम्पूर्ण शोषित वर्गों को संगठित करके उन्हें क्रांति के लिए तैयार करना होगा।

× × ×

एक दिन सायंकाल की वर्षा में खूब भीग जाने के कारण मनोज को बुखार आ गया। समझा गया साधारण जाड़े का बुखार है, कुछ दिनों में ठीक हो जायगा; किन्तु जब वे कुछ दिन छः महीनों में भी पूरे न हुए तो उसे ले जाकर दिल्ली के डाक्टरों को दिखाया गया। डाक्टरों ने बताया, बहुत अधिक परिश्रम और नींद की कमी ने स्थिति चिन्ताजनक कर दी है। फेफड़ों में भी खराबी आ गई है, एक के बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे डाक्टर का इलाज बदला गया और

इसी प्रकार छः महीने और व्यतीत हो गये, तभी मुझे प्रयाग जाना था। मनोज ने खबर भिजवाई कि मैं उसके पास होता हुआ स्टेशन जाऊँ। ज़रा जल्दी आ जाना अच्छा होगा, क्योंकि शायद वहाँ कुछ देर लगे।

मैंने वहाँ जाकर देखा, वह अकेला एक कमरे में लेटा हुआ है। यद्यपि उसका शरीर सूख कर हड्डियों का ढाँचा रह गया था; किन्तु उसके वार्तालाप के ढंग तथा मुस्कराते हुए चेहरे को देख कर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इस व्यक्ति ने एक वर्ष से चारपाई नहीं छोड़ी।

कुछ इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने पूछा—क्या तुम महसूस नहीं करते कि आज प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह देश की स्वतन्त्रता के इस महान् यज्ञ में योग दे ?

'क्यों नहीं करता'—मैंने शीघ्रता से उत्तर दिया—देखते नहीं मैं तो स्वयं ही खद्दर पहनता हूँ, कांग्रेस का मेम्बर भी हूँ, व्याख्यान भी देता हूँ। सिद्धान्तों में...

'सिद्धान्त, व्याख्यान, कांग्रेस की मेम्बरी, खद्दर !'—वह जरा गर्म होकर चिल्लाया—जो लोग केवल खद्दर और व्याख्यान के बल पर देश को स्वतन्त्र करने का स्वप्न देखते हैं वे काल्पनिक जगत में विचरण करने वाले कवियों से कम नहीं। आध्यात्मिक सिद्धान्त एक व्यक्ति के लिए बहुत उपयोगी हो सकते हैं, किन्तु राष्ट्र को आजादी हासिल करने के लिए राजनैतिक सिद्धान्तों ही का आधार लेना होगा।

मैंने जेब से घड़ी निकाल कर खँखारते हुए उस पर दृष्टि डाली। 'क्या बहुत देर हो गई !'—उसने सर ज़रा ऊँचा करने के लिए तकिए को दुहरा करते हुए पूछा।

'नहीं अभी पच्चीस मिनट है। अगर आवश्यक कार्य हो तो

आज रुक भी सकता हूँ।'—मैंने शान्त भाव से उत्तर दिया। 'मैं तो यही कहना चाहता हूँ' उसने फिर कहना आरम्भ किया 'कि सम्पूर्ण शोषित वर्गों को संगठित करके उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत करना होगा। जहाजों से सामान उतारा जाना, रेलों का चलना, मोटर, इक्के, टाँगों का चलना, सब मजदूरों के बल पर होता है। हमें उन सब को जनरल स्ट्राइक के लिए तैयार करना होगा, जिससे आवश्यकतानुसार, शोषण के दैत्य का वध करने के लिए उसके हृदय की धड़कन तथा उसकी नसों के रक्त-प्रवाह को बंद किया जा सके। हमें शोषित वर्गों को क्रांति के लिए तैयार करना होगा।' खाँसी उठ जाने की वजह से उसे कुछ देर के लिए रुक जाना पड़ा और तब मानो सम्पूर्ण शरीर की शक्ति को समेट कर उसने फिर कहा—इसके अतिरिक्त एक संगठित गुप्त दल भी आवश्यक है, जिसका नियंत्रण तथा शासन बहुत कठोर हो, जिसका कोई भी सदस्य उसके चार-पाँच से अधिक सदस्यों को न जानता हो। जो क्रांति का नियंत्रण कर उसे निश्चित ध्येय की ओर बढ़ा सके। सन् सत्तावन के अनियंत्रित, असफल स्वतंत्रता-संग्राम को हमें दोहराना नहीं है। और तब प्रश्न-सूचक दृष्टि से उसने मेरी ओर देखा।

'सिद्धांतों के ऊपर फिर कभी विचार कर लूँगा, इस समय तो मैं केवल यही कह सकता हूँ।' मैंने उसकी प्रश्न-सूचक दृष्टि के उत्तर में कहा—तुम्हारे लिए तुम्हारी प्रत्येक आज्ञा का पालन कर सकता हूँ।

उसने एक संतोप की साँस लेकर तकिये के नीचे से निकाल कर एक लिफाफा मेरे हाथ में देते हुए कहा—मेरी आज्ञा नहीं, प्रार्थना इसमें मिल जायगी। किंतु इसे एकान्त में पढ़ना।

और जब मैं वहाँ से आने लगा तो मैंने जीवन में प्रथम और

अंतिम बार देखा कि उसने पास पड़े रूमाल से अपने नेत्रों से ढलता हुआ थोड़ा खारा पानी पोंछ लिया।

× × ×

स्टेशन छोड़ने के बाद ज्यों-ज्यों रेल की गति बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों मेरी उस पत्र के विषय में उत्सुकता भी बढ़ती जाती थी और मैंने देखा यद्यपि उस डब्बे में आठ-दस मुसाफिर और हैं, किंतु मेरी सीट के आस-पास कोई नहीं है। मैंने जेब से लिफाफा निकाल कर खोला, मैंने देखा पत्र लाल रोशनाई से लिखा हुआ है और उसके एक किनारे पर भारत-माता का, हाथ में मशाल लिए हुए चित्र है। मशाल की लौ में बहुत-से व्यक्तियों के सर आ-आकर जल रहे हैं। मैंने दृष्टि पड़ते ही, बिना पत्र पढ़े ही, पत्र को फुर्ती से बंद कर के लिफाफे में बंद कर दिया और लिफाफा पूर्ववत् कोट की जेब में डाल लिया।

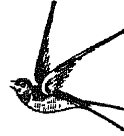
पूरी चौबीस घंटे की यात्रा के पश्चात् प्रयाग पहुँचकर जब मैंने कोट की जेब टटोली तो देखा वह लिफाफा जेब में नहीं है। लिफाफा खोने की परेशानी और भी अधिक बढ़ गई जब उसी दिन सायंकाल को तार मिला कि मनोज की मृत्यु हो गई है। किन्तु अब हो ही क्या सकता था?

× × ×

दो वर्ष के लम्बे अर्से ने मनोज की स्मृति को मेरे मस्तिष्क से बिल्कुल हलका कर दिया था और तभी दो दिन हुए एक नई बात हो गई। कल मैं अपने एक मित्र के यहाँ बैठा था, जिनका नाम देना उचित न होगा। तभी उनके पास एक लिफाफा आया। उन्होंने लिफाफे से पत्र निकाल कर खोला और फिर झट उसे बंद करके लापरवाही-सी दिखाते हुए मेज़ की दराज़ में डाल दिया।

किन्तु पत्र की लाल रोशनाई और किनारे के भारत-माता के चित्र के अतिरिक्त नीचे लिखे 'क्रांति-मंडल' पर भी मेरी दृष्टि पड़ गई थी।

उस समय हतबुद्धि-सा होकर मैं वहाँ से चला आया; किंतु जब उसके विषय में कुछ पूछने का निश्चय कर अगले दिन प्रातःकाल मैं वहाँ गया तो ज्ञात हुआ कि रात ही की गाड़ी से वे तो सब असबाब आदि लेकर कहीं चले गये हैं। और दो दिन के सोच-विचार के बाद मैंने नौकरी से स्तीफा देकर अभी थोड़ी देर हुए अपने सूटकेस में कुछ आवश्यक सामान रखा है, और बिस्तर बाँधकर तैयार किया है।



कु
सु
मा
ञ्ज
लि

......क्लांक क्लंक क्लिँक क्लिँक कलँक क्लांक ट्ड़िंग...ट्ड़िंग... ट्ड़िंग...प्रयाग विश्व विद्यालय के क्लाक-टावर की घड़ी ने दस बजाये। उसी समय चपरासी ने अंगरेजी विभाग की गेलरी में टँगे हुए कांसे के गोल घन्टे को लकड़ी की हथोड़ी से ठोक ठोक कर बजाना आरंभ किया...ढंनं...ढंनं...ढंनं...ढंनं...

क्लास रूम के आस-पास की गैलरियों से लड़के, कुछ झपट कर, और कुछ मस्ती से टहलते हुए, आकर क्लास में बैठने लगे। घंटी की घननन...टिन टिन टिन...आवाज़ से वातावरण को गुंजाती हुई दस पन्द्रह साईकिलें सर्र्र से रेस्तरां की ओर से आती दिखाई दीं। थोड़ी देर में सब लड़के क्लास में सीटों पर बैठ गए। प्रोफेसर ने क्लास में प्रवेश किया और वहाँ सन्नाटा छा गया।

प्रोफेसर वृद्ध, कद जरा छोटा, सर भारी और रँग उज्ज्वल, सर पर छोटे छोटे सफेद बाल, सफेद घनी अव्यवस्थित मूछों से ढके अधरों पर हल्की मुस्कान की रेखा और तेज युक्त चेहरे पर उद्वेग रहित अखंड शांति, मानो अन्तिम सत्य-तत्व की अनुभूति प्राप्त कर चुके हों। बिना फीतों वाले, अजीब किस्म के पुराने काले जूते, काली जुराब, सफेद जीन की, चार अँगुल छोटी पतलून, सफेद कोट और गले में मरी हुई

चिड़िया के समान लटकती हुई काली टाई। प्रयाग विश्व विद्यालय के सब से अधिक वृद्ध प्रोफेसर न जाने वहाँ के कितने अध्यापकों के भी अध्यापक रह चुके हैं।

चश्मा लगा कर और रजिस्टर के बहुत नजदीक झुक कर हाजिरी ली, फिर पढ़ाई आरंभ हुई।

"कला को कृति में अन्तर्हित कर देना ही सब से बड़ी कला है, और आलोचक का कार्य उसे प्रगट करना है पाठकों के लिए बोध गम्य बनाना, उसके रस को उनके लिए सुलभ बनाना........"

तभी चपरासी एक नोटिस लेकर क्लास में आया। प्रोफेसर ने नोटिस ज़ोर ज़ोर से पढ़ा।

"महेन्द्र ने फीस तीन महीने से नहीं दी है। अगर इस महीने की पन्द्रह तारीख़ तक फीस जमा न की, तो यूनिवर्सिटी से नाम कट जायगा।"

पढ़ाई फिर आरंभ होगई। जब प्रोफेसर का ध्यान, सामने मेज पर रखी पुस्तक की ओर था, तो एक विद्यार्थी, जो बीच की लाइन में किनारे पर द्वार के पास बैठा हुआ था, नोट-बुक उठाकर चुपचाप बाहर चला गया। वह महेन्द्र था।

× × ×

सड़क के किनारे पनवाड़ी की दुकान के ऊपर छोटा सा कमरा, उस पर टीन की छत। टीन के नीचे पुराना मैला टाट, जो कहीं कहीं पर कीलें निकल जाने की वजह से लटका हुआ है। कमरे में बानों की एक छोटी सी खाट, जो ढीली होने की वजह से कपड़े की आराम कुर्सीनुमा हो गई है; बिना किवाड़ों की अलमारी में कुछ किताबें और कापियाँ कायदे के मुताबिक चुनी हुई रखी हैं; कमरे के एक कोने में अङ्गीठी के समीप कोयलों का छोटा सा ढेर लगा हुआ है; वहीं एक

तवा, एक पतीली और कड़छी, चिमटा, थाली, गिलास आदि रखे हैं। दूसरे कोने में एक टीन का ट्रंक रखा है और खूटियों पर कुछ कपड़े टंगे हुए हैं। कमरे में कुल इतना ही सामान है।

महेन्द्र कुछ देर चारपाई पर बैठा हुआ, उदास चेहरा लिए, मस्तक को हाथ से दबाता सोचता रहा। फिर वह उठ कर धीरे धीरे संदूक के समीप आया। उसमें से एक नोटबुक निकाली! पहले पृष्ठ पर, ऊपर "कुसुमांजलि" लिखा हुआ था और नीचे "महेन्द्र"—

अगले पृष्ठ के बीच में लिखा था 'हेम',

यह निर्धन तुम्हारे जीवन काल में तुम्हें कुछ भी नहीं दे सका, और आज भी क्या दे? प्राप्ति से पूर्व संतोष के दिनों में, और चिर-वियोग के बाद जो उद्‌गार तुमने मेरे हृदय में उत्पन्न किये हैं, उन्हीं की यह 'कुसुमांजलि' तुम्हें अर्पित करता हूँ।

सदा तुम्हारा
महेन्द्र

यह उस की कविताओं का संग्रह था। उसी में से नकल की हुई कुछ सब से सुन्दर कविताएँ एक फाइल में रखी हुई थीं। उसने वह फाइल निकाल ली।

× × ×

महेन्द्र ने आफिस में देखा, प्रकाशक महोदय नहीं हैं। उसने अन्दर सूचना भिजवाई और स्वयं एक कुर्सी पर बैठ गया। सामने टंगी, दीवार पर घड़ी की बड़ी सुई एक एक निशान आगे सरक रही थी और महेन्द्र की दृष्टि रह रह कर उसकी ओर उठ जाती थी। उसे एक मिनिट पाँच मिनिट के बराबर लग रहा था। पूरे पैंतीस मिनिट बाद प्रकाशक महोदय पधारे। इतमिनान से कुर्सी पर बैठ कर उन्होंने जेब से रंगीन बटुवा निकाला। उसमें से थोड़ा तम्बाकू और चूना

बांए हाथ की हथेली पर लेकर दाहिने हाथ के अँगूठे से मला। फिर उसे हथेली से चार पाँच बार थपथपा कर फाँक गए। आँखों पर चश्मा लगाने के बाद, फूले गालों वाला गोल मुँह बहुत थोड़ा सा खोलकर उन्होंने महेन्द्र से पूछा "कहिये ?"

महेन्द्र का हृदय धुकड़-पुकड़ कर रहा था—'मेरे पास एक कविता-संग्रह है, उसे प्रकाशित कराना है।' उसने उत्तर दिया।

'आपका नाम !'

'महेन्द्र'

'आपका नाम तो पहले कभी सुनने में नहीं आया।'

'यह मेरा पहला कविता-संग्रह है।'

'कविताओं को पत्रों में भेजकर नहीं देखा ?'

'पत्रों में तो नहीं भेजा ?'

'तो अभी से संग्रह छपाकर क्या करोगे ?'

'किन्तु मुझे कविता लिखने का काफी अभ्यास है। मैं पिछले छः वर्षों से कविता लिख रहा हूँ।'

'जिसके नाम तक से कोई परिचित नहीं, उसकी किताब खरीदेगा ही कौन ?'

'मेंरी इच्छा थी कि आप मेरी कविताओं को कम से कम देख जरूर लेते।'

प्रकाशक महोदय ने पास पड़े गेरुआ तौलिये से ओंठ पोंछते हुए फाइल के लिये हाथ आगे बढ़ा दिया।

चश्मा ठीक करके आँखे मिचमिचाते हुए उन्होंने एक कविता पढ़ी। फिर उसे सामने मेज पर रखकर पूछा।

'इसमें कवित्व क्या है ?'

महेन्द्र कविता का अर्थ समझाने का प्रयत्न करने लगा। प्रकाशक

महोदय बीच ही में बोल उठे, 'अर्थ तो मैं भी समझता हूँ। यह कोई लैटिन-ग्रीक नहीं है। मैं पूछता हूँ, इसमें कवित्व क्या है!'

महेन्द्र सटपटाया सा रह गया। उसकी समझ में कुछ भी आ नहीं रहा था कि क्या उत्तर दे—'इसमें कवित्व क्या है?' उसने मन ही मन में दोहराया। इतने ही में प्रकाशक महोदय कहने लगे 'देखिये, मेरी राय है कि आप अभी पांच सात साल पत्रों में लिखें। कविता भेजते समय उसी के साथ एक आने का टिकट रख देना अच्छा होता है। ऐसा करने से उत्तर आने या कविता के अस्वीकृत होने पर उसके लौट आने की भी थोड़ी बहुत संभावना रहती है। संग्रह आदि…।'

महेन्द्र का सर चकराने सा लगा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे या क्या कहे? उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह कुर्सी पर बँधा हुआ हो। किसी प्रकार फाइल समेट कर वह खड़ा हुआ और लड़खड़ाते हुए पैरों से बिना कुछ कहे ही अफिस से बाहर चला गया।

× × ×

छः सात प्रकाशकों से निराश होकर जब वह लौट रहा था तो शाम हो गई थी। रक्तिम सूर्य आधे से भी अधिक क्षितिज के नीचे चला गया था। पूर्व की ओर से निशा के अन्धकार के साथ ही साथ काली घटा भी घुमड़ती चली आ रही थी। उस समय वातावरण निस्तब्ध था, किन्तु घटा से आगे आसमान में गर्द, गुब्बार था और तूफान के आसार नजर आ रहे थे।

महेन्द्र ऐसा चला आ रहा था मानों उसके शरीर में जरा भी जान न हो और वह किसी मशीन के जरिये चल रहा हो। स्वयं भी वह बहुत ही अधिक थकान अनुभव कर रहा था। वह पथराई सी ऐसी आँखें लिए चला आ रहा था, जैसे उसे इस समय कोई भी परेशानी

या चिंता नहीं है। कभी-कभी उसके नेत्र नीड़ों से चहकती हुई लौटती चिड़ियों की ओर उठ जाते। तभी उसकी मुठभेड़ करुण से हो गई।

करुण महेन्द्र के घनिष्ट मित्रों में से था। हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं में कविता और आलोचना लिखता था। उसके दो-तीन संग्रह भी प्रकाशित हो चुके थे।

'किधर भटकते से घूम रहे हो?' करुण ने सहानुभूति के स्वर में पूछा। महेन्द्र ने सारी कथा करुण को कह सुनाई।

'फाइल मुझे दो शायद मैं इस कविता-संग्रह के लिए प्रकाशक ढूंढ़ने में सफल हो जाऊँ' करुण ने आग्रह किया।

महेन्द्र ने फाइल करुण को दे दी।

× × ×

अगले दिन सायंकाल महेन्द्र कागजों का एक पुलिन्दा और एक चित्र सामने रखे हुए कुछ सोच रहा था, उसी समय करुण उसकी कोठरी में आया।

'कहो कुछ काम बना?' कागजों के पुलिन्दे और चित्र को एक ओर रखते हुए महेन्द्र ने पूछा।

'काम कुछ बना तो, किन्तु··· एक बात बड़ी कठिनाई की है।'

'सुनूँ भी तो···।'

'तुम्हारे नाम से तो हिंदी-जगत अभी जरा भी परिचित नहीं है। प्रकाशक चाहता है कि पुस्तक मेरे नाम से प्रकाशित हो।'

'क्या और कोई चारा नहीं?'

'मजबूरी है। मैं चाहता था कि अपने पास से तुम्हें इस समय रुपया दे देता, किन्तु मेरे पास भी रुपया नहीं है।'

'तुम्हारे नाम से संग्रह प्रकाशित होने से कितने रुपये मिल जाने की संभावना है?'

'पचास रुपये तो प्रकाशक दे देगा और पच्चीस रुपये का प्रबन्ध किसी प्रकार मैं कर दूँगा, जिन्हें लौटाने की चिन्ता तुम्हें नहीं करनी होगी।'

कुछ देर महेन्द्र नेत्र बंद किए कुछ सोचता रहा—

'कल प्रातःकाल इसका उत्तर दूँगा।' एक लम्बी सांस लेकर उसने उत्तर दिया और करुण वहां से चला गया।

करुण के चले जाने के बाद कुसुमांजलि के समर्पण का पृष्ठ खोलकर महेन्द्र बैठ गया और अतीत के चित्र उसके मस्तिष्क में शीघ्रता के साथ घूमने लगे। उसे याद आया कि बचपन से खेल की संगिनी हेम के साथ वह कितने प्रयत्न, कितने विद्रोह के बाद, विवाह करने में सफल हुआ था, किन्तु मौत के सामने उसका प्रयत्न, उसका विद्रोह कुछ भी काम न आ सका। इतनी कठिनाई से प्राप्त हुई हेम एक ही वर्ष-बाद सदैव के लिए बिछुड़ गई। चिता की लपटें, जिनमें हेम के कपूर से शरीर को जलते उसने देखा था, एक बार उसके मस्तिष्क में फिर धधक उठीं।

और फिर उसे याद आया कि किस प्रकार वृद्धा माता की मृत्यु पर जाति-बिरादरी वालों ने उसे मजबूर किया था कि एक बड़ा ब्रह्म-भोज दिया जाना आवश्यक है, नहीं तो उसकी मृत माता की आत्मा को शांति नहीं मिलेगी और उस ब्रह्म-भोज की आग में उसकी माता तथा हेम के बचे-कुचे आभूषण भी स्वाहा हो गए थे।

महेन्द्र ने समीप रखे हेम के चित्र की ओर सजल-करुण नेत्रों से देखते हुए 'कुसुमांजलि' के समर्पण का पृष्ठ फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और फिर जेब से नीली स्याही के धब्बे लगा मैला सा रूमाल निकाल कर अपनी दोनों आँखें पोंछ लीं।

अगले दिन कुसुमांजलि करुण के सिपुर्द कर दी गई।

करुणा के नाम से कुसुमांजलि को प्रकाशित हुए सात आठ महीने हो गऐ थे। एक दिन सायंकाल को महेन्द्र एक आवश्यक कार्य से करुणा के यहाँ पहुँचा। उसने देखा बाहर बहुत सी साइकिलें रखी हैं और दो-तीन टांगे भी खड़े हैं। बीच के कमरे में उसे कुछ चहल-पहल सी प्रतीत हुई। बाहर एक नौकर बैठा हुआ था।

महेन्द्र ने उसे बुलाकर पूछा 'क्या बात है?' उसे ज्ञात हुआ कि आज चायपार्टी है। नौकर द्वारा करुणा को उसने अपने आने की इत्तला कराई।

'कहो भई, आज कैसी पार्टी दे डाली?' करुणा के आते ही महेन्द्र ने प्रश्न किया।

'कल तार मिला था कि मेरी कुसुमांजलि पर पन्द्रह सौ रुपये का खेमचन्द्र पुरस्कार मिला है। उसी की खुशी में यहाँ के सब साहित्यिकों को निमंत्रित किया था। भई माफ करना, दौड़ धूप की वजह से तुम्हें सूचना नहीं भिजवा सका।' करुणा ने उत्तर दिया और फिर महेन्द्र की मैली-सी धोती और सींवन उधड़े कुरते पर से निगाह हटाने का प्रयत्न करते हुए कहा, 'हाँ, वहाँ तो लोगों को शुरू किए बहुत देर हो गई है, तुम बराबर वाले कमरे में बैठो, मैं अभी नौकर के हाथ चाय भिजवाता हूँ।'

'इस समय तो मुझे आज्ञा दो, फिर किसी समय आऊँगा' कहकर महेन्द्र बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए ही आकाश में तैरते-डूबते, सूर्य के प्रकाश से रक्तिम, बादलों पर दृष्टि गड़ाए वहाँ से चल दिया।

और महेन्द्र की ओर से अगर आज मैं हिंदी-जगत से कहूँ कि यह कहानी नहीं, सच्ची घटना है, तो कितने व्यक्ति इस बात पर विश्वास कर लेंगे कि पुरस्कृत 'कुसुमांजलि' करुणा की नहीं, बल्कि महेन्द्र की रचना है?

अ
मि
ट
ज्वा
ला

"वृद्ध माता पिता हैं, स्त्री पुत्र हैं, और निर्धनता भी है, किन्तु सब कुछ यहीं समाप्त नहीं हो जाता। इन सब के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ है जिसके अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता, जिसकी ओर से आखें मूद ली नहीं जा सकतीं" धीरेन्द्र सोचता है, 'देश है, देश में भी निर्धनता है। नाना प्रकार के दुःखों से पीड़ित मानव समाज है। जड़ और चेतन प्रकृति से परिपूर्ण सारा विश्व है।" विचार धारा आगे बढ़ती है, "विश्व के परे, इस सम्पूर्ण सृष्टि के परे भी कुछ है।" वह ऐसा सोचता है क्योंकि उसका विश्वास है कि मृत्यु के साथ ही सब कुछ समाप्त नहीं हो जाता और वह एक ऐसा द्वार है जिसमें से होकर एक न एक दिन हर एक को जाना होगा, जाना ही होगा। यह सब कुछ धीरेन्द्र ने सोचा और तब पाया कि एक मरु भूमि है, अनन्त मरु भूमि है और वह उसकी बालुका का एक कण है। हो सकता है कि परिस्थिति विशेष के कारण दो चार, दस बीस, पचास सौ रज कण उसके अधिक निकट हों किंतु वे दस बीस रजकण ही सब कुछ नहीं, वह मात्र उन दस बीस रजकणों का नहीं है, क्योंकि हवा का एक हलका सा झोंका ही उसे उनसे अलग, उनसे सुदूर स्थान पर पहुँचा देने के लिए पर्याप्त है।

उस निर्धन धीरेन्द्र के हृदय में आँधी सा उत्साह है, प्रचंड ज्वाला है। परिस्थिति कहती है वह उस ज्वाला को एक न एक दिन बुझा देगी, किन्तु धीरेन्द्र का विश्वास है वह ज्वाला अमर है, उसका अन्त नहीं हो सकता, मृत्यु के पश्चात् भी नहीं।

उसके नगर में एक बड़े राष्ट्रीय नेता आये। वह उनका व्याख्यान सुनने गया। उसने पाया जो ज्वाला उसमें विद्यमान है, व्याख्यान से उसमें लपटें उठती हैं और वे कहती हैं अपना रोम रोम जलाकर हमें बाहर आ जाने दे, क्योंकि विश्व का अन्धकार दूर कर देने की शक्ति हममें हैं। कम से कम एक बार विजली की तरह इस बिश्व में चमक उठने की शक्ति हममें है, और बिना अपने आपे को तपाये, बिना अपने आपे को जलाये कोई भी औरों को प्रकाश दे नहीं सका। व्याख्यान समाप्त होने पर वह घर आया। आठ बज गए थे, उसने देखा घर में अन्धेरा है। खाना नहीं बना। छोटा बच्चा रो रहा है, शायद भूखा है। यह सब कुछ हैं क्योंकि प्रत्येक वस्तु प्राप्त करने के लिए चांदी के टुकड़ों की आवश्यकता पड़ती है और चांदी के टुकड़ों को प्राप्त करने के लिए अपने आपे को बेचने के सिवाय, अपने विचारों को बेचने के सिवाय, अपनी आत्मा को बेचने के सिवाय, और कुछ चारा नहीं, क्योंकि कोई स्वतंत्र कार्य आरम्भ करने के लिए उसके पास पूंजी नहीं है, क्योंकि बी० ए० पास उसने कर लिया है और बीस रु० माहवार की सरकारी नौकरी वह प्राप्त कर सकता है, ऐसा साधन उसके पास है। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या बीस चांदी के टुकड़े प्रति मास के लिए सब कुछ समाप्त कर देना होगा, सब कुछ बेच देना होगा?

उसने आज तक सोचा है कि कुटुम्ब में देश नहीं है, मानव समाज नहीं है, विश्व नहीं है, विश्व में सब कुछ है, मानव समाज है देश है और एक छोटे से कोने में कुटुम्ब भी है। वह अपने आपे को

खपा देगा, अपने आपे की आहुति दे देगा किसी व्यक्तिगत जीवन के लिए नहीं अपितु उसके लिए जो विराट् है, जो अनन्त है। किंतु आज उसकी विचारधारा का रुख पलटा सा जाता है और वह सोचता है मुझे अपने घर का अन्धकार दूर करना होगा, अपने घर वालों की क्षुधा मिटानी होगी चाहे मुझे उसके लिए अपने आपे को बेच देना पड़े। चाहे उस विराट् के लिए, उस अनन्त के लिये, कुछ शेष न रहे, चाहे मेरा व्यक्तिगत अस्तित्व भी शेष न रहे। वह ऐसा सोचता है क्योंकि आज उसके घर में चिराग नहीं जला, भोजन नहीं बना, उसका बच्चा रो रहा है क्योंकि वह भूखा है और उसकी छाती की हड्डियों के अन्दर भी कुछ है जो प्रतिक्षण धड़का करता है।

उसने नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र भेजा और उसकी प्रार्थना स्वीकार भी हो गई। वह इण्टरव्यू के लिए बुलाया गया। उससे प्रश्न किया गया, "तुम्हारे देशवासी योग्य न होने पर भी स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न कर रहें हैं, तुम्हारे देश के नेता देश में असंतोष और अशांति का बीज बो रहे हैं तुम्हारी इसके विषय में क्या राय है।"। उसकी अंतरात्मा मानो पिंजरे में बन्द दुखी पक्षी की तरह छटपटाने लगी। एक जहर का घूंट मानो उसने अपने हलक के नीचे उतारा और कहा, "यह सब बेकार है देशवासी असभ्य हैं। वे सब नेता पागल हैं" और साथ ही उसका सिर चकरा सा उठा क्योंकि वह जानता था क्षुधा की ज्वाला ने देशवासियों को असभ्य बना रक्खा है। देश-वासियों की असह्य पीड़ा ने नेताओं को पागल बना रक्खा है। वह आत्मग्लानि से भरापूरा वहाँ से घर आया। उसे पच्चीस रु० प्रतिमास की नौकरी मिल गई और उसने गहरी सांस ली। किसी का हृदय क्या जाने उसमें असीम सन्तोष था या अनन्त अन्तर्ज्वाला!

उसे लगान वसूल करने का कार्य करना होता था। स्थिति बड़ी

बेडौल सी थी। उसने ग्रामों की दशा बड़ी शोचनीय पाई। किसानों के पास खाने तक को अन्न नहीं था और अफसर कहते थे, "रुपया जैसे भी हो वसूल होना चाहिए।" आज उसके अफसर ने कड़ी ताकीद के साथ कहा, "देखो तुम्हारा वसूल बहुत ढीला है आज हम खुद तुम्हारे हलके में आवेंगे।

"हजूर उनकी हालत बहुत खराब है, उनके पास देने को कुछ है नहीं," धीरेन्द्र ने उत्तर दिया। "वे सब मक्कार हैं। सीधी तरह वे कभी नहीं माने, अगर लगान देने से इन्कार करें तो उनके घरों का सामान कुड़क कर लो।"

"मगर हजूर इस साल वर्षा भी तो बहुत कम हुई। खेती बिलकुल खराब हो गई है।"

"देखो इन बेकार की बातों से कुछ फायदा नहीं। तुम खामोखाह उनकी बातों में आ जाते हो। सरकारी रुपया वसूल होना है और वह जरूर वसूल होगा। चाहे वसूल जिस तरीके से हो।"

धीरेन्द्र ने अब पाया कि उसे अपने आपे के मनुष्यत्व को कुचल देना होगा, पूर्णतया कुचल देना होगा। "क्या यह सब कुछ कर देने की शक्ति मुझमें है?" उसने अपने हृदय से प्रश्न किया और भिचाये हुए सिर पर हाथ रखे गाँव की ओर प्रस्थान किया।

गाँव में जाकर एक झोपड़ी का बन्द द्वार उसने खटखटाया। एक आठ नौ वर्ष के बालक ने आकर द्वार खोला। उसका चेहरा बिलकुल पीला था। आँखें अन्दर को धंसी हुई थीं। हाथ पैरों पर झुर्रियें पड़ी हुई थीं, मानों एक हड्डी का ढाँचा आकर सामने खड़ा हो गया हो। धीरेन्द्र ने पाया उस बालक की सूरत उसके हृदय में गहरी उतरती जा रही है। जाड़ों की मौसम थी, आकाश में बदली थी, हलकी हलकी बौछारें पड़ रहीं थीं, जब खेत में से होकर आने

वाली पगडण्डी से धीरेन्द्र आ रहा था तो उसने अनुभव किया था कि आज सर्दी काफी है। और अब उसके सामने जाड़े से ठिठुरता हुआ यह बालक खड़ा है। केवल मैला कुचैला फटा हुआ सा एक कुरता पहिने। उसके होंठ खुले हैं। निगाहें धीरेन्द्र के चेहरे पर गड़ी सी जाती हैं। मानों पूछ रहा हो। "अरे तुम कौन हो? क्या चाहते हो?"

"शिब्बू है?" धीरेन्द्र ने पूछा।

बालक ने वहीं से आवाज दी। "ओ दद्दी" और एक कोई साठ वर्ष की बुढ़िया आकर उसके सामने खड़ी हो गई। धीरेन्द्र ने अपना प्रश्न दोहराया।

"शिब्बू है?"

"शिब्बू?" बुढ़िया की आँखें एक दम गीली हो गईं।

"शिब्बू अब कहाँ बाबू जी? प्लेग उसे निगल गया। शिब्बू!"

"इस साल का लगान तुम लोगों ने अभी तक नहीं दिया है" धीरेन्द्र ने दिल कड़ा करके कहा।

"लगान? शिब्बू था बाबूजी वह गुजर गया। उसका फूल सा बच्चा मौत की घड़ी गिन रहा है। घर में दवा दारू तक को पैसा नहीं है हकीम को बुलाकर कैसे दिखाऊँ।" बुढ़िया रुकी नहीं, कहती गई, "बाबूजी तुम तो शहर में रहते हो। दवा दारू जानते हो, मेरे बच्चे को बचा लो" लगान का प्रश्न अब उसके मस्तिष्क में नहीं था। उसने झोपड़ी के अन्दर प्रवेश किया। एक अधेड़ उम्र की स्त्री उस तीन वर्ष के बच्चे को गोद में लिए बैठी थी। सामने एक मोटा सा लकड़ी का कुन्दा सिलुग रहा था। धुंआ झोपड़ी में अटा था और वह जाड़े से बचने के लिए आवश्यक भी था। एक चक्की, दो चारपाई, एक टूटा सा ट्रंक, दस बारह लोहे पीतल के वर्तन और पाँच सात मिट्टी के घड़े वहाँ रक्खे थे, यही उनकी सम्पत्ति थी। क्षण भर में यह सब

धीरेन्द्र देख गया, उसने बच्चे की दशा देखी। उसे शायद ठण्डा लग जाने से निमोनिया हो गया था। उसने पूछा।

"सोंठ और कुछ काली मिर्च है ?"

उत्तर मिला "नहीं"

"अदरख की एक आध गिरह होगी ?"

उत्तर मिला "नही"

धीरेन्द्र ने एक दुअन्नी निकाल कर उस बड़े बालक को दी और पास की पंसारी की दुकान से चार पाँच चीजें लाने के लिए कहा। बालक औषधि लेने चला गया और धीरेन्द्र ने पूछा, "शिब्बू के मरने के बाद अब कैसे काम चलता है ?"

"मुसीबत है बाबूजी, गुजर करनी ही होती है। अभी दो महीने तो उसे गुजरे हुए। खेती सब वैसे बिगड़ गई। यही है, खोटना पीसना करके गुजारे लायक पैसे आ जाते हैं।,'

बालक अभी औषधि लेकर लौटा भी न था कि बाहर से आवाज आई, "शिब्बू, शिब्बू।" धीरेन्द्र ने आवाज पहिचान ली। यह उसके अफसर की आवाज थी। उसने तुरन्त बाहर आकर कहा।

"हजूर शिब्बू प्लेग से मर चुका है और उसका बच्चा निमोनिये से मर रहा है।"

"बच्चा निमोनिये से मर रहा है ? इससे हमें कोई सरोकार नहीं, यह लगान के लिये क्या कहते हैं ?"

"इनके पास देने को कुछ नहीं है।"

"देने को कुछ नहीं है ? सब मक्कार है। जो नौन पेमेन्ट आफ टैक्सेज की हवा चल रही है, मालूम होता है उसका असर इन पर भी पड़ा है। इनके घर का माल कुड़क कर लो।" अफसर ने दो चपरासियों की ओर जो उसके साथ आये थे देखते

हुए कहा। जो कुछ होने वाला था सब दृश्य धीरेन्द्र के नेत्रों के सन्मुख नाचने लगा। उसने मन में सोचा मैं यह सब कुछ नहीं देख सकूँगा, नहीं देख सकूँगा, भले ही घर के सब प्राणियों को अनशन से प्राण त्यागने पड़ें। उसने मन में कहा, 'हे प्रभु यह सब देखना मेरी शक्ति से बाहर है तू स्वयं इनकी रक्षा करना।" और अफसर की निगाह बचाकर चुपचाप वहाँ से खिसक आया। उसने उसी दिन आकर नौकरी से स्तीफा दे दिया और खुले रूप से अपने कार्य-क्षेत्र में आ गया, उस अमिट ज्वाला को कबतक कुचल कर हृदय में बंद रक्खा जा सकता था! उसने सोचा देश के कल्याण में, मानव समाज के कल्याण में, सबका कल्याण है। "यदि देश जीवित रहता है तो मर कौन सकता है? और यदि मृत्यु सम्पूर्ण की हो गई तो जीवित कौन रहेगा?" वह उन करोड़ों का प्रतिनिधि बनकर क्षेत्र में आया, जिनके घरों में चिराग नहीं जल पाता, जिनके तनों पर कपड़ा नहीं, अरे पेट भरने के लिए जिन्हें मुट्ठी भर चने भी नहीं मिलते। उसने सोचा उन सब के लिये वह अपने आप को खपा देगा, अपने आपे की आहुति दे देगा क्योंकि उन सब के लिये बलिदान होना है, उसके लिये बलिदान होना है जो बिराट है, जो अनन्त है।" कुछ ही दिनों में हज़ारों उसके पीछे चलने वाले हो गये, लाखों उसके नाम की ज़य के नारे लगाने वाले हो गये, किंतु इस सब से उसे कुछ सरोकार न था। उसे सरोकार था केवल एक बात से कि वह सब के लिये, उन करोड़ों पीड़ितों के लिये अपने आप को दे देगा।

एक दिन हजारों आदमी जमा थे और वह व्याख्यान दे रहा था, "प्रिय मित्रो! प्रकृति ने हर एक को अधिकार दिया है कि वह तन ढकने के लिए वस्त्र और पेट भरने के लिए भोजन प्राप्त करे। यह कभी हो नहीं सकता कि एक के पास धन का अम्बार लगा हो और दूसरा

क्षुधा से पीड़ित होकर प्राण त्यागे। हमें अपने अधिकारों के लिए संग्राम करना होगा, उनके विरुद्ध जो..........,और इतने में ही उसके सामने वारंट रख दिया गया। वह गिरफ़तार करके एक कार में बैठा दिया गया। वहाँ उसके भक्तों का सागर सा उमड़ा हुआ था, सबके हृदयों में जोश भी था और उन्होंने चाहा कि वहीं उस कार को चूर चूर कर दें, किन्तु उनके देवता की उन्हें आज्ञा मिली, जो कुछ हो रहा है उसमें वे लोग हस्तक्षेप न करें, यह उनका कर्तव्य नहीं है। कार कुछ ही देर में स्टार्ट हुई और पों पों करती हुई आँखों से ओझल हो गई।

अपने पांच प्राणियों के कुटुम्ब में केवल वही उन्हें टुकड़ा पानी देने वाला है इसकी चिन्ता उसने नहीं की। उसके ऊपर मुकदमा चलाया गया। और वह अनिश्चित काल के लिए बन्दीगृह भेज दिया गया।



वैज्ञानिक की साधना

एलबर्ट डिलरर विज्ञानशाला में एक कुर्सी पर बैठा अपने हाथों की दोनों हथेलियों पर मस्तक रखे कुछ सोच रहा था, उसकी दोनों कोहनियाँ सामने रखी हुई मेज पर टिकी थीं, और वह उस पर झुका अन्तरद्वन्द्व के थपेड़ों में किसी समस्या को हल करने का प्रयत्न कर रहा था। थोड़ी देर बाद वह सीधा होकर बैठ गया। उसकी आयु सत्तर वर्ष से कम नहीं प्रतीत होती थी। सर के छोटे-छोटे बाल दूध जैसे सफ़ेद थे और बीच में से बाल उड़कर खोपड़ी खल्वाट् हो गई थी।

उसके नेत्र खुले थे और देखने में यों बिलकुल ठीक प्रतीत होते थे; पर जब वह कुर्सी से उठा, टटोलता हुआ चला, क्योंकि वह अन्धा था। वह सामने की ओर हाथ फैलाकर, छोटे-छोटे कदम रखकर, टटोलता हुआ चल रहा था। इधर-उधर लगी मेज़ों और यंत्रों से बचता-बचाता, वह एक कोने में रखी हुई मेज़ के सामने आ खड़ा

हुआ। उस पर किसी वृद्ध पुरुष की संगमरमर की, वक्षस्थल तक मूर्त्ति रखी हुई थी। डिलरर ने टटोलकर उस मूर्त्ति पर हाथ फेरा। फिर अपने झुर्रियों पड़े हाथों से, दोनों ज्योतिहीन नेत्र पोंछ डाले, जो गीले हो रहे थे।

'तुम कहते हो मेरा आविष्कार हजारों वर्षों तक उन्नत हुई सभ्यता के लिए अभिशाप हो जायगा। मैं पूछता हूँ क्या उन वैज्ञानिकों के आविष्कार, जिन्होंने मोटर, रेल, हवाई जहाज बनाये, बन्दूक, मशीनगन, तोप बनाई, जिन्होंने गोला-बारूद, विषैली गैसों तथा विद्युत-शक्ति का पता चलाया, मानवता के लिए अभिशाप नहीं हो गये?' वह और भी अधिक उद्विग्न होकर कहता गया 'क्या इन सब आविष्कारों ने सैकड़ों-हजारों वर्षों से किसी अनिश्चित, किसी अज्ञात ध्येय की ओर बढ़नेवाली मानव-जाति के उस ध्येय को और भी अधिक अनिश्चित, और भी अधिक अज्ञात नहीं बना दिया? उस दिन भी मैंने तुम्हारे चरणों में बैठ कर कहा था, वैज्ञानिक का कार्य सत्य की खोज करना है, उसके अनुसंधान में अपने जीवन को खपा देना है। उसके फलों का प्रयोग मानव-समाज अपने हित के लिए करता है या अहित के लिए, इससे उसे कुछ सरोकार नहीं, कुछ भी सरोकार नहीं। और आज भी मैं यही कहता हूँ। बहुत विचार करने पर भी मेरे इस विश्वास की नींव हिली नहीं। आज फिर मैं उसी आविष्कार के लिए अंतिम प्रयत्न करने जा रहा हूँ। तुम मुझे क्षमा करना।'

उसके बाद उसने शांतचित लौटकर नौकर से कहा 'जो पत्र कल टाइप कराया था, बन्द करके डोनाटेलो के पास पहुँचा आओ।'

\+ \+ \+

डोनाटेलो और डिलरर कुर्सियों पर आमने-सामने बैठे वार्तालाप कर रहे थे।

'देखो मैं एक महत्त्वपूर्ण आविष्कार कर रहा था और बहुत कुछ सफलता भी मुझे मिल गई थी।' डिलरर कह रहा था 'किन्तु आयु अधिक हो जाने के कारण अब कार्य नहीं होता। नेत्र भी ज्योतिहीन हो गये हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरे जीवन के साथ ही वे सिद्धान्त भी समाप्त हो जायँ। मैंने निश्चय किया है कि वे सब सिद्धांत तुम्हें बता दूँ और तुम मेरी सहायता से उन यन्त्रों को पूरा करो।'

'इतने महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपने मुझे चुना है, इसके लिए में बहुत ही कृतज्ञ हूँ।' डोनाटेलो ने उत्तर दिया।

'मैं एक यंत्र बनाना चाहता हूँ, जिसके द्वारा कपड़ा, लकड़ी आदि पतली चीजों के मध्य से देखा जा सके और ठोस चीजों के पीछे की वस्तुओं को भी देखा जा सके।' डिलरर कुछ आगे की ओर झुक-कर कह रहा था 'लोग कहते हैं कि प्रकाश सदा सीधी रेखाओं में चलता हैं। उसका कम्पन ध्वनि के कम्पन के समान घूमकर नहीं आ सकता; किन्तु यह बात शत-प्रतिशत सत्य नहीं है। जब प्रकाश की किरणें एक घनत्व के पदार्थ से दूसरे घनत्व के पदार्थ में प्रवेश करती हैं तो वे मुड़जाती हैं। इसी सिद्धान्त के आधार पर ऐसा यंत्र बनाया जा सकता है, जिसके द्वारा ठोस पदार्थों के पीछे रखी हुई वस्तुएँ भी देखी जा सकें।'

'किन्तु पतली चीजों के मध्य से देखने की समस्या तो इस सिद्धान्त से हल नहीं होती।' डोनाटेलों ने आपत्ति की।

'उसके विषय में भी बताता हूँ।' डिलरर ने फिर कहना आरम्भ किया 'उसके लिए दूसरे सिद्धान्त का आश्रय लेना पड़ेगा। विशेष प्रकार की किरणें, जिन्हें हम एक्सरेज़ कहते हैं, कितनी ही अपार-

दर्शक वस्तुओं में से होकर निकल जाती हैं। उसी प्रकार साधारण प्रकाश भी उन अपार-दर्शक वस्तुओं से आंशिक रूप में गुजर जाता है; किन्तु हमारे नेत्र उसके द्वारा देख नहीं सकते। किन्तु एक ऐसा यंत्र तैयार किया जा सकता है, जिसे प्रभावित करने के लिए वह प्रकाश पर्याप्त होगा।'

डोनाटेलो बहुत ध्यान-पूर्वक इन सिद्धान्तों को सुनकर समझने का प्रयत्न कर रहा था। सहसा उसके नेत्र चमक उठे। वह प्रसन्नता-मिश्रित आश्चर्य की ध्वनि में बोला—'तब तो इस आविष्कार में सफलता मिल जाने पर मानव की वह स्थिति हो जायगी, जो उस समय थी, जब वह जंगलों और गुफाओं में बिल्कुल नग्न घूमा करता था। अपने शरीर के विभिन्न अंगों के ढँकने के लिए उसे नवीन आवरणों के आविष्कार करने की चिन्ता करनी पड़ेगी और जब तक वह अपनी चिन्ता को कार्य-रूप में परिणत नहीं कर लेगा, तब तक उसकी वही दशा रहेगी जो शायद 'गार्डन आफ ईडन' में आदम और हौवा की थी।'

डोनाटेलो की इन बातों से डिलरर तिलमिला-सा उठा। वह कदाचित् अशान्त होकर भर्राई हुई आवाज में बोला 'इन बातों से न हमें कोई सरोकार है और न होना चाहिये। मैं तो केवल यह जानता हूँ कि यदि एक नये सिद्धान्त का पता लगना संभव हो तो उसके लिए हज़ारों मनुष्यों के प्राणों का मूल्य भी अधिक नहीं। और वह आवेश में आ सहसा कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।' यह देख डोनाटेलो सिहर उठा।

\+ + +

डिलरर अकेला था, नितान्त अकेला! तीस वर्ष पूर्व उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। वह निःसन्तान था, किन्तु उसने दूसरा विवाह

नहीं किया। उसकी पत्नी बहुत ही सुन्दर थी और उसकी मृत्यु के बाद ही डिलरर ने अपना जीवन पूर्णतया विज्ञान को अर्पित कर दिया। उसी के सहारे वह पिछले ३० वर्षों से अपनी जीवन-नौका को बिल्कुल अकेला खे रहा था और किसी ने उसे उदास नहीं पाया।

× × ×

वृद्ध डिलरर के हृदय में नवयुवक डोनाटेलो के प्रति पुत्रवत् स्नेह उत्पन्न हो गया था। कुछ दिनों से डिलरर बीमार था। वह एक चार-पाई पर लेटा हुआ था और डोनाटेलो उसके समीप ही कुर्सी पर बैठा एक भौतिक विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तक पढ़ रहा था। एकाएक डिलरर कुछ गम्भीर हो कर बोला 'डोना, मुझे तुमसे कुछ कहना है।'

डोना ने पुस्तक चारपाई के एक कोने पर रख दी और बात सुनने के लिए प्रस्तुत हो गया।

'देखो, मैं चाहता हूँ कि तुम उस आविष्कार के उपयोगों को बन्द कर दो।' उसकी आवाज़ में कम्पन था।

'आपने तो मुझसे एक बार कहा था कि मेरे जीवन की सबसे बड़ी साध उस प्रयोग को अपने जीवन-काल में सफल देखने की है।' डोनाटेलो ने अपनी कुर्सी चारपाई के और निकट खिसका ली थी।

'हाँ कहा तो था; किन्तु...किन्तु...।' डिलरर को कहने के लिए कुछ भी मिल नहीं रहा था, पर उसने अपना वाक्य पूरा किया ही 'मानव की सभी साधें तो जीवन में पूरी नहीं हो जातीं। मैं चाहता था कि...।' और उसने टटोल कर डोनाटेलो का एक हाथ अपने जीर्ण-शीर्ण खुरदरे हाथों में ले लिया।

'आखिरकार आपको किस बात ने इतना शंकित कर दिया

है ?' अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा और उससे भी अधिक मूल्यवान अपना सम्पूर्ण स्नेह, इन थोड़े-से शब्दों में उड़ेलकर, डोनाटेलो ने अत्यन्त नम्र तथा मधुर ध्वनि में पूछा।

'नहीं, शंका की कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। किन्तु क्या तुम उस आविष्कार को छोड़ नहीं सकते ?' उसके इस वाक्य के आरम्भ में घबराहट थी जो अन्त में कातरता में परिणत हो गई थी।

'यों तो मुझे आपकी प्रत्येक आज्ञा शिरोधार्य है; किन्तु उसे छोड़ कर मुझे जीवन-भर अशान्त ही रहना पड़ेगा। फिर भी आप यह क्यों चाहते हैं कि मैं वह आविष्कार छोड़ दूँ ?' डोनाटेलो ने फिर उत्सुकता के साथ पूछा।

'कोई खास बात नहीं है। तुम उसकी चिन्ता न करो।' डिलरर ने अपनी गर्दन और ज्योतिहीन नेत्र बराबर वाली विज्ञानशाला के उस कोने की ओर घुमाये, जिसमें मेज़ पर वह संगमरमर की मूर्ति रखी हुई थी। एकबारगी ही उसका सर्वाङ्ग कांप उठा और वह अपने हाथ फैला कर डोना के सिर तथा कन्धों पर फेरने लगा।

× × ×

डोनाटेलो विज्ञानशाला में एक मेज़ के समीप खड़ा होकर प्रयोग कर रहा था। थोड़ी दूर पर डिलरर एक आरामकुर्सी पर बैठा हुआ था। तभी डिलरर ने पूछा 'कितना कार्य अभी शेष है ?'

'यंत्र पूरा बन गया है ? केवल आखरी लेंस बनाना बाकी है।'

'क्या डाइनेमो द्वारा आवश्यक वोल्टेज की विद्युत-शक्ति उत्पन्न करने में सफलता मिल गई ?'

'जी हाँ ! वोल्टेज तो उससे अधिक भी बढ़ाया जा सकता है।'

'उससे अधिक की आवश्यकता शायद नहीं पड़ेगी। डाइनेमो कनेक्शन्स यन्त्र से ठीक हो गये हैं ?'

'सब ठीक हो गये, केवल उस लेन्स ही की कसर है।' डोनाटेलो की आवाज़ में व्यग्रता तथा उत्सुकता थी।

'देखो, बिना उस लेन्स के यंत्र द्वारा देखने का प्रयत्न मत करना।'

'सिद्धान्त तो कहता है कि इतने बड़े यंत्र से बिना लेन्स के भी देखा जा सकता है।'

'देखा तो जा सकता है; किन्तु अच्छा यही होगा कि लेन्स तैयार कर लिया जाय। एक खास बात के लिए वह लेन्स आवश्यक है। बिना उसके नेत्रों को हानि पहुँच सकती है।'

इतने ही में डोनाटेलो के नौकर ने आकर कहा 'लिनले आ गई हैं। आज ही जहाज से प्रातःकाल उतरी थीं।'

'क्या अपने इसी पास वाले मकान में है ?' डोनाटेलो ने अपनी व्यग्रता छिपाने का निष्फल प्रयत्न किया।

'जी हां ! वे बहुत कमजोर हो गई हैं, देखने में बहुत दिनों की बीमार-सी प्रतीत होती थीं।'

न जाने कितने वर्षों की सैकड़ों स्मृतियाँ, विद्युत्-रेखा के समान, क्षण ही भर में उसके मस्तिष्क में चमक गईं। लिनले से वह बाल्य-काल से ही परिचित था। लगभग चार वर्ष पूर्व वह अमेरिका चली गई थी। उसे ज्ञात हुआ था कि वहीं उसका विवाह भी हो गया है। लम्बे अर्से के बाद वह लौटकर आई है।

डोनाटेलो ने हाथ का यंत्र रख दिया। और एक बटन दबाकर सरसराहट की ध्वनि के साथ घूमते हुए एक पहिये को बन्द कर दिया।

तभी डिलरर ने पूछा 'क्या बात है ?'

'कुछ नहीं।' डोनाटेलो का संक्षिप्त उत्तर आया।

'देखो, थोड़ी ही देर का तो कार्य रह गया है, उसे समाप्त कर लो, तब कहीं जाना।' डिलरर ने कहा।

'अच्छा' कहकर डोनाटेलो ने बड़े डाइनेमो का पहिया चालू कर दिया और कार्य में लग गया।

थोड़ी देर बाद उसके हाथ रुक गये, जैसे उसका ध्यान कहीं और चला गया हो। वह समीप की खिड़की के सामने आ खड़ा हुआ। सामने ही लिनले के घर का द्वार था। द्वार पर एक पर्दा पड़ा हुआ था।

उसने चुपचाप यंत्र उस ओर घुमाया और दो-तीन और पहिये चलाकर उसमें देखने लगा। उसने देखा—लिनले खड़ी है। यंत्र में से उसे वह निरावरण दिखाई दी। बिल्कुल निरावरण और उसका (लिनले का) दूधिया गुलाबी चेहरा पीला पड़ गया था।

तभी डोनाटेलो को प्रतीत हुआ मानो उसके नेत्रों के सामने अँधेरा-सा आता जा रहा है। हड़बड़ा कर उसने यंत्र नेत्रों से हटाया और देखा कि उसके चारों ओर घुप्प अँधेरा है। बिल्कुल घना अँधेरा ही अँधेरा! उसे और कुछ भी दिखाई नहीं देता था। एक चीख़ उसके मुख से निकल गई और यंत्र का छोटा काँचवाला भाग उसके हाथ से भन्न से गिरकर चूर-चूर हो गया।

तभी डिलरर ने हड़बड़ाहट के साथ घबरा कर पूछा 'क्या हुआ?'

'मैं अन्धा हो गया।' पागल की भाँति अपने हाथ नेत्रों के सम्मुख फिराते हुए उसने कहा 'मैं अन्धा हो गया!' और जैसे ही वह अपने स्थान से हटने का प्रयत्न करने लगा, समीप रखा दूसरा यंत्र उससे टकरा कर गिरा और क्षण भर में चूर-चूर हो गया।

'सब कुछ समाप्त हो गया!' डिलरर ने निराशा-भरे गहरे स्वर

में कहा। और वह कुरसी से उठकर उसी मेज़ के सामने जा खड़ा हुआ, जिस पर वह संगमरमर की मूर्ति रखी हुई थी।

'तुम कहते थे कि मेरा आविष्कार मानवता के लिए अभिशाप होगा और आज एक और बलि देकर भी मैं उसका विरोध करता हूँ। तुम मुझे क्षमा न करो; पर ज्ञान की खोज के लिए तुम ऐसी बात कह कैसे सके? वैज्ञानिक का काम सत्य का अनुसंधान करना है।'—उसने एक गहरी साँस ली और अन्धे डोनाटेलो का हाथ पकड़ कर वह बोला 'डोना, हम असफल नहीं हुए हैं।'



ष ड् य न्त्र

'मैं भी ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करता था, मिस्टर जेम्स !'

'तो फिर...?'

'जब अपने ही साथ ऐसी घटना हो गई, तो अब क्या करूँ ?'

'हूँ...!'

'सुनी हुई बातों पर अविश्वास किया जा सकता है, अपनी आँखों देखी या अपने अनुभव की बातों पर नहीं।'

'किन्तु...'

'आँखों देखी होने पर भी मैं उसके विषय में चिन्तित न होता; किन्तु...किन्तु अब तो मेरे जीवन तथा मेरी सम्पत्ति का प्रश्न है। अब मैं उसके विषय में कैसे निश्चिन्त बैठा रहूँ ?'

'जीवन तथा सम्पत्ति का प्रश्न...?'

'हाँ, किन्तु आपकी इस प्रकार की बातों के विषय में क्या धारणा है ?'

'वैज्ञानिक तो केवल उन्हीं बातों पर विश्वास करता है, मिस्टर स्मिथ, जो विज्ञानशाला में सिद्ध की जा सकती हैं। इन बातों को तो आज तक कोई भी विज्ञानशाला में सिद्ध कर नहीं सका !'

इसके बाद जेम्स फिर सामने रखे अणुदर्शक यन्त्र पर झुक गया। अणुदर्शक यन्त्र के नीचे मेज़ पर काँच की एक चपटी प्याली में किसी

रासायनिक पदार्थ के नीले रवे रखे हुए थे और समीप ही खुली हुई एक नोटबुक और कोहनूर पेंसिल।

स्मिथ छत पर दृष्टि गड़ाये, आरामकुर्सी पर बैठा, धुआँ छोड़ रहा था। उसके पैर सामने फैले हुए थे और सर पीछे कुर्सी पर टिका था। उसके एक हाथ में पाइप था, कभी-कभी सीधा होकर गहरा दम खींच लेता था। उसके दाहने हाथ की अंगुली में हीरे के नग की बहुत पतली-सी जगमगाती हुई अंगूठी और सम्बूरी ओवरकोट उसके धनाढ्य होने का परिचय दे रहे थे। नीली आँखें और सुनहले बाल भरे हुए चेहरे की छटा को द्विगुणित कर रहे थे। आयु लगभग पचीस वर्ष होगी।

जेम्स ने समीप रखी नोटबुक में कुछ लिखा और फिर स्मिथ की ओर दृष्टि फेरी।

'हाँ, तो फिर जैसा आप कहें?'

'आप वहाँ चल कर सब परिस्थिति देखेंगे, तो खुद सब बातों पर विश्वास कर लेंगे। चलिये, मैंने तो इसीलिए पहले ही आपके पास सूचना भेज दी थी कि आप तैयार रहें।'

'हाँ, मैं स्वयं ही इसकी जाँच-पड़ताल करने को उत्सुक हूँ, क्योंकि यह तो मेरे लिए एक नवीन आविष्कार का रूप ग्रहण कर लेगा।'

जेम्स ने कलाई में बँधी सुनहली रिस्टवाच पर दृष्टि डाली। आठ बजे थे। पीछे की ओर फिर कर खिड़की से बाहर देखा, कोहरा बहुत घना था। कमरे से बाहर समीप की वस्तुएँ भी छाया-सी प्रतीत होती थीं और दूरी के साथ ही बढ़ती हुई प्रतीत होनेवाली कोहरे की सघनता ने दूर-की सब वस्तुओं पर काला परदा-सा डाल रखा था।

'कोहरा आज बहुत अधिक है; किन्तु चलो, कुछ हर्ज नहीं।

शायद दिन चढ़ने पर 'वेदर' अच्छा हो जाय।'—जेम्स ने कुर्सी से उठते हुए कहा।

उसने खूँटी से उतार कर हैट पहना और फिर भूरे-से रंग के दस्ताने। 'हाँ, पत्र में उन सब घटनाओं का हाल तो आप ने साफ़-साफ़ लिखा न था? मैं अभी तक भी सब-कुछ पूरी तरह समझ नहीं सका।' जेम्स ने प्रश्नसूचक दृष्टि से स्मिथ की ओर देखा।

'मार्ग में आपको सब बतला दिया जायगा।'—स्मिथ ने उत्तर दिया।

जेम्स ने समीप रखे 'अटैची-केस' में, जिसमें पहले ही से कुछ सामान रखा हुआ था, एक नोटबुक, एक दूरदर्शक यन्त्र और अपना रिवाल्वर रखा और एक छोटा-सा 'पोर्टेबिल डाइनमो' भी साथ लिया।

'शायद दो-तीन दिन में लौटना हो, सब सामान ले लेना।'—स्मिथ ने कुर्सी से खड़े होते हुए कहा।

'सामान की क्या आवश्यकता है? फिर आप तो साथ हैं ही!'—जेम्स ने मुसकराते हुए उत्तर दिया। दोनों कमरे से बाहर चले गये।

× × ×

कार कोहरे को चीरती, पों-पों करती, चली जा रही थी। जेम्स और स्मिथ दोनों पिछली सीट पर बैठे थे। ड्राइवर के हाथ मोटर के 'स्टीयर' पर कार्य कर रहे थे; किन्तु उसका मस्तिष्क स्मिथ की बातों में उलझा था। कार कभी सड़क छोड़ कर बराबर की पटरी पर आ जाती और वह फिर सजग होकर उसे सड़क पर ले आता।

'...आज से पन्द्रह दिन पूर्व मैंने उसे सबसे पहले देखा था,'—स्मिथ कह रहा था 'तब कुछ आवश्यक कार्यवश मैं केंट-फ़ोर्टशायर

गया था। वह सारा क़स्बा मेरा ही है। कार्य में इतना व्यस्त रहा कि सायंकाल के चार बज गये। ड्राइवर ने दो-तीन और आवश्यक कार्य याद दिला दिये, उनमें दो-तीन घंटे और बीत गये। मार्ग अच्छा न था और वर्षा भी बहुत ज़ोर की होने लगी थी, इसलिए रात को लौटना उचित न समझा। मुझे किसी के यहाँ टिकना अच्छा नहीं लगता, और वैसे किसी सम्बन्धी अथवा मित्र का मकान वहाँ है भी नहीं, यों कहने को तो वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति अपना परिचित या भाड़ेदार है। दुर्भाग्यवश वहाँ पर कोई होटल अथवा सराय भी नहीं है।

बस्ती से थोड़ी दूर प्राचीन समय का एक छोटा-सा क़िला है। आने-जानेवाले यात्री उसे ठहरने के काम में लाते थे। दो-एक छोटी दूकानें भी वहाँ इसलिए खुल गई थीं। पूछने पर ज्ञात हुआ कि अब वहाँ कोई भी ठहरने का साहस नहीं करता, क्योंकि वह भूतों का निवास-स्थान हो गया है।'

'आपने यह नहीं पूछा कि ठहरनेवाले व्यक्तियों को यह कैसे ज्ञात हुआ कि वहाँ भूत रहते हैं?'—जेम्स ने बीच ही में बात काट कर उत्सुकतापूर्वक पूछा।

'हाँ, मैंने पूछा था।' स्मिथ ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया 'उन्होंने मुझे अनेक विचित्र कहानियाँ सुनाई थीं; किन्तु उस समय मुझे उनमें से एक पर भी विश्वास नहीं हुआ था। मुझे बतलाया गया था कि ठहरने वालों ने वहाँ रात्रि के समय गाने-बजाने की आवाज़ सुनी, कभी-कभी पियानों की ध्वनि पर कोई नाचता हुआ भी प्रतीत होता था। इधर-उधर बहुत खोज की गई; किन्तु कहीं कुछ पता नहीं चला। आवाज़ क़िले के अन्दर ही सुनाई देती थी, बाहर नहीं। इसके अतिरिक्त वहाँ बहुत बार ठहरनेवालों के सम्मुख अन्दर

के हाल में रक्त की वर्षा हुई। रक्त गिरता दीखता था; किन्तु यह ज्ञात न होता था कि रक्त कौन गिरा रहा है, कैसे गिरा रहा है। ऊपर छत थी, और वहाँ कोई भी दीखता न था। कुछ व्यक्तियों का तो कथन है कि वहाँ उन्होंने भूतों को स्पष्ट अपनी आँखों से देखा। उन्होंने उज्ज्वल प्रकाश के घेरे में विचित्र भूतों को ऊपर से आते, हवा में चलते और फिर हवा ही में अन्तर्धान होते देखा है।'

'क्या कभी किसी ने भूतों के भेद को जानने का प्रयत्न नहीं किया?' जेम्स ने एक हाथ से अपना मस्तक खुजाते हुए प्रश्न किया।

'हाँ, एक बार एक 'डिटेक्टिव' आया था,' स्मिथ ने उत्तर दिया 'वही वहाँ सबसे अधिक दिन ठहर पाया। जिस दिन वह आया था, उसके सातवें रोज़ उसकी लाश चारपाई पर पड़ी मिली। उसकी जेब में एक डायरी भी मिली, जिसमें उसने उस रात का सोते समय तक का हाल लिख रखा था। उसे भी नाच-गाना, रक्त की वर्षा, भूत आदि सब विचित्र चीज़ें दिखाई दी थीं; किन्तु वह उनसे डरा नहीं, वहीं टिका रहा। उसने आवाज़ ज़मीन के अन्दर से आती हुई प्रतीत होती लिखा है। जिस रात को वह मरा, उससे पहली रात को उसे आवाज़ सुनाई दी थी कि तुम यहाँ से कल चले जाओ, नहीं तो अगली रात को मार दिये जाओगे। और हाँ, एक बात और, उसका सारा शरीर नीला हो गया था!'

'सारा शरीर नीला हो गया था!' जेम्स ने एकाएक चौंक कर कहा 'तब तो एक प्रकार की ज़हरीली गैस द्वारा उसकी हत्या की गई!'

'कुछ भी हो, लोगों ने तो भूतों को ही उसकी मृत्यु का कारण समझा। लाश के 'पोस्ट मार्टम' के बाद पुलिस जाँच-पड़ताल करने

आई थी ; किन्तु कुछ भी पता न चला। और आप जानते हैं कि गाँव-क़स्बों के मामले में बहुत छानबीन भी तो नहीं होती।"

'क़स्बे में रहनेवाले व्यक्तियों को तो किसी तरह की हानि नहीं पहुँचाई जाती ?'

'नहीं।'

'और न कभी क़िले के बाहर कोई उस प्रकार की विचित्र घटना ही हुई ?'

'नहीं।'

'और आपकी अपनी घटना तो अभी...'

'वह अब सुनाऊँगा। उनमें से बहुत-सी बातें तो मुझे बाद में ज्ञात हुईं ; किन्तु जितना उस दिन सुना था, वह सब तो मुझे कहने वालों के मस्तिष्क की ख़राबी और अन्ध-विश्वास का फल ही प्रतीत हुआ था। मैंने उस दिन ड्राइवर से क़िले पर चलने के लिए कहा। वहाँ दो व्यक्ति रहते थे। उनसे पूछने पर मालूम हुआ कि वे वहाँ भूतों की सिद्धि करने में लगे हैं। प्रतिदिन उनकी पूजा करते हैं, इसलिए वे उन्हें कुछ हानि नहीं पहुँचाते। मैंने उनसे ठहरने के लिए कहा। उन्होंने मुझे बड़े हाल के पास की कोठरी में ठहरा दिया। विश्वास उन बातों पर न होने पर भी कुछ भय हृदय में था ही। बाहर हाल में अँधेरा था, कोठरी में लालटेन जल रही थी। मैं वहाँ अकेला था, क्योंकि ड्राइवर वहाँ ठहरने के लिए तैयार न हुआ था। मैंने सोने का प्रयत्न किया ; पर सो न सका। बैठा हुआ एक उपन्यास पढ़ रहा था। घड़ी देखी, बारह बजे थे। मुझे लालटेन की रोशनी कुछ धीमी-सी पड़ती प्रतीत हुई। मैंने सोचा, शायद तेल समाप्त हो गया है। लालटेन को हिला कर देखा, तो तेल उसमें काफ़ी था ; फिर भी लौ छोटी पड़ती जा रही थी। वह धीमी हुई, धीमी हुई

और बुझ गई। कमरे में अँधेरा-गुप्प हो गया। मैंने ज़ोर से आवाज़ दी; किन्तु आवाज़ शायद हाल के बाहर तक भी न पहुँची हो, क्योंकि बाहर मूसलाधार पानी पड़ रहा था। मैंने अनुभव किया कि मेरे मुँह से आवाज़ ठीक नहीं निकल रही है और मेरे हृदय की गति तीव्र हो गई है।

'घबराना मत, तुम्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई जायगी।'—मुझे उस भयानक अन्धकार में से आवाज़ सुनाई दी।

'कौन ?...' मैंने किसी प्रकार पुकारा; किन्तु मुझे कुछ भी उत्तर न मिला। उसके बाद ही छत के समीप प्रकाश-सा होता दिखाई दिया। प्रकाश बढ़ा और फिर उज्ज्वल प्रकाश से घिरी, ऊपर से नीचे तक सफ़ेद चोग़ा-सा पहने हुए एक झिलमिलाती पारदर्शक-सी शकल दिखाई दी।। न वह पृथिवी पर टिकी थी और न छत से लगी थी। अधर में ऐसी स्थित थी मानो हवा पर खड़ी हो।

'तुम कौन हो ?'—मैंने बड़ी कठिनाई से कहा। मेरा गला घुट-सा गया था।

'मैं तुम्हारे चाचा की रूह हूँ।' उस सफेद शकल से आवाज आई—'मुझे तुम्हारे पिता ने, जब हम दोनों ज़मींदारी के कार्यवश यहाँ आये थे, क़त्ल करा दिया था। फिर उन्होंने मेरी सारी जायदाद पर जालसाजी से कब्ज़ा कर लिया। मेरा लड़का आजकल भूखों मर रहा है। अपने पिता की करोड़ों की सम्पत्ति, जिसमें से अधिकांश का हक़दार वह था तुमने पाई है। या तो अपने पिता के पाप के प्रायश्चित्त-स्वरूप तुम अपनी आधी सम्पत्ति मेरे लड़के के नाम कर दो, वरना एक मास बाद तुम्हारे पिता द्वारा कराये गये अत्याचार के प्रतिशोध-स्वरूप तुम जान से मार दिये जाओगे।' इसके बाद ही वह शकल ग़ायब हो गई, मानो गलकर हवा में मिल गई हो। फिर कमरे में

पूर्ववत् अँधेरा हो गया।

'किन्तु तुम्हारे लड़के का तो कुछ पता नहीं, वह तो बहुत दिनों से गायब है।'—मैंने चिल्लाकर कहा।

'तुम जायदाद उसके नाम करने का निश्चय कर लो, वह तुम्हारे पास आ जायगा।'—अन्धकार ही में से आवाज़ सुनाई दी। फिर मेरे हृदय के अतिरिक्त और सब-कुछ शान्त हो गया। मैं उस समय बहुत भयभीत हो गया था। यदि मुझे पहले ही निडर रहने का आश्वासन न दे दिया गया होता, तो शायद भयवश 'हार्टफेल' हो जाने से मेरी मृत्यु हो जाती।

इतने में ही कार केंटफोर्टशायर आ गई।

× × ×

स्मिथ ने उठ कर बाहर देखा, ड्राइवर सड़क के दूसरे किनारे पर खड़ा कपड़े से कार साफ़ कर रहा था—"बॉय, चार टोस्ट लाओ।"—स्मिथ ने पुकारा, और फिर जेम्स से वार्तालाप करने लगा।

'क्यों, आपने अपने चाचा की हत्या के विषय में पहले भी सुना था!'—जेम्स ने चाय का प्याला टेबिल पर रखते हुए कहा।

'सुना था। मेरे पिता जी की मृत्यु तो तभी हो गई थी, जब मैं बहुत छोटा था; किन्तु मेरे ड्राइवर ने कई बार मुझ से चाचा की हत्या के विषय में चर्चा की थी। उसने यह तो नहीं कहा कि पिता जी ने उसकी हत्या करदी; किन्तु चाचा का ख़ून हो जाने की बात कही थी। अस्पष्ट ढंग से कुछ जायदाद के विषय में भी जिक्र किया था।'

'क्या यह ड्राइवर आपके पिता के समय का है?'—जेम्स ने चाय की घूंट भरी।

'हाँ, जब मैं बहुत छोटा था, तभी यह पिताजी की मृत्यु के बाद नौकरी छोड़कर चला गया था। कोई चार माह हुये यह फिर आया

और इसने इस बातका प्रमाण दिया कि वह हमारा बहुत पुराना ड्राइवर है और अब आर्थिक संकट में है। मैंने उसे फिर रख लिया।'

'प्रमाण! प्रमाण क्या है?'

'प्रमाण यही कि उसने हमारी बहुत-सी ऐसी घरेलू बातें बताईं, जिन्हें कोई भी व्यक्ति, जब तक वह बहुत दिनों तक पिताजी के साथ न रहा हो, जान नहीं सकता।'

जेम्स दोनों हथेलियों पर सर रखे बहुत गम्भीरता-पूर्वक कुछ सोच रहा था। इतने में ही ड्राइवर अन्दर आया। 'हुजूर, हुक्म हो तो थोड़ी देर के लिए कहीं हो आऊँ।' ड्राइवर ने स्मिथ से कहा 'मुझे अपने ठहरने का भी इन्तजाम करना है।'

'क्या तुम हमारे साथ नहीं ठहरोगे?'—स्मिथ ने प्रश्न किया।

'आप कहाँ टिकेंगे हुजूर!'

'क़िले में।'—जेम्स ने उत्तर दिया।

'यही मैं भी सोच रहा था और इसीलिए तो कहा।'—ड्राइवर ने विनय की—'वहाँ ठहरने का तो साहस मुझमें नहीं। वहाँ तो...वहाँ तो···सो तो आप जानते ही हैं।'

'अच्छा, जाओ; किन्तु, जल्दी लौट आना।'—स्मिथ ने आज्ञा दे दी।

ड्राइवर चला गया, तब स्मिथ ने जेम्स से कहा 'आप क़िले में ठहरने का विचार तो कर रहे हैं; किन्तु,···किन्तु···'

'हाँ, हाँ, किन्तु क्या?'

'इस उद्देश्य से वहाँ आकर ठहरनेवाले एक व्यक्ति की हत्या भी हो चुकी है।'

'यह मुझे ज्ञात है; पर यदि आघात की सम्भावना हो भी, तो वह मेरे लिए हो सकती है, आपके लिए नहीं।'

'क्यों ?' स्मिथ को आश्चर्य हुआ।

'यदि आपके चाचा की रूह को इस बात का भय न होता कि कहीं आप भय से मर न जायँ, तो वह आपको निडर रहने के लिए प्रकट होने से पहले कभी चेतावनी न देती।' जेम्स मुसकराया।

'पर यदि···यदि···' स्मिथ की समझ में कुछ भी आ नहीं रहा था।

जेम्स ने बीच में ही बात काटकर कहा 'यदि किसी प्रकार भी आपकी मृत्यु हो जाय, तो उनका सब परिश्रम निष्फल हो जायगा।'

'किनका परिश्रम, मिस्टर जेम्स ?' स्मिथ ने आश्चर्य के साथ पूछा।

'उन्हींका, जिन्होंने यह सब षड्यन्त्र रचा है।'

'षड्यन्त्र ?'

'हाँ, षड्यन्त्र। आपके लड़के की आयु अभी केवल पाँच वर्ष की है। यदि किसी प्रकार भी आपकी मृत्यु हो जाय, तो फिर तेरह वर्ष तक वे लोग कुछ भी कर नहीं सकते। सम्पत्ति का प्रबन्ध 'कोर्ट आफ वार्ड्स' के हाथों में चला जायगा।'

'पर यदि आप ही के···'

'आपको उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं, वह मैं स्वयं कर लूंगा। वैज्ञानिक तथा 'डिटेक्टिव' का एक पैर सदा मृत्यु की परिधि के भीतर रहता है, और मैं इस समय दोनों का कार्य कर रहा हूँ।'

इसके बाद दोनों मित्र वहाँसे चले गये।

× × ×

'क्या जब आप पहले आये थे, तब यही दो व्यक्ति यहाँ थे, जिन्होंने हमें लालटेन दी है ?' जेम्स ने प्रश्न किया।

'एक तो उन्हीं में का है; पर एक नया है।' स्मिथ ने उत्तर

दिया 'यह जो भारी-से बदन का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति है, तब इसी जगह था ?' दोनों किले के हाल में बैठे वार्तालाप कर रहे थे। इतने बड़े हाल में केवल एक लालटेन टिमटिमा रही थी और चारों ओर सन्नाटे में साँय-साँय-सी हो रही थी।

'देखिये।' स्मिथ ने सहसा लालटेन की ओर इशारा करते हुए कहा। जेम्स ने देखा कि लालटेन की रोशनी धीमी पड़ती जा रही है। उसने शीघ्रता से लालटेन को हिलाकर देखा, तेल काफ़ी था ; रिस्टवाच पर स्मिथ की निगाह गई, साढ़े ग्यारह बजे थे। 'लगभग इसी समय उस दिन भी लालटेन बुझ गई थी।' उसने घबरा कर कहा। इतने ही में दोनों ने देखा कि लालटेन बुझ गई। हाल में बिलकुल अँधेरा हो गया।

देखो, तुम घबराना नहीं।' जेम्स ने स्मिथ से कहा। इतने में ही हाल के एक कोने में छत के समीप प्रकाश-सा हुआ ; फिर झिलमिलाती एक विचित्र शकल दृष्टिगोचर हुई।

'स्मिथ, तुम कुछ भी उपाय करो ; पर जो-कुछ मैंने क दिया है, वह टल नहीं सकता।'—उस शकल से आवाज़ आई।

धाँय-धाँय-धाँय जेम्स ने उसपर रिवाल्वर से गोलियाँ दागीं। क्षण-भर ही में सब-कुछ वहीं ग़ायब हो गया और हाल में फिर अँधेरा हो गया।

दोनों मित्र रात-भर बैठे रहे, क्षण-भर के लिए भी सोये नहीं। बहुत-सी विचित्र ध्वनियाँ उन्हें वहाँ सुनाई दीं; किन्तु चारों ओर केवल अन्धकार था, कुछ भी सूझता न था। रात अब बीते, अब बीते। वे एक-एक क्षण गिन रहे थे और रात मानो स्थिर हो गई थी। ज़रा भी वे बोलते थे, तो उसकी प्रतिध्वनि उन्हें हाल में गूँजती सुनाई देती थी।

अन्त में रात बीती और हाल में थोड़ा सा प्रकाश हुआ। जेम्स एक हाथ में अपने बाल पकड़े चक्कर लगा रहा था। घूमता-घूमता वह बाहर चला गया। बहुत देर तक चलता चला गया। कुछ सोचता हुआ चला जा रहा था कि सहसा चौंका, जैसे कुछ याद आ गया हो और शीघ्रता के साथ वह किले को लौट आया।

'ज़रा लालटेन तो दिखाना।'—जेम्स ने हाल में आकर स्मिथ से कहा।

'उसे तो अभी वह आदमी, जिसने लालटेन दी थी, ले गया।' स्मिथ ने उत्तर दिया।

'ले गया, कब ले गया?' जेम्स ने हड़बड़ाहट के साथ पूछा।

'अभी कोई पाँच मिनट हुए!'—स्मिथ ने जेम्स के चेहरे पर कुछ पढ़ने का प्रयत्न किया।

'ज़रा उसे मँगवाना।' जेम्स ने कुछ सोचते हुये कहा।

स्मिथ लालटेन ले आया। जेम्स ने उसे खोल कर देखा। बत्ती ठीक थी। थोड़ा-सा तेल एक कपड़े पर डालकर जलाया, वह भी ठीक था, खूब जलता था। फिर उसका चेहरा और भी गम्भीर-सा हो गया। 'लालटेन लौटा दो।'—उसने धीमे स्वर में स्मिथ से कहा।

× × ×

'आज आपने प्रकाश का प्रबन्ध क्यों नहीं किया?'—स्मिथ ने आश्चर्य के साथ जेम्स से प्रश्न किया।

'लालटेन से क्या लाभ? वह तो बुझ जाती है!'—जेम्स ने उत्तर दिया 'मैंने बहुत सोचा; किन्तु समझ न सका कि वह कैसे बुझ जाती है! बताओ न, उससे लाभ क्या?' वह स्पष्ट शब्दों में कह रहा था। उनमें किसी प्रकार का प्रकम्पन नहीं था, घबराहट नहीं थी।

उसके पास ही एक लोहे का बक्स-सा रखा हुआ था और उसकी कोहनी उसी पर टिकी थी। दोनों मित्रों में वर्तालाप हो रहा था और चारों ओर अँधेरा था।

'क्या समय हुआ होगा ?' जेम्स ने पूछा।

'शायद साढ़े ग्यारह बज गये हों।' उसे उत्तर मिला। और अन्धकार में उसने कुछ ध्वनि सुनी, मानो किसी ने बिजली का 'स्विच आन' कर दिया हो।

''तुम दोनों बेकार अपनी जान गँवाने पर तुले हुए हो। तुम्हारा रिवाल्वर यहाँ काम नहीं देगा। तुम लोग यहाँ से चले जाओ।' अन्धकार में से आवाज़ आई।

जेम्स ने समीप रखे डाइनमो का एक बटन दबाया और बिजली का एक बल्ब जल गया। सारे हाल में प्रकाश होगया। स्मिथ को किसी वस्तु की छाया-सी छत के समीप दिखाई दी। धाँय-धाँय ! उसने उसपर रिवाल्वर से निशाना लगाया।

कड़ाक से एक गोली आकर बिजली के बल्ब पर लगी। वह चूर-चूर हो गया और फिर सब-कुछ अन्धकार में छिप गया।

'ठीक है।' जेम्स के मुँह से सहसा निकल गया, और उसने शीघ्रता के साथ एक और बटन 'डाइनमो' का दबा दिया। हाल में फिर प्रकाश हो गया। दूसरा बल्ब लोहे की जाली के भीतर था। उसने फिर उस छाया के समान वस्तु पर गोली दागी—धाँय-धाँय !

उसके ऊपर भी 'फ़ायर' की गई—धाँय-धाँय ! दो गोली आकर उसके लगी ; किन्तु वह अन्दर स्टील की जाली का एक प्रकार का वस्त्र पहने हुए था, गोलियों का उसपर कुछ भी असर नहीं हो सकता था।

धाँय-धाँय-धाँय ! उसने लगातार तीन गोलियाँ और चलाईं।

'कड़क···कड़क···कड़क···धम' कुछ काँच-जैसे यन्त्र टूटने की आवाज़ हुई और कोई वस्तु धम से पृथिवी पर आ गिरी।

वह एकदम उठकर झपटा। उसने देखा कि सफ़ेद-सा चोग़ा पहने हुए एक आदमी है। उसने फुर्ती से रिवाल्वर उसके माथे पर रख दिया और कड़क कर कहा—'ख़बरदार!'

दूसरा व्यक्ति चुप रहा।

'या तो जो-जो प्रश्न करूँ, उनका उत्तर सच-सच दे दो, नहीं तो घोड़ा दबाया और तुम्हार काम तमाम हुआ।'

दूसरा व्यक्ति अब भी चुप है।

'बोलो।'

'चुप।'

'एक'

'चुप।'

'दो'

'चुप।'

'ती···'

'ठहरो।'

'बोलो।' जेम्स ने फिर कहा।

'आप पूछें, क्या पूछते हैं?'

'अपने विषय में सब कुछ मुझे बता दो।'

'मैं एक क्रान्तिकारी दल का नायक हूँ। मैं मृत्यु से नहीं डरता। मैं क्या, हमारे दल का कोई भी व्यक्ति मृत्यु से नहीं डरता; किन्तु··· किन्तु···'

'किन्तु क्या?'

'क्या मैं आपका परिचय पूछ सकता हूँ?'

'मेरा नाम जेम्स है !'

'जेम्स ?'

'हाँ ।'

'क्या वैज्ञानिक जेम्स ? वही, जो अपने आविष्कारों के लिए बहुत प्रसिद्धि पा चुके हैं ?'

'हाँ ।'

'तब मुझे अधिक चिन्ता नहीं । एक महान् व्यक्ति के हृदय में महान कार्यों के लिए सम्मान का भाव रहता है । हाँ, मैं मृत्यु से नहीं डरता ; पर यदि मैं इस समय अपने को नहीं बचाऊँगा, तो सैकड़ों व्यक्तियों का महीनों का परिश्रम बेकार हो जायगा । मैं भी वैज्ञानिक हूँ और मेरे दल में और कोई भी व्यक्ति मेरे षड्यन्त्र के 'प्लान' से भली प्रकार परिचित नहीं । देखो, मैं रूस की राजसत्ता उलट देनेका इरादा रखनेवाले दल का नायक हूँ । रूसी राज्य ने हमारे दल के अनेक व्यक्तियों को प्राणदंड दिया और अनेक को कारागार में डाल रखा है । अब हम यहाँ षड्यन्त्र की तैयारी में लगे हैं । हमारे पास नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों की अद्भुत शक्ति है ।'

'तो फिर आप लोग मि० स्मिथ के पीछे क्यों पड़े हैं ?'

'हमारी उनसे कोई शत्रुता नहीं । हमारे दल को धन की आवश्यकता थी । इनका चचेरा भाई हमें मिल गया था । उसने कहा था कि यदि हम इनसे रुपया वसूल करा दें, तो उसका दो-तिहाई दल ले सकता है, इसीलिए इनके विरुद्ध यह षड्यन्त्र रचा गया था ।'

'अब इनका चचेरा भाई कहाँ है ?'

'यह बताना हमारी नीति के विरुद्ध है ।'

'ख़ैर, इसे जाने दीजिए, आप अपने यहाँ के इन विचित्र कार्यों के विषय में बताइये ।'

'इस किले के नीचे बहुत बड़ा तहखाना है—इससे भी बड़ा—जितना सारा क़िला ऊपर है। वहीं हम सब रहते हैं!' जेम्स का रिवाल्वरवाला हाथ अब भी तना था और वह व्यक्ति कह रहा था—'हमारे पास दो नवीन यन्त्र हैं। एक तो ऐसा है, जिसकी सहायता से मनुष्य अदृश्य हो सकता है। हमने वह यन्त्र इतना छोटा बनाया है कि 'डाइनमो' सहित उसे व्यक्ति अपने पास रख सकता है। दूसरा यन्त्र है उड़ने का। हाइड्रोजन ही की तरह की एक नये किस्म की गैस है। वह रबर की ट्यूब्स में भरी रहती है। उसे बनाने का यन्त्र छाती से बँधा रहता है। उसकी सहायता से व्यक्ति हवा में ऊपर उठ सकता है। आपकी गोलियोंका कुछ भी प्रभाव मुझ पर न हुआ, ऐसी वस्तु अन्दर पहने हूँ; किन्तु अचानक आपकी एक गोली काँच की नली पर लगी। उसका सम्बन्ध दोनों यन्त्रों से था। उसके टूटते ही दोनों यन्त्र बेकार हो गये। आजकी घटना से भी एक प्रकार से लाभ ही हुआ। दोनों यन्त्रों में काँच की नली है, और अब मैं अनुभव करता हूँ, उसे भी मुझे निकाल देना होगा।'

'और तो सब ठीक समझ में आ गया; किन्तु वह लालटेनवाली बात?'—जेम्स ने उत्सुकता के साथ पूछा।

'वह तो बहुत साधारण सी बात है?' उसने उत्तर दिया—'वे दोनों हमारे ही आदमी हैं। यहाँ लोगों के ठहरने से हमारे कार्यों में बाधा पड़ती है, इसीलिए हम लोग यहाँ किसी को ठहरने नहीं देते। लालटेन के अन्दर बत्तीकी जगह तार की जाली है। उसके ऊपर केवल इतना जलनेवाला पदार्थ लगाया जाता है, जो लगभग चार घंटे तक जलता रहे।'

'किन्तु लालटेन तो मैंने खोलकर देख ली थी।'

'किन्तु कब? जब वह बदल दी जा चुकी थी। अब मुझे आज्ञा

मिले।' उसने प्रार्थना की 'और देखिये, आप लोग हमारे कार्य में किसी प्रकार की बाधा न पहुँचावें, क्योंकि हमारा सम्बन्ध आप लोगों से कुछ न रहेगा।'

जेम्स ने रिवाल्वर नीचा कर लिया और वह व्यक्ति वहाँ से चला गया।

× × ×

अगले दिन प्रातःकाल जब स्मिथ और जेम्स किले से बाहर आये तो उन्हें न तो वे दो व्यक्ति ही मिले और न ड्राइवर। बहुत खोज कराई गई; किन्तु स्मिथ को ड्राइवर का पता ही न चला।



प्रेम की टाणु

वैज्ञानिक ने बिजली की अंगीठी से परख-नली निकाली। उसमें किसी धातु के सुनहले चमकते हुए टुकड़े थे। वैज्ञानिक ने ध्यानपूर्वक उनका निरीक्षण किया। उसके अधरों पर मुसकान की हलकी-सी रेखा दौड़ गई। 'शायद इस बार सफलता मिल गई'—वह गुनगुनाया। उसने परख-नली को एक प्याली में रख दिया। उसमें थोड़ासा कोई तरल पदार्थ डाला और गरम किया। उसके हाथ काँप रहे थे; उसके हृदय में धड़कन थी। उसे आज देखना था कि उसकी दस वर्ष की तपश्चर्या के पश्चात् भी उसे अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त हुई या नहीं। वे धातु के टुकड़े उस तरल पदार्थ में घुल गये। वैज्ञानिक ने उसमें से थोड़ा-सा घोल दूसरी परख-नली में ले लिया और किसी प्रकार अपने काँपते हुए हाथों को साधकर पास रखी एक बोतल में से थोड़ा-सा द्रव उसमें डाल दिया। परख-नली में तुरन्त ही कोई काली वस्तु बैठ गई। निराशा की एक रेखा उसके चेहरे पर दौड़ गई। उसने माइक्रासकोप से ध्यान-पूर्वक उस परख-नली को देखा! 'ओफ! सारा प्रयत्न निष्फल हो गया।' उसने कहा—'यह अन्तिम प्रयोग

था, इसके साथ ही सब कुछ समाप्त हो गया।' उसने एक ठण्डी साँस ली और पिछले दस वर्ष की घटनाओं के चित्र उसके नेत्रों के सामने नाचने लगे।

अब से दस वर्ष पूर्व उसके पास अतुल सम्पत्ति थी—ज़मीन थी, कोठियाँ थीं। और आज? आज सायंकाल के भोजन के लिए पैसे भी उसके पास नहीं! यह प्रयोग वह दस वर्ष से कर रहा था। बीसों बार वह असफल हो चुका था, किन्तु फिर भी निराश नहीं हुआ था। इन प्रयोगों में उसका सब-कुछ समाप्त हो चुका था। उसने सोचा था, जैसे भी हो, एक बार यह प्रयोग और करना होगा। उसने अपने घर के बहुत से बर्तन, कपड़े और अपनी विज्ञानशाला का बहुत सा अनावश्यक सामान बेच डाला था। प्राप्त धन द्वारा यह प्रयोग दोहराया और इस बार भी असफल ही रहा।

उसका चेहरा काला सा पड़ता जा रहा था। वह उस परख-नली को हाथ में लिए एकदम बुत बना कुर्सी पर बैठा था। उसके नेत्र बन्द थे। 'सफलता इस बार क्यों नहीं मिली? नहीं, मेरा सिद्धान्त ग़लत नहीं हैं, ग़लत नहीं हो सकता,' उसने सोचा—'किन्तु हाँ, शायद तापक्रम के कम रहने ही की वजह से इस बार भी प्रयोग असफल रहा। दस वर्ष के कठिन परिश्रम के पश्चात् यह सिद्धान्त ज्ञात हुआ। इसकी सत्यता में सन्देह नहीं किया जा सकता। क्या मैं एक बार फिर इसे······किन्तु मेरे पास अब ऐसी भी तो कोई वस्तु नहीं बची, जिसे बेचकर प्रयोग के लिए धन प्राप्त हो सके। उफ़!······' उसने एक बार अपने बाल नोच लिये। फिर एक हाथ पर सर को थामकर सोचने लगा—'कहीं बाहर से भी तो सिर्फ़ एक बार फिर प्रयोग करने के लिए रुपया मिलना सम्भव नहीं।'

इतने में दरवाज़ा खुला। एक व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया। वह

अपने ध्यान में मग्न था। उसे इस नवागन्तुक के आने का भी ज्ञान नहीं हुआ। नवागन्तुक ने कहा—'क्यों जेम्स, किस चिन्ता में हो ?'

वैज्ञानिक सहसा चौंका—'विलियम, आओ बैठो'—उसने पास पड़ी हुई कुर्सी को ठीक करते हुए कहा।

विलियम बैठ गया, और उसने अपना प्रश्न दोहराया—'किस चिन्ता में हो ?'

'वही प्रयोग।'

'क्या फिर भी असफल ही रहे ?'

'हाँ।'

'मैंने तो तुम से पहले ही कहा था कि ताँबे को सोने में परिणत करना असम्भव है। एक तत्त्व (ऐलीमेंट) दूसरे तत्त्व में परिणत नहीं किया जा सकता। उसका ध्यान छोड़ दो। हाँ, तो मैं तुम्हारे पास एक बहुत आवश्यक······'

'नहीं, असम्भव नहीं है। तुम भी विज्ञान के विद्यार्थी रहे हो। मेरे सिद्धान्तों को समझ सकते हो। मेरा विश्वास है कि अगर तुम एक बार भी उन्हें सुन लोगे, तो स्वीकार कर लोगे कि मैं ग़लत रास्ते पर नहीं हूँ।'

जेम्स ने विलियम की बात बीच ही में काटते हुए जोश के साथ कहा—'हो सकता है, तुम्हारे सिद्धान्त ठीक हों, किन्तु आज तो मैं तुम्हारे पास एक······'

'हो सकने की ही बात नहीं। वे ठीक हैं। देखो रेडियम भी तत्त्व है और सीसा भी।'

विलियम समझ गया कि जब तक जेम्स की बात नहीं सुन ली जायगी, उसे अपनी बात कहने का अवसर नहीं मिलेगा, नहीं मिलेगा। उसने कहा—'हाँ, तो फिर ?'

'रेडियम रखा-रखा बहुत काल पश्चात् सीसे में बदल जाता है, और इसका कारण भी बिल्कुल अस्पष्ट नहीं। प्रत्येक वस्तु अणु-परमाणुओं के सम्मिलन से बनी है और अणु-परमाणुओं की रचना विद्युत-कणों से हुई है। विभिन्न संख्या में विद्युत-कणों के सम्मिलन से विभिन्न वस्तुओं के अणु बन जाते हैं। वैसे सब वस्तुओं को बनानेवाले विद्युत-कण हैं एक ही प्रकार के।'

'तो इस विषय में आपने क्या सोचा?'

'यही कि यदि किसी प्रकार अणुओं के अन्दर विद्युत-कणों की संख्या में परिवर्तन किया जा सके, तो एक तत्त्व के अणु दूसरे तत्त्व के अणु में परिणत हो जायँ, ठीक उसी प्रकार जैसे आक्सीज़न के अणुओं के जोड़-तोड़ से ओज़ोन बन जाती है।'

'तो इसके लिए क्या उपाय सोचा?'

'मैंने एक प्रकार की नवीन किरणों का पता लगाया है, जिनके प्रभाव से कुछ रासायनिक पदार्थों द्वारा अणु के विद्युत-कणों की संख्या में परिवर्तन किया जा सकता है। मेरा पूरा विश्वास है कि यदि एक बार प्रयोग करने का अवसर मुझे और मिले, तो मैं इस प्रयोग में अवश्य सफल हो जाऊँगा।'

'अपनी तो कह ली, अब कुछ मेरी भी सुनोगे या नहीं? उससे तुम्हें बहुत-सा धन प्राप्त हो सकता है।'

'धन प्राप्त हो सकता है? बोलो, बोलो, कैसे?'

'तुमने मुझ से एक बार प्रेम-कीटाणुओं के विषय में कहा था और यह भी बतलाया था कि उनसे किसी भी मनुष्य में प्रेम जाग्रत किया जा सकता है।'

'हाँ, इस स्वर्ण की समस्या से पहले मैं उसी पर प्रयोग कर रहा था। मुझे सफलता भी प्रायः मिल गई थी, तभी इस नवीन समस्या

की धुन सवार हो गई और मैं इस आविष्कार में लग गया।'

'उसके विषय में मुझे कुछ बता सकते हो?'

'अवश्य, यद्यपि उस बात को बहुत दिन हो गये, किन्तु मैं उसे अभी तक भूला नहीं हूँ। मेरा विश्वास है कि एक प्रकार के कीटाणु होते हैं, जो सोई हुई दशा में प्रत्येक मनुष्य के रक्त में विद्यमान रहते हैं। जब वे जाग्रत अवस्था में आते हैं, तो मनुष्य प्रेम का अनुभव करने लगता है। किसी को देखकर जब रक्त में एक विचित्र ढँग की प्रतिक्रिया होती है, तो उसके फल-स्वरूप वे जाग्रत अवस्था में आ जाते है, और वह मनुष्य उक्त मनुष्य के प्रति प्रेम का अनुभव करने लगता है। अन्य कीटाणुओं की भाँति वे भी संख्या में शीघ्रता के साथ बढ़ने आरम्भ हो जाते हैं। ज्यों-ज्यों उनकी संख्या बढ़ती जाती है, उसका प्रेम भी पुष्ट होता जाता है। इंजेक्शन के द्वारा शरीर में एक प्रकार के कीटाणुओं को पहुँचाकर प्रेम-कीटाणुओं को नष्ट भी किया जा सकता है। उसके पश्चात् मनुष्य किसी के प्रति भी प्रेम का अनुभव नहीं कर सकता। विज्ञानशाला में उन प्रेम-कीटाणुओं को उत्पन्न किया जा सकता है। उनको जब किसी प्रकार मनुष्य के रक्त में प्रविष्ट कर दिया जायगा, तो मनुष्य प्रेम का अनुभव करने लगेगा।'

विलियम बहुत ध्यानपूर्वक सब-कुछ मूर्तिवत् बैठा सुनता रहा। उसने यकायक चौंककर पूछा—'जब कीटाणुओं को रक्त में प्रविष्ट कर दिया जायगा, तो मनुष्य किसके प्रति प्रेम अनुभव करेगा?'

'उस व्यक्ति के प्रति, जिसे वह कीटाणुओं के रक्त में प्रविष्ट होने के पश्चात् सबसे पहले देखेगा।'

इसके बाद विलियम बहुत देर तक सर पर हाथ रखे गम्भीरता-पूर्वक सोचता रहा। फिर अपनी कुर्सी जेम्स के और अधिक समीप सरकाकर कहने लगा—'देखो जेम्स, मुझे 'उन कीटाणुओं की बहुत

ज़रूरत है और उसके लिए जितना धन मांगो, मैं दे सकता हूँ। देखो, मेरे पास अतुल सम्पत्ति है, सुख के अथाह साधन हैं किन्तु एक वस्तु के बिना मुझे जीवन भार-स्वरूप हो गया है,' वह उन्मत्त की भाँति कहता गया—'लिली का नाम तो तुमने सुना होगा। वह अपने सौन्दर्य के लिए बहुत प्रसिद्धि पा चुकी है। जेम्स, वह है भी सुन्दर। शायद उस-जैसी सुन्दर स्त्री अभी तक पृथ्वी-तल पर कोई हुई नहीं। वह मेरे मकान के समीप ही रहती है। मैंने बहुत प्रयत्न किया किन्तु मैं उसे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सका। उसका प्रेम प्राप्त करने के लिए मैं अपनी लाखों की सम्पत्ति न्योछावर कर सकता हूँ, क्योंकि उसकी अनुपस्थिति में वह मुझे सुखी बनाने में नितान्त असफल है। जब और कोई चारा न रहा, तो मैं तुम्हारी शरण में……'

'हाँ, मैं तुम्हारा कार्य कर सकता हूँ, किन्तु तुमको मेरे प्रयोग के लिए बीस हज़ार देना होगा।'

'मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं। इससे भी अधिक की यदि आवश्यकता हुई, तो भी मैं इन्कार नहीं करूँगा,'—कहते हुए उसने जेब से एक चित्र निकाला और फिर कहना आरम्भ कर दिया—'जेम्स, तुमने शायद अभी तक लिली को नहीं देखा। देखो, यह उसका चित्र है। कितना निर्मल सौन्दर्य है! कितना भोला चेहरा है!'

विलियम ने चित्र जेम्स के हाथ में दे दिया। जेम्स ने एक उड़ती सी नज़र चित्र पर डालकर उसे मेज़ पर रख दिया और टकटकी बाँधकर विलियम के चेहरे की ओर देखते हुए कहा—'हाँ विलियम, तो जितना शीघ्र रुपया मुझे मिल जाय, उतना ही अच्छा, क्योंकि मेरा प्रयोग बीच में ही रुका हुआ है। मैं बिना रुपये लिए ही तुम्हारा कार्य कर देता, किन्तु मुझे इस समय रुपयों की आवश्यकता है।

प्रयोग में सफलता हो जाने पर उसका दुगुना रुपया मैं तुम्हें लौटा सकता हूँ।'

'चैक मैं आज ही सायंकाल तुम्हारे पास भेज दूँगा। रुपयों की प्राप्ति की एक रसीद तुम्हें लिख देनी होगी। और हाँ, एक बात और। मेरा कार्य समाप्त करके तुम्हें अपने प्रयोग में हाथ डालना होगा।'

'उसकी तुम चिन्ता न करो, क्योंकि उसका बहुत सा कार्य स्वर्ण वाले आविष्कार के लिए प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व ही मैंने कर लिया था।'

जब विलियम वहाँ से चला गया, तो जेम्स को ज्ञात हुआ कि विलियम लिली का चित्र वहीं भूल गया है। उसने प्रयोगशाला में ही मेज़ की दराज़ में वह चित्र रख दिया। उसके बाद वह प्रयोगशाला में चक्कर लगाने लगा। प्राय: हर दस मिनट बाद उसकी दृष्टि घड़ी की ओर बरबस खिंच जाती थी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो आज समय की चाल बहुत धीमी है। ज्यों-त्यों करके दिन बीता। सायंकाल को वह स्वयं रसीद लिखकर विलियम के घर पहुँचा और चैक ले आया।

उसने दोनों प्रयोग आरम्भ कर दिये, और एक सप्ताह में प्रेम-कीटाणुओं का प्रयोग समाप्त हो गया। उसमें केवल एक कार्य शेष था, और वह था उस तरल पदार्थ को, जिसमें कीटाणु उत्पन्न किये गये थे, पतला करना, क्योंकि उस मूल दशा में तो उस तरल पदार्थ की एक बूँद का दसवाँ हिस्सा भी मनुष्य के रक्त में पहुँचकर उसे उन्मत्त बना देने के लिये पर्याप्त था। उसके प्रभाव को कम करने की विधि वह सोच रहा था कि सहसा उसने कीटाणुओं की शीशी को मेज पर रख दिया। वह प्रयोगशाला के दूसरे कमरे में

आया, जहाँ उसके स्वर्णवाले आविष्कार के यन्त्र लगे थे। समय लगभग तीन का होगा। प्रयोगशाला के उस कमरे में प्रकाश आने के लिये केवल एक खिड़की थी। इस समय वह भी काले परदे से ढकी थी। कमरे में सूर्य का प्रकाश किसी ओर से भी नहीं आ सकता था।

कमरे के मध्य भाग में एक बड़ी मेज़ बिछी हुई थी। उस पर काँच का एक बड़ा-सा यन्त्र रखा था, जो दोनों किनारों पर पतला और बीच में गोलाकार था। यन्त्र अन्दर से खोखला था। उसमें कुछ तार लगे थे, और वे बाहर से बिजली के तारों से जुड़े हुए थे। सारे कमरे में बिजली के तारों का जाल-सा फैला हुआ था। उस यन्त्र की एक ओर की नली में कोई तरल पदार्थ भरा था। कमरे में चारों ओर भीमकाय यन्त्र लगे थे। वैज्ञानिक ने एक बटन दबाया, जिससे एक यन्त्र का बहुत भारी पहिया अति शीघ्र गति से घूमने लगा। उसके साथ ही घड़घड़ाहट के शब्द से कमरा गूँज उठा और उस काँच के यन्त्र में लगे तार चमकने लगे। इसके बाद वैज्ञानिक ने एक और बटन दबाया। तुरन्त एक और यन्त्र में लगा पिस्टन तेज़ी के साथ चलने लगा। उसके चलते ही साँय-साँय की ध्वनि हुई। उसका सम्बन्ध भी बीच के उस काँच के यन्त्र से था। उस यन्त्र के चलने से काँच के-बड़े यन्त्र में लगे चमकते हुए तारों में से प्रकाश निकलने लगा, और लगभग आध घंटे के बाद सारा कमरा एक विचित्र प्रकार के नीले प्रकाश से जगमगा उठा। वैज्ञानिक ने एक प्रकार के लाल ओवरकोट से अपने शरीर को ढक लिया और कोई धूप के चश्मे-जैसी वस्तु आँखों पर लगा ली। इसके बाद वैज्ञानिक ने वह खिड़की खोल दी। एक परख-नली लेकर समीप ही रखी हुई बिजली की अँगीठी में रख दी और एक कान्केव-मिरर

द्वारा उस काँच के यन्त्र से. निकलनेवाली नीली किरणों को उ परख-नली पर केन्द्रित कर दिया।

अब वह उसी कमरे में आ गया, जिसमें पहले कार्य कर रहा था। उसने कोई यन्त्र निकालने के लिए मेज़ का दराज़ खोला था कि उसकी दृष्टि लिली के चित्र पर पड़ी। 'अरे! यह अभी तक यहीं पड़ा है।' उसने कुछ आश्चर्य के साथ कहा—'विलियम, इतनी बार यहाँ आया किन्तु उसे यह चित्र लौटाना याद ही नहीं रहा।' वह चित्र को ध्यानपूर्वक देखने लगा। 'विलियम की प्रेमिका कोई बहुत सुन्दर तो है नहीं, फिर न जाने वह क्यों इसके पीछे इस प्रकार पागल हो रहा है।' उसने एक गहरी सांस ली, फिर उस चित्र को मेज पर रख दिया और कीटाणुओं की वह छोटी सी नली उठाई। नली लगभग दो इंच लम्बी थी और तरल पदार्थ से लबालब भरी थी। उन्हें पतला करने की समस्या पर वह विचार करने लगा। 'यह भी कैसी विचित्र वस्तु है,' वह गुनगुनाया—'इतनी ज़रा सी शीशी और सैकड़ों मनुष्यों को उन्मत्त बनाने की शक्ति अपने अन्दर क़ैद किये है।' इसके बाद वह माथे पर हाथ रखकर सोचने लगा—'इसकी एक बूँद किसी उपयुक्त तरल पदार्थ की सौ बूँदों में मिलाई जाय, तब कहीं यह प्रयोग के लिए उपयुक्त हो सकती है।'

उसने बड़ी सावधानी से शीशी की डाट खोली और उसे अणु-दर्शक यन्त्र से देखा। कुछ देर बाद डाट बन्द करने लगा कि सहसा एक चीख़ उसके मुँह से निकल गई। डाट ज़ोर से दब गई और कांच की वह छोटी-सी शीशी हाथ में ही टूट गई थी। कांच का एक टुकड़ा अँगूठे में घुस गया, रक्त बहने लगा। वह तरल पदार्थ अँगुलियों में बह गया। वह फुर्ती के साथ रूमाल उठाने के लिए मेज़ पर झुका और उसकी दृष्टि समीप रखे हुए लिली के चित्र पर पड़ी।

उसने चित्र को उठा लिया और उन्मत्त की भाँति उसे घूर कर देखने लगा। उसके सर में चक्कर-सा आ गया। वह आँखें मूँद कर पीछे कुर्सी पर ढुलक गया। कुछ देर पश्चात् उसने आँखें खोल दीं और प्रकम्पित स्वर में कहा—'लिली! लिली!' फिर अपने बालों को नोचते हुए बोला—'वैज्ञानिक, नहीं, नहीं'''।''तुम नहीं, तुम वैज्ञानिक हो...तुम्हारा आविष्का...' वह अचेतन हो गया। कुछ देर तक वह उसी प्रकार बेसुध कुर्सी पर पड़ा रहा, फिर उछल कर उठ खड़ा हुआ। ऐसा प्रतीत होता था, मानों उसमें दस व्यक्तियों का बल आ गया हो। वह चिल्लाया—'लिली! लिली!' और वही लाल ओवर-कोट पहने घर से निकल पड़ा! अब उसने दौड़ना आरम्भ किया! कभी-कभी उसके मुख से निकल जाता था—'लिली! लिली!' वह लिली के घर की ·ओर दौड़ता चला जा रहा था। विलियम ने दूर से उसे इस दशा में देखा। वह वैज्ञानिक की इस दशा पर काँप उठा। उसने आवाज़ दी—"जेम्स जेम्स!"

किन्तु जेम्स दौड़ा चला जा रहा था। 'क्या मैं तुम्हें प्राप्त न कर सकूंगा, लिली! नहीं, यह कभी सहीं हो सकता।' विलियम के कानों में ये शब्द पड़े और उसने देखा कि जेम्स आंखों से ओझल हो गया। जेम्स सीधा लिली के घर पहुँचा। दरवाज़े पर उसने कोठी के माली को देखा और उससे प्रश्न किया—'लिली कहाँ है?"

"वह तो अभी विदेश के लिए प्रस्थान कर चुकी हैं। कोई एक घंटा हुआ। शायद अभी तक जहाज़ छूटा नहीं होगा"—माली ने जेम्स को आँखें फाड़-फाड़ कर देखते हुए उत्तर दिया।

"अभी जहाज़ छूटा नहीं होगा!" जेम्स ने लड़खड़ाती हुई

आवाज़ में कहा और बन्दरगाह की ओर दौड़ पड़ा। माली कठ-पुतले के समान वहीं पर खड़ा रह गया।

× × ×

रात को बड़े ज़ोर की आँधी आई। वैज्ञानिक की प्रयोगशाला में मशीनें घड़घड़ाहट के साथ चल रही थीं। बाहर आँधी ने एक तूफ़ान का रूप धारण कर रखा था। प्रयोगशाला जन-शून्य थी। आँधी के झोंके खुली खिड़की से अन्दर आ रहे थे। दरवाज़ों की खड़खड़ाहट ने यन्त्रों की घड़घड़ाहट के साथ स्वर मिलाया। हवा के झोकों से बिजली के तार हिलने लगे। हिलने की वजह से बिजली के तार मिले। न जाने कितनी तेज़ विद्युत-शक्ति उनमें दौड़ रही थी कि तारों के मिलने से आग की लपट उनमें से निकलने लगी, मानों कांच में से निकलनेवाले नीले प्रकाश के साथ संघर्ष कर रही हो। लोगों ने थोड़ी देर के बाद देखा कि वैज्ञानिक की प्रयोगशाला में आग लग गई है। विद्युत द्वारा फैली हुई उस प्रचण्ड ज्वाला का कुछ भी प्रतिकार न हो सका और रात भर में वहाँ सब कुछ जलकर स्वाहा हो गया।

सुबह को विलियम ने अपने मित्रों को बताया कि जब मैंने जेम्स को उस विचित्र दशा में एक लाल-सा ओवरकोट पहने भागते हुए देखा और अपने आप को उसका पीछा करने में असमर्थ पाया, तो वहां टैक्सी तलाश करने लगा। टैक्सी बहुत देर बाद मिली। मैंने उसके मुंह से लिली का नाम सुन लिया था। वहाँ से मैं सीधा लिली के घर आया। वहाँ मुझे ज्ञात हुआ कि वह जहाज़ की ओर चला गया है। मैं भी वहाँ से जहाज़ के लिए रवाना हुआ। मैंने दूर से देखा जेम्स जेटी पर खड़ा चिल्ला रहा है—'रोको जहाज़, नहीं रोकोगे ?' और जहाज़ किनारे से बहुत दूर पहुँए गया था। मैं और तेज़ी से आगे बढ़ा। फिर जेम्स ने चिल्लाकर कहा—'नहीं रोकते जहाज़ ?

अच्छा तो लो, मैं वहीं...' मेरे मुंह से निकल गया 'तुम क्या करते हो जेम्स ! देखो, तुम तैरना बिल्कुल नहीं...' इतने में जेम्स धड़ाम से समुद्र में कूद पड़ा। वह दो चार क्षणों तक सागर की लहरों के साथ अठखेलियाँ करता रहा। देखते ही देखते निर्दयी लहरें उसे निगल गईं।

जब जेम्स की जली हुई प्रयोगशाला की खोज की गई, तो वहाँ और सामान के साथ किसी धातु के चमकते हुए बहुत से सुनहले टुकड़े भी मिले। वैज्ञानिको ने उनका निरीक्षण किया। निरीक्षण किये जाने पर वे शुद्ध स्वर्ण सिद्ध हुए। विलियम ने जेम्स के उन दो नवीन आविष्कारों की बात वैज्ञानिकों को बतला दी थी। उन्होंने बहुत खोज की कि प्रयोगशाला में कोई ऐसी वस्तु मिल जाय, जिसकी सहायता से वे उन दो नवीन आविष्कारों के विषय में अनुसंधान कर सकें, किन्तु वे अपने प्रयत्न में सफल न हुए, और वे दोनों विचित्र आविष्कार संसार के लिए सदा को विचित्र समस्याओं के रूप में ही रह गए।



वि ज्ञा न शा ला में

घररररर !

कार चली जा रही थी। सड़क के दोनों ओर ऊँचे ऊँचे वृक्ष थे और वृक्षों के परली पार उनकी सघनता बढ़ती चली गई थी। उस सघन वन के मध्य से दो बड़े शहरों को मिलाने के लिए यह सड़क निकाली गई थी। मार्ग अच्छा न था, बहुत दिनों से सड़क की मरम्मत भी नहीं हुई थी। जहाँ-तहाँ बहुत-से गड्ढे हो गये थे, किन्तु कार उन सबको उपेक्षणीय समझ कर घररररर करती चली ही जा रही थी। कार में केवल एक ही व्यक्ति बैठा था, कोट, पैंट, हैट, टाई से सुसज्जित। वही कार 'ड्राइव' कर रहा था। सड़क सीधी थी, कार पेड़ पौधे झाड़झंकाड़ सब कुछ पीछे छोड़ती दौड़ती चली जा रही थी कि कार में बैठे हुए व्यक्ति ने देखा कि एक मोटा रस्सा सामने सड़क पर तना है, वह दोनों ओर के दो वृक्षों से बँधा हुआ है। उसने ब्रेक दबाया। कार धीमी हुई, धीमी हुई और रुकी कि पास के वृक्ष से एक व्यक्ति ने निकलकर एक रूमाल उसकी नाक से लगा दिया—केवल क्षण भर के लिए। और उस व्यक्ति (ड्राइवर) ने अनुभव किया कि

उसके हाथों में, उसके पैरों में और उसके सिर में झनझनाहट-सी है, और क्षण भर में वह भी शान्त हो गई। वह देख सकता है, सुन सकता है, बोल सकता है, किन्तु हाथ-पैर नहीं हिला सकता। उसकी आँखें जेब में पड़े 'पिस्टल' पर गड़ी हुई हैं, किन्तु वह लाचार है, अशक्त है। समीप ही दूसरा व्यक्ति खड़ा हुआ बहुत गम्भीर मुद्रा से उसकी ओर देख रहा है। क्षण भर के बाद उसी व्यक्ति ने निस्तब्धता भंग की—

'आप घबरायें नहीं मिस्टर स्विम। मैं कोई डाकू नहीं हूँ, एक वैज्ञानिक हूँ। मेरा नाम जेम्स है।'

'जेम्स ! हाँ, आपका पत्र मुझे मिल गया था।'

और स्विम कठपुतले के समान बैठा है। वह देख रहा है, सुन रहा है, बोल रहा है, किन्तु हिलने-डुलने में असमर्थ है और इसलिए उसे न जाने कैसा लग रहा है। उसे इस विचित्र प्रकार के बन्धन पर जिसमें वह बँधा है, आश्चर्य होता है, और कभी-कभी उसकी दृष्टि जेब में पड़े 'पिस्टल' की ओर बरबस खिंच जाती है।

'हाँ, जब हमने अपने पत्र का कुछ भी उत्तर न पाया तब सोचा कि पहले आपको एक दिन अपनी विज्ञानशाला दिखला दें। हमारी बातों पर विश्वास न होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि न जाने कितने चोर-डाकू इसी प्रकार धनाढ्य व्यक्तियों से रुपया वसूल किया करते हैं।'

इस समय तक एक और व्यक्ति सामने के वृक्षों से उस रस्से को खोल चुका था और आकर जेम्स के समीप ही खड़ा हो गया था।

'हाँ, मुझे आपकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ था और मैं आपकी विज्ञानशाला देखने के लिए बहुत उत्सुक भी हूँ। सब कुछ देख चुकने पर जितना सम्भव होगा, रुपया भी दे दूँगा, किन्तु इस समय तो मैं एक बहुत आवश्यक कार्य से जा रहा हूँ।"

'आशा है आप हमें हमारी इस धृष्टता के लिए क्षमा करेंगे, किन्तु यदि आप सोचेंगे तो समझ जायँगे कि हमारे समय के एक एक क्षण का मूल्य कितना अधिक है। विज्ञानशाला एक गुप्त स्थान पर है। कोई भी व्यक्ति वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता। आपको वहाँ ले जाने का प्रबन्ध करने के लिए हमें बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। हमारा सब परिश्रम व्यर्थ न हो जाय, इसी लिए इस बन्धन का प्रबन्ध किया गया है। अब आपको हमारी इच्छा पर निर्भर करना होगा।'

और इतने में ही जेम्स ने एक बड़ा-सा रूमाल जेब से निकालकर स्विम की आँखों पर बाँध दिया। जेम्स तथा उसके साथी ने उसे वहाँ से उठाकर पिछली सीट पर बिठा दिया। जेम्स उसकी बगल में बैठ गया और उसके साथी ने कार को 'स्टार्ट' कर दिया। वार्तालाप फिर आरम्भ हो गया।

'हमें ज्ञात हुआ था कि आप एक ऐसे धनाढ्य व्यक्ति हैं जो अपने धन का सदुपयोग करते हैं, वैज्ञानिक आविष्कारों को प्रोत्साहन देते हैं। हम लोग अनेक विचित्र आविष्कार कर भी चुके हैं और आज-कल एक ऐसे आविष्कार में लगे हुए हैं जो प्राकृतिक बन्धनों को भी नितान्त निर्बल सिद्ध कर देगा, जो विश्व में हलचल मचा देगा। हमें उसके लिए रुपये की आवश्यकता है। रुपया प्राप्त करने का साधन अत्याचार भी हो सकता था। बहुत-से वैज्ञानिक मृत्यु का भय दिखाकर रुपया प्राप्त करने पर बाध्य हुए भी हैं। किन्तु हम सोचते हैं कि हमें व्यक्तिगत लाभ के लिए रुपये की आवश्यकता नहीं। यदि उचित रीति से धन प्राप्त हो सके तो अनुचित रीति का प्रयोग क्यों किया जाय?'

'मैं आपके विचारों से सहमत हूँ, किन्तु एक बात नहीं समझ

सका। गुप्त स्थान पर विज्ञानशाला बनाने का क्या प्रयोजन ?'

'उस विज्ञानशाला के विषय में भी एक विचित्र कहानी है। उसके विषय में आपको सब कुछ ज्ञात हो जायगा। वह विज्ञानशाला बहुत पुरानी है—शायद सदियों पुरानी। हममें से किसी ने उसे नहीं बनाया। विज्ञानशाला को गुप्त रखने से भी बहुत लाभ हैं। चाहे स्वतन्त्रता कितनी भी हो, किन्तु फिर भी वैज्ञानिकों के लिए प्रतिबन्ध होते ही हैं। उनके आविष्कारों में बाधा पड़ती है। इसके अतिरिक्त अनेक उत्सुक सज्जनों का धावा भी होता रहता है, जिससे बहुत-सा समय नष्ट हो जाता है।'

कुछ देर स्विम निस्तब्ध बैठा रहा, मानो कुछ सोचने का प्रयत्न कर रहा हो। फिर अचानक सजग होकर उसने कहा 'मिस्टर जेम्स! आपका नाम कुछ परिचित सा जान पड़ता है। शायद छै सात महीने हुए, मैंने समाचार-पत्र में पढ़ा था कि एक वैज्ञानिक ने समुद्र में कूद कर आत्महत्या कर ली है और उसी रात को उसकी विज्ञानशाला में आग लग गई। ठीक मुझे याद नहीं रहा, किन्तु शायद उसका नाम भी जेम्स ही था और इसी नाम के वैज्ञानिक के आविष्कारों के विषय में उससे पहले भी मैंने बहुत कुछ पढ़ा था।'

'हाँ मैं वही जेम्स हूँ। वह भी एक बहुत विचित्र घटना हो गई थी। अपने जाल में मैं स्वयं फँस गया था। मैंने एक प्रकार के कीटाणु तैयार किये थे और हाथ में शीशी टूट जाने के कारण मैं ही उनका शिकार हो गया, क्योंकि कांच के एक टुकड़े से मेरा हाथ कट गया। उसके कीटाणुओं के प्रभाव से मैं शायद पागल हो गया था। उसी अवस्था में मैं समुद्र में कूद गया, किन्तु डूबा नहीं, बचा लिया गया। जब मैं होश में लाया गया था तब मुझे मिस्टर राबर्ट ने बताया था कि वे एक छोटे-से 'स्टीमर' में बैठे जा रहे थे कि उन्होंने मुझे लकड़ी

के एक कुन्दे से लिपटा हुआ लहर के थपेड़ों से आगे बढ़ता देखा। उनके कहने से एक मल्लाह समुद्र में कूद पड़ा और मुझे निकाल लाया। मैं बेहोश था, वे मुझे अपनी विज्ञानशाला में ले गये और वहाँ मुझे अच्छा कर लिया। मुझे वहीं ज्ञात हो गया था कि मेरी विज्ञानशाला मेरे पीछे जल कर भस्म होगई। इस लिए उसके बाद मैं उन्हीं के साथ कार्य करने लगा। उन्हें एक सहायक व्यक्ति की आवश्यकता भी थी और उनका मेरे ऊपर अधिकार भी था। उन्होंने मेरे प्राणों की रक्षा की थी।'

'ये मिस्टर राबर्ट कौन हैं?...'

'मेरे आग्रह करने पर उन्होंने अपने विषय में भी एक लम्बी कहानी बतलाई थी। वे रसायन शास्त्र के एक विशेषज्ञ हैं। एक दिन एक जङ्गल में घूमते हुए, वृक्षों के झुरमुट में, पृथ्वी में एक बड़ी सुरङ्ग देख कर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। वे सुरङ्ग के अन्दर चले गये। सुरङ्ग काफ़ी लम्बी थी। अन्दर अँधेरा था, टार्च उनके पास थी। टार्च के प्रकाश की सहायता से वे आगे बढ़ते चले गये, बढ़ते चले गये और थोड़ी ही देर में एक कमरे में पहुँच गये। कमरे में अन्धकार था, टार्च के प्रकाश में उन्होंने देखा कि बहुत-से विचित्र यन्त्र वहाँ टेबिल पर लगे हुए हैं, इधर-उधर बहुत-सी बड़ी बड़ी मोमबत्तियाँ लगी हुई हैं, जिनमें कुछ पूरी और कुछ-आधी जली हुईं थीं। राबर्ट ने सब मोमबत्तियों को जला दिया, कमरे में काफ़ी प्रकाश होगया। सब वस्तुओं पर गर्द जमी हुई थी। उसे देखने से प्रतीत होता था कि पचासों वर्ष से वहाँ कोई गया नहीं था। प्रकाश में देखने से ज्ञात हुआ कि कमरा बहुत बड़ा है। वे आगे बढ़े ही थे कि सामने के कोने में एक विचित्र वस्तु देखी। जंज़ीर के सहारे काँच का एक बहुत बड़ा यन्त्र छत से लटका हुआ था और उसके नीचे एक व्यक्ति चित लेटा था। एक

हाथ में 'पिस्टल' और दूसरे में टार्च लेकर वे आगे बढ़े। नीचे लेटा हुआ व्यक्ति हिल-डुल नहीं रहा था। समीप जाकर ध्यानपूर्वक देखने से ज्ञात हुआ कि चित लेटा हुआ व्यक्ति ज़िन्दा नहीं है, मुर्दा है, उसका मुंह पूरा खुला हुआ है, आँखें बन्द हैं। उसके मुँह के लगभग फ़ुट भर ऊपर एक बहुत ही पतली नली थी, जो ऊपर लटके हुए उस काँच के यन्त्र के पेंदे में लगी हुई थी। समीप ही टेबिल पर दो मोमबत्तियाँ और लगी थीं। राबर्ट ने उन्हें भी जला दिया और फिर ध्यानपूर्वक यन्त्रों को देखने लगे। वह काँच का बड़ा यन्त्र आधा किसी लाल रङ्ग के तरल पदार्थ से भरा हुआ था। उस यन्त्र में और भी बहुत-सी काँच की नलियाँ लगी हुई थीं, जिनका सम्बन्ध इधर-उधर रक्खे हुए अन्य यन्त्रों से था। वे उसके विषय में विचार कर ही रहे थे कि उन्होंने देखा कि उस नली से उक्त तरल पदार्थ की एक बूंद उस मुर्दे के मुँह में गिरी। समस्या और भी जटिल प्रतीत होने लगी। वे उसी कोने में लगे हुए दूसरे यन्त्रों को देख रहे थे कि अचानक उनका हाथ एक 'हेंडिल' पर पड़ा और कड़ाक-कड़ाक करके काँच के सब यन्त्र टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गये। हतबुद्धि से वे कुछ देर खड़े रहे और फिर उस लाश के समीप आये। लाश उस तरल पदार्थ में नहा गई थी। यन्त्र इतने 'फ़ोर्स' से टूटे थे कि टुकड़े छिटक कर इधर-उधर फैल गये थे। वे लाश का निरीक्षण करने लगे, सिर हाथ और पैर बिलकुल ठण्डे थे। उसके वक्षस्थल पर हाथ रक्खा तब वे सन्न रह गये। वक्षस्थल में काफ़ी गरमी थी। धीमी, बहुत ही धीमी-सी दिल की धड़कन भी प्रतीत हुई। 'तो क्या मैं आज हत्या के पाप का भागी बना', उनके हृदय ने शून्य से यह प्रश्न किया। कुछ देर तक वे निश्चल बैठे जलती हुई मोमबत्तियों को आँख फाड़-फाड़ कर देखते रहे, मानो उनकी लौ में कुछ पढ़ने का प्रयत्न कर रहे हों। फिर

'टेबिल' पर पड़ी वस्तुओं का निरीक्षण करने लगे। वहाँ उन्हें एक 'डायरी' मिली। उसे पढ़ने से ज्ञात हुआ कि वह एक वैज्ञानिक था। उसे अपने सिद्धान्तों पर और इसी लिए अपनी सफलता पर दृढ़ विश्वास था, इसी लिए जीवन तथा मृत्यु के प्रश्न पर आविष्कार करने के लिए उसने स्वयं अपने प्राणों की बाज़ी लगाई थी। राबर्ट को प्रतीत हुआ मानो विज्ञानशाला का एक एक यन्त्र रो-रोकर मूक भाषा में कह रहा है कि 'विश्व के सबसे महान् आविष्कारक की अनोखी सफलता को आज तूने मिट्टी में मिला दिया! विश्व के सबसे बड़े वैज्ञानिक की आज तूने हत्या की'। राबर्ट के हृदय ने मूक-भाषा में ही उत्तर दिया कि 'विश्व मृत्यु जैसे शक्तिशाली शत्रु पर सदा के लिए विजय प्राप्त करना चाहता था और सफलता उसके चरणों को चूम रही थी। निःसन्देह मैं हत्यारा हूँ। और फिर उस विज्ञानशाला के एक-एक कक्ष से प्रतिध्वनि हुई 'हत्यारा! हत्यारा!' .... और एक-एक मोमबत्ती की लौ ने भी मानो उसकी ओर संकेत करके कहा, 'हत्यारा!...........' 'हत्यारा!... ......'

वहाँ से राबर्ट भारी दिल लिए हुए लौटे और फिर अपनी विज्ञान शाला का सब सामान भी वहीं पहुँचा दिया और सम्पूर्ण विश्व से सम्बन्ध-विच्छेद कर वहीं आविष्कारों में रत हो गए।

इतने में ही कार ने तीन-चार चक्कर काटे और थोड़ी देर के बाद वह रुक गया। जेम्स तथा उसका साथी स्विम को विज्ञानशाला में ले गए। वहाँ उसकी आँखों की पट्टी खोल दी गई। उन्होंने उसे कुछ रासायनिक पदार्थ सुँघाये जिससे वह अन्तरिक बन्धन से भी मुक्त हो गया। राबर्ट उस समय विज्ञानशाला में ही था। उसने स्विम का स्वागत किया।

स्विम ने देखा कि विज्ञानशाला में एक बहुत बड़ा 'डाइनमो' लगा

हुआ है और विद्युत का प्रकाश चारों ओर फैला हुआ है। विज्ञान-शाला में चारों ओर मेज़ों पर बहुत-से यंत्र लगे हुए हैं और एक तरफ़ लोहे की बड़ी बड़ी मशीनें। वह इन सब यन्त्रों तथा मशीनों को देखता हुआ इधर-उधर घूम रहा था कि राबर्ट ने हँस कर कहा—'मिस्टर स्विम को वह आविष्कार तो दिखा दो जिसे दिखाने के लिए इन्हें मुल्ज़िम की भाँति पकड़ लाए हो।"

जेम्स ने कहा हाँ देखिए, मिस्टर, स्विम हमने एक प्रकार की नवीन किरणों की खोज की है, जिनकी सहायता से मनुष्य ग़ायब हो सकता है। उस अवस्था में वह सबको देख सकता है किन्तु उसे कोई नहीं देख सकता। उन नवीन किरणों का सिद्धान्त भी 'एक्स-रेज़' के ही समान है। अन्तर केवल इतना ही है कि 'एक्स-रेज़' मनुष्य के केवल मांस में प्रविष्ट हो सकती हैं, किन्तु ये नवीन किरणें जिनका नाम हमने आविष्कारक के नाम पर राबर्टस-रेज़ रक्खा है, हड्डियों में से भी गुजर सकती है। मनुष्य किस प्रकार ग़ायब होता है इसे समझने के लिए आपको देखने का सिद्धान्त समझना होगा। जब किसी वस्तु पर प्रकाश पड़ता है तब वह उस वस्तु से लौटकर नेत्रों में प्रविष्ट होता है और तब हमें उस वस्तु का बोध होता है। यदि जितना प्रकाश वस्तु पर पड़े उस सम्पूर्ण का शोषण वह वस्तु कर ले तो वह काली दिखाई देती है। प्रकाश में विभिन्न रङ्ग होते हैं, सित ज्योति में सात। जब कोई वस्तु अन्य सब रङ्गों का शोषण कर लेती है और केवल एक ही रङ्ग लौटाती है तब वह उसी रङ्ग की दिखाई देती है। इस प्रकार यदि जितना प्रकाश किसी वस्तु पर पड़े वह सब उसमें से गुज़र जाय, न वह लौटे और न उसका शोषण ही हो, तो हमें वह वस्तु दिखाई नहीं देगी। यदि बहुत पतले काँच की एक साफ़ दीवार हो तो वह हमें दूर से दिखाई नहीं देती। समीप से उसका बोध इसलिए होता

है कि जितना प्रकाश उस पर पड़ता है वह सब उसमें से गुज़र नहीं जाता उसका कुछ अंश उसकी ऊपरी सतह से लौट आता है।'

इसके पश्चात् जेम्स स्विम को एक बहुत बड़े यंत्र के समीप ले गया। उसने एक प्रकार की सफ़ेद चादर के समान किसी वस्तु से अपने शरीर को ढँक लिया। वह यंत्र के सामने खड़ा हो गया। राबर्ट ने एक बटन दबाया, जिससे डाइनेमो के, जिसका केवल एक पहिया घूम रहा था और तीन स्थिर थे, तीनों स्थिर पहिये भी घूमने लगे। उसने दो बटन और दबाए, और यंत्र में से एक प्रकार का उज्ज्वल प्रकाश निकलकर जेम्स के शरीर पर पड़ने लगा। पहले उसका शरीर चमकता-साप्रतीत हुआ और फिर वह शीशे के समान पारदर्शक हो गया। थोड़ी देर के बाद राबर्ट ने एक बटन और दबाया और जेम्स दृष्टि से ओझल हो गया। स्विम कठपुतले के समान खड़ा हुआ सब कुछ आश्चर्य के साथ देख रहा था। कुछ काल के पश्चात् राबर्ट ने यंत्रों को रोक दिया और जेम्स फिर धीरे धीरे दृष्टिगोचर होने लगा, मानों वायु में से कोई वस्तु उत्पन्न हो रही हो।

'देखिए मिस्टर स्विम अब तो आपको पत्र में लिखी हुई हमारी सब बातों पर बिश्वास हो गया होगा?' जेम्स ने मुस्कराते हुए कहा।

'हाँ, निस्सन्देह इतनी आशा मुझे आप लोगों से नहीं थी। रुपये क्या 'चेक' मैं यहाँ लिख देता हूँ, चेक-बुक मेरे पास है।' स्विम ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

स्विम ने चेक लिख दिया। 'हमारे प्रत्येक कार्य की सूचना आपको मिलती रहेगी।' राबर्ट ने बिदा करते हुए स्विम से कहा। स्विम और जेम्स चल दिये और कुछ ही काल के पश्चात् कार दोनों को लिये हुये उस सघन बन में से होकर गुज़रने वाली सड़क पर घररररर करता दौड़ा चला जा रहा था।

कि स के लि ए ?

'लिली, मैंने सुना है कि जेम्स अभी तक जीवित है। वह समुद्र में कूद गया था; किन्तु भगवान ने उसके प्राणों की रक्षा की, वह बचा लिया गया'—विलियम ने चाय का प्याला मेज़ पर रखते हुए कहा।

'जेम्स अभी तक जीवित है?' लिली सहसा चौंकी। उसने आश्चर्य के साथ प्रश्न-सूचक दृष्टि से विलियम की ओर देखा। 'मैंने तो सुना था कि एक प्रकार के विचित्र कीटाणुओं के प्रभाव से उसका मस्तिष्क विकृत हो गया था।' उसके नेत्रों में प्रसन्नतासूचक एक विशेष प्रकार की चमक थी।

'हाँ, उसी दशा में वह समुद्र में कूदा था; किन्तु अब वह ठीक हो गया है। आज कल वह एक और वैज्ञानिक के साथ कार्य कर रहा है।' विलियम ने उत्तर दिया 'लिली, क्या तुमने कभी जेम्सको देखा है?'

'हाँ…आँ कई बार………'

लिलीकी बात समाप्त होने भी न पाई थी कि डाक से एक पत्र

आया। विलियम ने उसे मन-ही-मन पढ़ा और फिर ज़ोर से पढ़कर लिलीको सुनाया। पत्र जेम्स का था। उसमें जेम्स ने अपने बचा लिये जाने के विषय में लिखा था। इतने दिनों तक विलियम से न मिल सकने के लिए उससे क्षमा-याचना की थी, अपने यहाँ मिलने आने के लिए उससे प्रार्थना की थी और लिखा था कि लिली को भी अपने साथ अवश्य लाना।

विलियम को जेम्स का पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई; किन्तु जेम्स का लिली को साथ लाने का आग्रह उसे अरुचिकर-सा लगा।

'कल जेम्स से मिलने चलोगी, लिली!' विलियम ने कुछ अन्यमनस्क होकर प्रश्न किया।

'क्या हानि है? ऐसे महान व्यक्तियों से मिलने का अवसर बड़े सौभाग्य से ही प्राप्त होता है।' लिलीने उत्तर दिया 'मैंने तो स्वप्न में भी आशा नहीं की थी कि आपका आज का चाय का निमन्त्रण इतना महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।'

'हूँ', और इसके पश्चात् विलियम चुप था। उसकी 'हूँ' में कुछ रुखाई-सी थी।

'देखो विलियम,' लिली कहती गई 'जेम्स ने अपने असाधारण अध्यवसाय तथा अपनी अलौकिक प्रतिभा के बल से वैज्ञानिक क्षेत्र में अपने लिए एक ऐसा स्थान बना लिया है कि युग-युग तक उसका नाम पृथिवी पर जीवित रहेगा।'

विलियम निर्निमेष दृष्टि से शून्य में देख रहा था, मानो उसने लिली की बात सुनकर भी नहीं सुनी। कभी-कभी उसकी दृष्टि लिली के अरुण पाटल की अर्धविकसित कलिका के समान सुन्दर चेहरे की ओर बरबस खिंच जाती थी। वह सोच रहा था 'मेरे पास अतुल सम्पत्ति है, किन्तु उसमें मेरे नाम को युग-युग तक तो क्या दो दिन जीवित रखने

की भी शक्ति नहीं है। इसके अर्थ हुए, जेम्स मुझसे कहीं अधिक महान है। उँह! नाम जीवित रहने ही से क्या होता है? कितने वैज्ञानिक हुए, जिन्होंने उससे भी बड़े-बड़े आविष्कार किये…और… और आज…तो वह भी मेरा आभारी है, मेरा आभारी। प्रयोग के लिए धन की आवश्यकता पड़ी, तो मेरे आगे हाथ फैलाना पड़ा। मैंने उसे प्रयोगों के लिए रुपया दिया और आज वह महान्…महान्?'—इसके आगे सोचना विलियम के लिए असम्भव हो गया। इतने विचार आ-आकर उसके मस्तिष्क में टकराने लगे कि वह शून्य हो गया। आज वह भूल गया है कि वह स्वयं जेम्स को कितना यशस्वी, कितना महान् मानता है; कितनी बार उसने अपने को जेम्स का मित्र होने के लिए गौरवान्वित माना है, कितनी बार उसने अपने मित्रों से कहा है कि उसे जेम्स के साथ घंटों बैठकर वार्तालाप करने का अवसर मिला है। जेम्स उसका मित्र है; उसे अधिकार है कि वह एक विख्यात वैज्ञानिक की मित्रता पर गर्व करे; उसे अधिकार है कि वह जेम्स को जितना महान् वह है, उससे भी दस गुना अधिक महान् माने और लोगों में उसकी महानताकी चर्चा करे। किन्तु लिली? जेम्स को महान् माने! और…और उसी के सम्मुख जेम्स की महानता की चर्चा करे! जेम्स की महानता की चर्चा विलियम के लिए सदा एक प्रिय वस्तु रही है। किन्तु लिली! स्वर्गीय सौन्दर्य की साकार प्रतिमा-जैसी यह सुनयना युवती और जेम्स की महानता! विलियम की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

चाय समाप्त होनेके कुछ देर बाद लिली जाने के लिए उठी। विलियम की दृष्टि शून्य में से कुछ खोज निकालने का प्रयत्न कर रही थी। लिली कुछ देर तक खड़ी रही कि विलियम कुछ कहे, किन्तु वह चुप था। उसी ने फिर मेज़ पर झुककर कहा—'तो फिर कल जेम्स से

मिलने चलोगे ?'

'उसका पत्र आया है, चले चलेंगे।' मानो विलियम निद्रा से जागा।

लिली कुछ और सुनने की प्रतीक्षा में थी; किन्तु विलियम इसके बाद फिर चुप था। उसी ने फिर निस्तब्धता भंग···की—'तो तुम मुझे मेरे घर से ले लोगे ?'

'हाँ, मैं ही तुम्हारे यहाँ आ जाऊँगा।'

'समय !'

'समय ! शाम के चार बजे।'

लिली चली गई।

× × ×

जब विलियम और लिली जेम्स के यहाँ पहुँचे, तो वह विज्ञान-शाला में था। जेम्स के सामने एक बहुत बड़ी मेज़ थी। उस पर एक मानव-शव रखा हुआ था। समीप ही दो मरे हुए मेंढक और चीर-फाड़ के यन्त्र रखे थे। जेम्स ने दोनों नवागन्तुकों का स्वागत किया।

'क्या आजकल बॉयलाजी सीख रहे हो ?'—विलियम ने मुसकराते हुए प्रश्न किया।

'मानव-शरीर-विज्ञान पर एक आविष्कार करना है, उसी के लिए आजकल प्रयोग कर रहा हूँ।'

'आप सदा आविष्कारों में ही लगे रहते हैं, कभी मस्तिष्क को भी तो विश्राम मिलना चाहिए।' लिली ने श्रद्धा तथा स्नेह के स्वर में कहा।

विलियम की दृष्टि लिली की ओर उठी। फिर उसने एक बार जेम्स की ओर देखा और एक हलकी-सी 'हूँ' उसके मुँह से निकल गई। उसके अधरों की मुसकान रुखाई-पूर्ण गम्भीरता में परिवर्तित हो गई।

'कार्य ही हमारे मस्तिष्क के लिए विश्राम है।' जेम्स ने लिली की ओर देखते हुए उत्तर दिया। 'यदि दो-दिन भी हम लोगों को खाली रहना पड़े, तो जीवन दूभर हो जाय। फिर एकाकी जीवन ठहरा। एक ही कार्य में मस्तिष्क को लगाये रहना पड़ता है।'

'एकाकीपन? एकाकीपन तो आपकी इच्छामात्र से दूर हो सकता है। क्या आपने कभी उसे दूर करनेकी इच्छा की?' लिली के स्वर में करुणा थी। 'आप जैसे महान् व्यक्तियों को कमी किस बात की है?'

'केवल अपनी इच्छा से क्या होता है लिली? अपनी इच्छा के अतिरिक्त और भी तो बहुत-कुछ है। तुम यह सब-कुछ नहीं जानतीं। वैज्ञानिक का जीवन तपश्चर्या का जीवन है। उसका एक पैर सदा जीवन की परिधि के उस पार रहता है। तुम यह सब-कुछ सुन कर क्या करोगी लिली, ये सब बेकार की बातें हैं?' जेम्स ने लिली की ओर देखते हुए कहा।

उसके हृदय में उठे निराशा तथा क्षोभ के भाव उसके सुन्दर सुडौल चेहरे पर प्रतिविम्बित थे। उसने अपने अन्दर के वैज्ञानिक को सचेत करने का प्रयत्न किया। ध्वनि में दृढ़ता लाते हुए उसने कहा—'लिली, मनुष्य परिमित समय के लिए संसार में जन्म लेता है। उसे अपने-आप को उसी के हित के लिए खपा देना चाहिए। उसी पथ पर वैज्ञानिक अग्रसर होता है। बन्धन? मोह? यह सब क्यों? इनकी इच्छा भी क्यों?' लिली चुप थी।

'तुम नहीं जानतीं लिली! जब व्यक्तिगत मोह मनुष्य को हो जाता है, तो वह सार्वजनिक नहीं हो सकता, क्योंकि व्यक्तिगत के लिए उसे जीवनार्थ प्रयत्नशील होना होता है। जिसे सब का होना है, उसे प्राणों का मोह भी क्यों? कौन जाने, जिनके लिए वह जीता है; उन्हें कब उसके प्राणों की आवश्यकता हो जाय!' वह कहता गया और

उसके हृदय का मानव उसके हृदय के देवता से अधिक प्रब होता जा रहा था।

'किन्तु लिली, मनुष्य फिर भी मनुष्य है। जीने के लिए एक आधार की आवश्यकता होती है। शून्य के सहारे मनुष्य कब तक जी सकता है ? अनन्त कहो या शून्य, मनुष्य के लिए तो दोनों एक ही हैं। सहारा तो ऐसा चाहिए, जो उसकी पहुँच, उसकी पकड़ के अन्दर की वस्तु हो।'

विलियम अब तक चुप बैठा छत की ओर देख रहा था। कभी उसकी दृष्टि लिली की ओर और कभी जेम्स की ओर खिंच जाती थी। इतने ही में टेबिल पर रखे टेलीफोन की घंटी बज उठी। जेम्स ने उसे रिसीव किया। फोन पर विलियम के नौकर ने सूचना दी कि कोई सज्जन मिलने आये हैं। कार्य बहुत आवश्यक है, इसी समय विलियम आ जायँ।

विलियम एक ठंडी साँस लेकर कुर्सी से खड़ा हो गया। विलियम ने जेम्स की ओर देखा, जेम्स ने लिली की ओर, और फिर दोनों ने विलियम की ओर।

'लिली, तुम रुकना चाहो, तो रुक जाओ; फिर आ जाना।' विलियम ने कहा।

'नहीं, मैं अभी चलूँगी।' लिली ने एक बार फिर जेम्स की ओर देख कर उत्तर दिया।

'देखो, अवसर मिले, तो कभी आ जाया करना।' जेम्स ने लिली से कहा। फिर वह सहसा सतर्क हुआ "हाँ, मिस्टर विलियम, आज तो कुछ भी बातें न हो सकीं, फिर शीघ्र ही मिलने का प्रयत्न करना।'

और फिर वे दोनों वहाँ से चले आये।

× × ×

जब विलियम लिली के यहाँ पहुँचा, तो उसे नौकर से ज्ञात हुआ कि वह जेम्स के यहाँ गई है।

'जेम्सने उन्हें बुलवाया था क्या?' विलियम ने कुछ रुक कर पूछा।

'कल उन्होंने मिस्टर जेम्स को चाय के लिए निमन्त्रित किया था, तभी वे उन्हें आने के लिए कह गये थे।'

'हूँ', विलियम ने धीरे से कहा। कुछ देर वह वहाँ खड़ा रहा और फिर अपने घर वापस आ गया। मेज़ पर से उठा कर वह अख़बार पढ़ने का प्रयत्न करने लगा। एक-एक पन्ना करके बिना कुछ पढ़े ही सारा अख़बार उलट गया और फिर अचानक उसकी दृष्टि एक स्थल पर अटकी। वह पढ़ने लगा :—

'आवश्यकता है

एक नवयुवक की, जो एक महान् वैज्ञानिक आविष्कार के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा सके।

वैज्ञानिक जगत में बहुत दिनोंसे चाँद में जानेका प्रयत्न हो रहा है। एक ऐसा राकेट तैयार करने में वैज्ञानिकों को सफलता प्राप्त हो गई है, जिसमें प्रत्येक पाँच मिनट के पश्चात विस्फोट होने से उसकी गति ऊपर की ओर तीव्रतर होती जाय। उस में बैठ कर जाने के लिए एक ऐसे साहसी नवयुवक की आवश्यकता है, जिसने उच्च वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त की हो।'

नीचे पता लिखा हुआ था। कुछ देर वह आँखें बन्द करके सोचता रहा। उसके कानों में लिली के शब्द गूँज रहे थे '...जेम्स एक महान् व्यक्ति है। उसने असाधारण अध्यवसाय से तथा अपनी अलौकिक प्रतिभा के बल से वैज्ञानिक क्षेत्र में अपने लिये एक ऐसा स्थान

बना लिया है कि युग-युग तक उसका नाम पृथिवी-तल पर अमर रहेगा।'

लिली!...जेम्स!...महानता!...अमरत्व! ये शब्द उसके नेत्रों के सम्मुख नाच रहे थे। उसे प्रत्येक वस्तु से यही ध्वनि आती प्रतीत होती थी—जेम्स महान् है, वह अमर है...लिली! लिली! और लिली का चित्र उसके अन्दर स्पष्टतर होता जा रहा था।

कुछ ही काल पश्चात् उसने टेलीफोन का चोंगा उठाया। बात-चीत बहुत देर तक करता रहा। उसका अन्तिम वाक्य था—'आज ही सायंकाल को प्रस्थान कर रहा हूँ।'

इसके बाद उसने चोंगा रख दिया। नौकर से सामान ठीक करने के लिए कहा और स्वयं पत्र लिखने बैठा। सायंकाल को जब सब-कुछ ठीक हो गया, तो वह लिली के घर की ओर चल दिया। उसके घर के पास जाकर वह ठिठका। कुछ देर तक वहीं धीरे-धीरे घूमता रहा। घूमते-घूमते वह घर के द्वार तक पहुँच गया। सहसा वहाँ रुका, खड़ा-खड़ा कुछ देर तक सोचता रहा और फिर धीरे-धीरे लौटा। सड़क के दूसरे किनारे पर लगी रेलिंग के समीप आकर उसके सहारे खड़ा हो गया। सामने सूर्य अस्त हो रहा था। वह दहकते हुए अंगारे के समान लाल गोला आधा क्षितिज के नीचे चला गया था। उसके ऊपर बादल के दो-तीन छोटे-छोटे टुकड़े थे, जो डूबते हुए सूरज का प्रकाश पड़ने से रक्तिम हो गये थे। कुछ देर तक वह निस्तब्ध खड़ा यह दृश्य देखता रहा। फिर उसने एक ठंढी साँस ली, और वहाँ से चल चल दिया। एक बार उसने पीछे फिर कर लिली के घर की ओर देखा। बिना लिली से मिले ही घर वापस आ गया, और उसी सायंकाल को अपनी यात्रा आरम्भ कर दी।

सारी रात जेम्स ने चारपाई पर जाग कर काटी और प्रातःकाल चार बजे चारपाई छोड़ कर वह घूमने लगा। घूमते-घूमते वह अपने सूट-केस के समीप आया और उसमें से लिली का चित्र निकाला। चित्र शीशी में जड़ा था। कुछ देर तक वह उसे देखता रहा और फिर वह उस कमरे में आया, जहाँ उसके प्रयोगों के यन्त्र लगे थे। बिजली का बल्ब उसने जलाया। टेबिल पर फैले यन्त्रों पर उसकी दृष्टि पड़ी। निर्निमेष दृष्टि से उन्हें कुछ देर देखा और फिर प्रयोगशाला ही में घूमने लगा। उसकी चाल तीव्रतर होती गई। सहसा वह दीवार से लगे एक चित्र के सामने रुका। चित्र विलियम का था। उसे वह कुछ देर तक देखता रहा। फिर उसने लिली का चित्र, जो उसके हाथ में था, एक बार फिर देखा। वह उसे देख कर झुँझला-सा उठा। चित्र उसने ज़मीन पर पटक दिया। 'कड़ाक' की आवाज़ के साथ शीशा चूर-चूर हो गया।

'नही, यह कभी नहीं हो सकता—कभी हो ही नहीं सकता।' उसके होंठ फड़के और वह सोचने लगा—'मैंने विज्ञान के लिए अपने जीवन को अर्पित किया है। उसके लिए आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की है। और फिर विलियम? विलियम लिली को प्यार करता है।' वह तेज़ी के साथ घूम रहा था और सोचता जा रहा था—'उसने स्वयं मुझसे अपने प्रेम की चर्चा की थी। मैं अपने इतने पुराने तथा घनिष्ठ मित्र के प्रति विश्वासघात नहीं कर सकता, नहीं करूँगा।' उसने एक बार दोनों हाथों से अपने बाल नोंच लिये। वह आकर धम से एक कोच पर बैठ गया और सोचने लगा—'किन्तु लिली? लिली मुझ से प्रेम करती है। वह कितनी सुन्दर है! उसे आशा है कि मैं उससे विवाह कर लूँगा। आशा? क्या एक नारी की आशा पूर्ण करने के लिए मैं सैकड़ों-हज़ारों को, जिनकी निगाहें मुझ पर,

मेरे इस नवीन आविष्कार पर गड़ी हैं, निराश कर दूँगा ? विवाह होने पर मैं वह आविष्कार करने का अधिकारी नहीं रह जाऊँगा। और फिर विलियम ? नहीं, नहीं,...' उसके मस्तिष्क में तूफान उठ रहा था। प्रबल लहरें उसके दृढ़ संकल्प को झकझोर रही थीं ;—'किन्तु मैंने लिली से वादा जो किया है। मैं उससे किस प्रकार इनकार कर सकूँगा ?' वह सहसा उठा, अपने नौकर को आवाज़ दी और स्वयं उसके सोने के कमरे में पहुँच गया। 'देखो, आज ही मैं अपनी उस गुप्त स्थान वाली विज्ञानशाला में चला जाऊँगा। हमारे नये प्रयोग का सब सामान वहाँ पहुँचा देना।'—उसने नौकर को जगा कर कहा—'हाँ! और देखो, इस बात की सूचना किसी को न देना।' इसके बाद वह प्रयोगशाला में आकर सामान ठीक करने लगा।

× × ×

विलियम और जेम्स को अचानक गायब हुए बहुत दिन हो गये थे। लिली कोच पर बैठी सामने दीवार पर टँगी दो तसवीरों को देख रही थी कि डाक से दो पत्र आये। उसने एक लिफाफा खोला। उसमें से एक पत्र तथा एक और लिफाफा निकला। पत्र विलियम के एक नौकर का था। उसमें लिखा था—

"मान्यवर,

मिस्टर विलियम ने यहाँ से जाते समय मुझे यह लिफाफा दिया था। आप ने अख़बारों में पढ़ा होगा कि एक 'राकेट' चाँद में भेजने का प्रयत्न हो रहा था। राकेट में बैठ कर जाने वाले व्यक्ति के जीवित लौटने की आशा कम थी, इस लिए जब कोई उसके लिए उद्यत न हुआ, तो उन्होंने अपने प्राणों की बाज़ी लगाई। अपना नाम उन्होंने गुप्त रखने का प्रबन्ध किया था। मुझे भी इसकी सूचना किसी को न देने की ताकीद कर गये थे। उन्हों ने कहा था कि यदि मैं जीवित

लौट आया, तो यह लिफाफा स्वयं ले लूँगा, और यदि मैं वहीं समाप्त हो गया, तो मेरी मृत्यु का समाचार मिलते ही इसे मिस लिली के पास भेज देना। आज मैंने अखबार में पढ़ा है कि जो राकेट चाँद को फेंका गया था, फट कर पृथिवी पर आ गिरा है, और इस लिए यह लिफाफा आप की सेवा में भेज रहा हूँ।"

लिली ने काँपते हुए हाथों से वह लिफाफा खोला। पत्र इस प्रकार था—

"मेरी लीली, मानव-हृदय कितना विचित्र है कि जिस वस्तु के विषय में वह भली प्रकार जानता है कि वह उसकी है नहीं, उसे भी अपनी कहने के लिए प्रलोभित होता है, उसे अपनी कहता है। यदि इस सम्बोधन से तुम्हें कुछ ठेस पहुँची हो, तो उसके लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूँ, क्षमा कर देना मेरी रानी!

यह पत्र तुम्हें मेरी मृत्यु के बाद मिलेगा और इस लिए तुम्हें कष्ट देने के लिए जीवन में अन्तिम बार इस पत्र द्वारा तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हूँ। सहानुभूति के साथ इसे पढ़ लेना। मैं सोचता हूँ कि मृत्यु के पश्चात् तो सब-कुछ समाप्त हो जाना चाहिए; किन्तु मानव-हृदय निर्बल है लिली, वह अपनी आकांक्षाओं की प्रतिध्वनि किसी हृदय में छोड़ जाना चाहता है।

मैं भली प्रकार जानता हूँ कि राकेट में बैठ कर जाना निन्यानवे प्रतिशत मृत्यु से आलिंगन करने के लिए प्रस्थान करना है, इस लिए जाने से पूर्व मैं तुम्हें यह बता देने का प्रलोभन नहीं त्याग सकता कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मै जानता हूँ, लिली, कि तुम जेम्स को प्यार करती हो। जेम्स में और मुझ में आकाश-पाताल का अन्तर है। वह एक महान् व्यक्ति है, अमर ख्याति का पुरुष है, और मैं चाहता हूँ कि तुम सुख से रहो, क्योंकि तुम्हारा सुख ही मेरा सुख है।

इस पत्र के साथ एक वसीयतनामा है, मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति तुम्हारे नाम किये जा रहा हूँ। तुम्हारे अतिरिक्त मेरा और है ही कौन, जिसे मैं यह सौंप सकता? हो सकता है, तुम्हारे लिए यह भार हो, क्योंकि मैं जानता हूँ, तुम सहृदय हो; किन्तु क्या एक ऐसे व्यक्ति की प्रार्थना पर, जो सदा के लिए इस दुनिया से नाता-बन्धन तोड़े जा रहा है, तुम इतना भार वहन न कर सकोगी? लिली, मैं जाने से पूर्व तुम्हें अन्तिम बार देख लेना चाहता था। कुछ विशेष कारणों से मैं ऐसा न कर सका और यह आकांक्षा सदा के लिए मैं अपने साथ ही लिये जा रहा हूँ!

नहीं जानता, किन बातों के लिए, किन्तु मैं तुम्हारे सम्मुख क्षमा-प्रार्थी हूँ, अन्तिम बार! समय अधिक नहीं रह गया है। अच्छा अब विदा—चिरकाल के लिए विदा।

तुम्हारा—

विलियम।"

लिली कुछ काल के लिए किंकर्तव्यविमूढ़-सी पत्र हाथ में लिये निस्तब्ध बैठी रही, और जब उसने एक गहरी साँस लेकर पत्र मेज़ पर डाली, तो उसकी दृष्टि मेज पर पड़े एक दूसरे लिफाफे पर पड़ी। उसने उसे उठा कर खोला, पढ़ा। उसमें लिखा था—

'प्रिय लिली,

मेरे अचानक गायब हो जाने पर तुम्हें आश्चर्य हुआ होगा। परिस्थिति ने मुझे ऐसा करने के लिए बाध्य किया। शायद तुम सोचती होगी, लिली, कि तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम केवल दिखावटी था। क्या तुम इस बात पर विश्वास कर सकोगी कि मैंने अपने जीवन में केवल एक ही प्राणी को प्यार किया है—और वह तुम हो।

उस दिन सायंकाल मैंने तुमसे कहा था कि हम दोनों विवाह-

सूत्र में बँध जायँगे, और एक समय वह आया, जब मैं अपने को तुमसे बरबस तोड़ कर इस स्थान पर चला आया। मैं नहीं जानता लिली, किस दिन की घटना को मैं अपनी दुर्बलता मानूँ। हाँ, जो स्थिति मेरी थी, उसे मैं तुम्हारे सम्मुख एक बार स्पष्ट अवश्य कर देना चाहता हूँ, जिससे तुम समझ जाओ कि मै तुम्हारे प्रति कहाँ तक अपराधी हूँ।

तुम जानती हो लिली, उन दिनों मै एक प्रयोग में लगा था, वह 'सेक्स चेंज' की समस्या पर था। मेरा विश्वास था कि पुरुष स्त्री में परिणित किया जा सकता है तथा स्त्री पुरुष में। उस प्रयोग में मृत्यु का भय था, इस लिए उसके लिए मैंने स्वयं अपने को चुना। मैं तुमसे पूछता हूँ, जब उस प्रयोग में मैं लगा था, तो क्या तुमसे विवाह कर लेने का अधिकारी मैं था? अथवा अपने व्यक्तिगत सुखों के लिए उस प्रयोग से हाथ खींच लेना क्या श्रेयस्कर होता? इसके अतिरिक्त एक और बात भी है लिली। शायद तुम नहीं जानती कि विलियम तुम्हें कितना प्यार करता है, और यह कि उसने स्वयं तुम्हारे प्रति अपने प्रेम की मुझसे चर्चा की थी। शायद तुम्हें ज्ञात नहीं है कि उसमें और मुझमें कितनी घनिष्ठता है। शायद तुम इस बात से अनभिज्ञ हो कि मैं विलियम का आभारी हूँ—बहुत आभारी। तुम्हीं बताओ, क्या ऐसी स्थिति में विलियम के प्रति विश्वासघात करना मानुषिक होता?

मुझे अपनी आकांक्षाओं की हत्या करनी पड़ी है किन्तु उसके लिए मैं दुखी नहीं हूँ। मैंने तुम्हारी भी आकांक्षाओं की हत्या की है, और उसके लिये मुझे दुःख है। मैं तुम्हारे प्रति अपराधी हूँ, और उस अपराध के लिए तुम्हारे सम्मुख क्षमा-प्रार्थी हूँ।

शायद तुम कहो कि मैं तुम से कह कर भी तो जा सकता था।

यह ठीक है कि मैं वैज्ञानिक हूँ; किन्तु मेरे अन्दर भी तो एक ऐसी वस्तु है, जो प्रतिपल स्पन्दन किया करती है। इसके अतिरिक्त मुझमें दुर्बलता भी है, क्योंकि मैं भी मनुष्य हूँ। अपने को तुमसे अलग करने की बात तुमसे कहने की शक्ति मैं कहाँ प्राप्त कर पाता? यह सब-कुछ देख कर भी क्या अपने अपराधी को क्षमा नहीं कर पाओगी?

तुम्हें एक सूचना और देनी है, और वह यह कि मुझे अपने प्रयोग में सफलता प्राप्त हो गई है। अच्छा, अब विदा!

तुम्हारा अपराधी—

जेम्स।"

लिली ने पहले सामने दीवार पर लगे जेम्स के चित्र की ओर देखा और फिर विलियम के चित्र की ओर, और उसके नेत्रों से दो बड़े-बड़े अश्रु-बिन्दु ढुलक कर उसके कपोलों पर आ गये। किसी का हृदय क्या जाने कि वे स्त्री में परिणत हुए जेम्स के लिए थे या मृत्यु की गोद में सोये हुए विलियम के लिये!



दो प्रश्न

सतीश ने सामने मेज़ पर रखे मानव-शव की चीर फाड़ समाप्त ही की थी कि इलेक्ट्रिक-बेल बज उठी। वह एकदम चौंक पड़ा मानो किसी ने उसे गहरी निद्रा से, सुई चुभा कर जगा दिया हो। 'रामदयाल' 'रामदयाल' ओ 'रामदयाल' उसने पुकारा। रामदयाल विज्ञानशाला के पिछले भाग वाले बरामदे में परखनली साफ कर रहा था। परखनली छोड़ कर वह आया तो सतीश ने कहा 'देखो बाहर कोई है, उन्हें अन्दर बुला लाओ' और फिर साबुन से हाथ धोने लगा। उसके हाथ मशीन की तरह चल रहे थे, किन्तु मालूम होता था कि उसका मस्तिष्क कहीं और है—हाथ धुल चुके थे फिर भी नल से पानी गिर रहा था और उसके हाथ नल के नीचे थे। 'नहीं वह सिद्धान्त ग़लत नहीं है,' उसने कहा और फिर उसकी दृष्टि अपने वस्त्रों पर गई। काली गर्म पैंट और स्पोर्टिंग कालर की आधी अस्तीनों वाली सफ़ेद क़मीज़ के ऊपर वह पिंडलियों तक का एक चोग़ा सा पहिने हुए था। सतीश ने उसे उतार कर रख दिया और बड़ी मेज के समीप पड़ी हुई एक कुर्सी पर आ बैठा। उसी समय रामदयाल के साथ एक नवयुवक ने प्रवेश किया।

युवक के बाल घुँघराले, मुखाकृति गंभीर और आँखें स्वप्निल सी थीं, उसे सुन्दर कहा जा सकता था। खद्दर के कुर्ते धोती पर ऊनी

चादर ओढ़े हुए था, और पैरों में चप्पलें थीं।

'आओ कुसुम', सतीश ने कुर्सी से खड़े हो कर कहा और फिर दोनों मित्र पास बैठ गए। युवक का वास्तविक नाम ज्ञात नहीं क्या था, वह कुसुम के नाम से कविताएँ लिखता था, और इसलिये उसे सब कुसुम ही कह कर पुकारते थे—रजनी भी उसे कुसुम ही कह कर पुकारती थी।

'पाँच बज गए, अभी तक घर नहीं गए?' कुसुम ने सामने कोने में टँगे मानव-अस्थिपंजर को अनमने से हो कर देखते हुए सतीश से पूछा।

'हाँ! आज देर अधिक हो गई। तुम्हारे आने से एक मिनट पूर्व ही उस लाश में, चीर फाड़ के बाद अंतिम टाँके लगाए थे!'—सतीश ने विज्ञानशाला के दूसरे कोने में बिछी मेज पर लेटे मानव-शव की ओर संकेत करते हुए कहा। उसके बाद वह फिर चुप हो गया जैसे किसी और ही अपार्थिव विचार जगत में पहुँच गया हो।

क्षण भर के लिए कुसुम की दृष्टि उसकी ओर उठी, फिर उसने विज्ञानशाला की अन्य वस्तुओं पर उड़ती सी निगाह डाली। वह सोचने लगा 'क्या इस व्यक्ति का जीवन भी जीवन है? परखनली, काँच के यंत्र, रसायनिक पदार्थों से भरी बोतलें, बड़े बड़े पहियों वाली भीमकाय मशीनें, चीर-फाड़ का सामान और मेंढक, चूहे, नरकंकाल, मानव-शव! बस यही इसका संसार है।' उसने एक बार विचार जगत में खोए, नवयुवक सतीश की ओर देखा मानो उसे उसके मानव होने में सन्देह हो।

'अभी तुम्हारे साथ चलूंगा, ज़रा कोट पहन आऊँ और कुछ मशीनें बन्द कर दूँ।' सतीश उठ कर चला गया किन्तु कुसुम उसी प्रकार बैठा सोचता रहा 'इसका जीवन...यह जीता किस प्रकार है?

सौंदर्य...? प्रकृति...?...ईश्वर ? अरुण पाटल का अस्तित्व इसके लिए है भी तो उसके सौंदर्य और सुरभि में किसी अज्ञात कलाकार का हास और स्नेह देखने के लिए नहीं, उसे तेज़ाब में डाल कर जला देने के लिए ! और ·····और कहता है प्रेम हृदय की वस्तु नहीं, केवल मस्तिष्क की वस्तु है—मनुष्य प्रेम का अनुभव नहीं करता, वह केवल सोचता है कि मैं प्रेम करता हूँ !···'

इसी समय सतीश कोट पहन कर लौट आया। कुसुम के कन्धे पर हाथ रख कर उसने पूछा 'क्यों जी, तुम कवि हो, रजनी के विषय में भी तुमने मुझ से कई बार चर्चा की है, क्या मनुष्य प्रेम का भी अनुभव उसी प्रकार करता है जिस प्रकार हाथ कट जाने पर दर्द का, भूख-प्यास का, या······?'

'तुम्हारे विचार से तो वह केवल सोचता है कि मैं प्रेम करता हूँ, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं !'

'हाँ, मैं तो यही सोचता हूँ। किन्तु........'

'किन्तु, क्या ! तुम्हें यह बात समझानी मेरी शक्ति से तो बाहर का कार्य है।...हाँ रजनी के जन्म दिवस के भोज का निमन्त्रण तुम्हारे पास भी तो आया है, समय बहुत कम रह गया है।'

'निमन्त्रण आया है, किन्तु मेरा तो रजनी से परिचय है नहीं, और इसके अतिरिक्त आज कल कार्य......।'

'रजनी से नहीं उसके भाई से तो परिचय है। जब उन्होंने बुलाया है तो चलो।'

सतीश ने मस्तक पर हाथ रख कर कुछ सोचते हुए कहा 'देखो जितना कार्य दिन भर किया है रात को उसका विवरण लिखना है, थीसिस अभी तक आधा भी समाप्त नहीं हुआ।'

'इस संकीर्ण संसार में हमेशा ही रहते हो, कभी तो इससे बाहर

निकला करो। आज तुम्हें चलना होगा।' सतीश की घनिष्ट मित्रता से कुसुम अपने को गौरवान्वित मानता था, वह उसे रजनी के समक्ष उपस्थित करने के लिए व्यग्र था। जब सतीश ने देखा कि कुसुम का आग्रह टाला नहीं जा सकता तो उसने अपनी स्वीकृति दे दी।

× × ×

सतीश ने देखा कि उस सुन्दर वाटिका के मध्य में बनी सफ़ेद कोठी के संमुख लान में एक शामियाना लगा हुआ है, और उसका कोना कोना रँग बिरँगे विद्युत प्रकाश से जगमगा रहा है। अँगरेज़ी ढँग की पोशाक पहने हुए एक तितली के समान सुन्दर नवयुवती मेहमानों का स्वागत कर रही है। कुसुम ने रजनी से सतीश का परिचय कराया। रजनी ने कृतज्ञता भरे स्वर में सतीश से कहा, 'आप के विषय में ये प्रायः चर्चा किया करते थे। जिस थीसिस पर आपको डी० एस-सी० की उपाधि मिलने वाली है उसके विषय में लिखे गए आपके दो लेख भी मैंने पढ़े हैं, आप ने आज आने का कष्ट किया, इसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ।' और इसके बाद उसने कुसुम की ओर देखा। मधुर मुस्कान की हल्की सी रेखा उसके पतले पतले अरुण कोमल अधरों पर दौड़ गई, उस समय उसका सौंदर्य दुगना हो गया था। सतीश ने अपने संपूर्ण शरीर में एक प्रकार की सिहरन का अनुभव किया। उसने अपने गर्म कोट के खुले हुए बटन बन्द कर लिए।

रजनी और दूसरे मेहमानों का स्वागत करने चली गई। सतीश और कुसुम रेडिओ के समीप आकर बैठ गए। मग्न होकर वे गाना सुनने लगे—

प्रेम बिना यह जीवन सूना
जग है कारागार!

कुसुम संगीत के उतराव चढ़ाव के साथ झूम रहा था। सतीश के

नेत्र कभी कभी एक डाल से दूसरी डाल पर फुदक कर चहकती बुल-बुल सी रजनी की ओर उठ जाते थे। उसे रह रह कर अपने प्रयोग और थीसिस की याद आ रही थी, किन्तु उसे मालूम हुआ जैसे विज्ञान के नीरस वातावरण को चीर कर संगीत की ध्वनि उसके मस्तिष्क के अन्तरतम प्रदेश तक पहुँच रही है। उसने अपने दोनों हाथ कोट की जेबों में इस प्रकार डाल दिए जैसे उसे जाड़ा लग रहा हो। उसी समय उसके नेत्र रजनी की खोज में उठे। उसने देखा रजनी थोड़ी ही दूर पर एक कुर्सी पर अकेली बैठी उसी की ओर देख रही है। उसे लगा जैसे रजनी की उन उन बड़ी बड़ी आकर्षक मादक आँखों से निकल कर यह ध्वनि गूँज रही है :—

प्रेम बिना यह जीवन सूना
जग है कारागार !

वह यकायक उठा और उसके समीप की दूसरी कुर्सी पर जा कर बैठ गया।

कुसुम के कानों में कुछ भनक सी पड़ी—'मैं आप से मिलने के लिए बहुत दिनों से उत्सुक थी !' उसने गर्दन उठा कर देखा सतीश और रजनी खूब घुल मिल कर बातें कर रहे हैं, उसी समय उसकी दृष्टि सतीश के कोट पतलून टाई कालर पर पड़ी, उसके चेहरे पर पड़ी जो सदा गंभीर रहता था, किन्तु इस समय अपने सौरभ का दान करने के लिए व्यग्र, लाल गुलाब के फूल के समान खिल गया था। और फिर उसने अपने कुर्ते धोती चप्पल की ओर देखा, उसके हृदय में संघर्ष सा उत्पन्न हुआ, उसने चाहा कि वह भी जाकर उसके समीप बैठे, किन्तु वह उठ न सका, उसे लगा मानो वह कुर्सी पर बँधा हुआ है। मन की अशांति बढ़ती गई। तभी वह सोचने लगा, अगर दो दिन भी वह रजनी के यहाँ नहीं आता तो वह उसे अपने छोटे भाई

के हाथ पत्र भेज कर बुलाती है—उसकी नवीनतम कविताएँ सुनने के लिए कितनी व्यग्र रहती है, वह उन्हें कितने चाव से सुनती है। तब फिर उसने चारों ओर सर घुमा कर देखा मेज़, कुर्सी, शामयाना सब स्थिर हैं—घूम नहीं रहे हैं।

× × ×

सतीश एक परखनली में किसी लाल से पदार्थ के रवे स्पिरिट लैम्प पर गर्म कर रहा था। जब चट चट की ध्वनि उसके कानों में पड़ी तो उसने चौंक कर देखा कि रवे जितने गर्म करने चाहिएँ थे उससे बहुत अधिक गर्म कर दिए हैं। यों तो प्रयोग समाप्त करने के बाद घंटों समाधिस्थ सा रह कर विचार जगत में विचरण करना उसके लिए साधारण सी बात थी, घूमते-फिरते, खाते-पीते वह सदा ही अपने प्रयोग के सिद्धान्तों के विषय में सोचा करता था, किन्तु प्रयोग करते समय उसकी सम्पूर्ण शक्ति प्रयोग ही में केंद्रित रहती थी। जीवन में यह पहला अवसर था, जब उसने ध्यान कहीं और रहने के कारण, प्रयोग बिगाड़ दिया था। प्रयोग के बिगड़ जाने पर उसे दुःख नहीं था, किन्तु वह सोच रहा था, 'मेरे विचार बहक रहे हैं, उन पर मुझे नियंत्रण रखना चाहिए' और उसी समय उसे ध्यान आया रजनी से वार्तालाप करते समय उसकी हालत न जाने कैसी हो गई थी—उसकी साँस की गति तीव्र हो गई थी और वह कठिनता से बोल रहा था। रजनी के, फूल की पराग भरी पंखुड़ियों से कपोल एकदम लाल हो गए थे, उनके मस्तक पर पसीने की बूँदें सी आगई थीं।

उसी समय उसने परखनली हाथ से रख दी और रजनी के उस चित्र को नेत्रों में स्पष्ट कर विज्ञानशाला में चक्कर लगाने लगा। दीवारघड़ी ने तीन घंटे बजाए, वह जाग्रत हुआ। प्रयोग सम्बन्धी

विचार खींच कर अपने मस्तिष्क में लाने का प्रयत्न करने लगा, 'केवल थोड़े दिनों का कार्य और रह गया है। उसके बाद...?' विचारों को शक्ति देने के लिए वह चीर-फाड़ की मेज के समीप जा खड़ा हुआ, किन्तु तभी उसे फिर ध्यान आया, आज सायंकाल रजनी ने उसे चाय के लिए बुलाया है। रजनी का ध्यान आते ही उसके कानों में वही संगीत गूँज उठा—

प्रेम बिना यह जीवन सूना
जग है कारागार !

सामने मेज़ पर पड़ा मानव-शव उसे पुकार पुकार कर कह रहा था, 'विचारों पर नियंत्रण रखना चाहिए।......विचारों पर नियन्त्रण !!......नियन्त्रण !!!......' और तभी वह लपक कर अपने ड्रेसिंगरूम में चला गया और मेज़ पर रखे बड़े आइने के सामने खड़े होकर जल्दी जल्दी कपड़े पहनने लगा।

× × ×

जब साढ़े तीन बजे कुसुम सतीश से मिलने विज्ञानशाला पहुँचा तो द्वार पर ही उससे नौकर ने कहा, 'बाबू जी का हुकुम है, चार बजे तक कोई अन्दर न आवे। किसी के आने की ख़बर भी न दी जाय, आप बराबर वाले कमरे में बैठिये।'

कुसुम जाकर मेज के समीप कुर्सी पर बैठ गया। अचानक उसकी दृष्टि मेज़ पर रखे एक लिफ़ाफ़े पर पड़ी। लिखावट उसे परिचित सी जान पड़ी। उसने देखा लिखावट रजनी ही की है। उसके हाथों में प्रकंपन हुआ, उसने द्वार पर आकर देखा नौकर चला गया है। फिर उसकी निगाह मेज़ पर रखी छोटी घड़ी पर पड़ी। चार बजने में बीस मिनट थे, काँपते हुए हाथों से उसने लिफ़ाफ़ा उठाया, वह खुला हुआ था। उसका दिल तेज़ी के साथ धड़क रहा था। अपनी साँस

रोक कर उसने लिफ़ाफे से पत्र निकाल कर पढ़ा। रजनी ने उसी दिन सायंकाल को, प्यार भरे शब्दों में सतीश को चाय के लिए निमन्त्रित किया था।

तभी उसे ध्यान आया, आज प्रातःकाल ही सिनेमा चलने के लिए पूछने पर रजनी ने उत्तर दिया था, 'विमल बाबू की लड़की ने बुलाया है, शाम को उसके यहाँ जाना है।' कुसुम के सर में चक्कर सा आ गया। उसे मालूम हुआ जैसे गर्मी की वजह से वह पसीने से तर है। उसी समय उसे जूते की आहट सुनाई दी। हड़बड़ा कर उसने लिफ़ाफ़ा वहीं मेज़ पर रख दिया और स्वस्थ होकर बैठ गया।

जब सतीश कमरे में आया तो उसकी निगाह उस लिफ़ाफ़े पर पड़ी। उसने फुर्ती से उसे उठा कर मेज़ के दराज़ में रख दिया। कुसुम ने देखा सतीश सज कर एकदम सोलह आने साहब बना हुआ है और वह जल्दी में है। कहने के लिए उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। प्रयत्न करने पर भी वह अपने चेहरे की उदासी छिपाने में अपने आप को असमर्थ पा रहा था। किन्तु सतीश का ध्यान उस ओर नहीं गया। 'साढ़े चार बजे एक साहब से मिलना है, क्षमा करना, फिर मिलेंगे', उसने कुसुम के कंधे पर हाथ रख कर विनीत भाव से कहा और उसके बाद दोनों मित्र कमरे से चले गए।

× × ×

उस दिन दोपहर को कुसुम और सतीश की मुठभेड़ अचानक रजनी के ही घर हो गई, एक तश्तरी में कटे हुए फल सामने मेज़ पर रखे हुए थे और तीनों में वार्तालाप चल रहा था।

'आपने सुना है, कुसुम को नए कविता-संग्रह पर साहित्य सम्मेलन का पुरस्कार मिलने वाला है?' रजनी ने प्रसन्नता की मुस्कान के साथ सतीश से पूछा।

'हाँ, सुना तो है' उसने रुखाई से उत्तर दिया, 'किंतु मैं सोचता हूँ, आज देश को कविता की आवश्यकता नहीं है। विशेषतया वह कवि जो युवकों में निराशावाद फैलाता है, ऐसे समय में जब कि देश में स्वतन्त्रता के लिए युद्ध हो रहा है, देश का सब से बड़ा शत्रु है।'

'आप ठीक कहते हैं, किन्तु', रजनी ने सतीश को शांत करने का प्रयत्न करते हुए कहा, 'क्या आप यह स्वीकार नहीं करते कि स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने के दस वर्ष बाद इस संघर्ष की केवल याद शेष रह जायगी; पर कवि की कृति उसे युग युग तक जीवित रखेगी ? उसकी कृति कवि को अमर कर देती है, देश ?···देश ही क्या सारा संसार समय आने पर अपने आपको एक कवि का आभारी मानता है।'

यदि कभी और किसी अन्य व्यक्ति के मुँह से सतीश ने यह बात सुनी होती तो शायद बहुत अंशों में उसने इसे स्वीकार किया होता, किन्तु कुसुम की उपस्थित में रजनी के मुँह से निकली यह बात उसे असह्य हो गई।

'मेरा विचार है कि बादलों में विचरण करने वाले व्यक्तियों का समय बीसवीं शताब्दी में नहीं रहा। जीवन का संघर्ष दिन प्रति दिन...............'

कुसुम बहुत व्यग्र हो गया था। उसने बीच ही में बात काट कर कहा, 'जी हाँ, मैं भी सोचता हूँ कि बादलों में विचरण करने वाले व्यक्तियों का समय नहीं रहा। परसों 'मुक्ति' देख कर आए, कल पूछने पर एक एक्टर तक का नाम नहीं बता सके।'

जब रजनी ने देखा कि वातावरण गर्म होता जा रहा है तो उसने फलों की तश्तरी शीघ्र ही उन दोनों के आगे सरका दी।

उस दिन के बाद दोनों मित्रों का मिलना-जुलना बहुत कम हो गया।

× × ×

जब कुसुम अपनी तीन महीने की पहाड़ी यात्रा से लौटा तो उसे समाचार मिला कि रजनी का विवाह देहली के एक लखपति से हो गया है। बारात स्पेशल ट्रेन से आई थी, बहुत धूमधाम रही। इस बात पर विश्वास कर लेना कुसुम के लिए सहल काम नहीं था। इस बात से उसे कितना दुःख हुआ वह स्वयं नहीं जानता था।

संध्या हो गई थी। अपने मस्तिष्क में कुछ शून्य सा लिए बैठा हुआ वह अस्त होते रक्तिम सूर्य को देख रहा था। पंछी अपने नीड़ों को लौट रहे थे, आकाश में लालिमा लिए काले बादलों की घटा घिरती आ रही थी। थोड़ी हवा भी चल रही थी। किन्तु ऐसा मालूम होता था कि कुसुम यह सब कुछ नहीं देख रहा है। उसका मित्र रमाकांत वहाँ आया, तब उसे चेतना सी हुई। रमाकांत ने आते ही एक पुराने विषय की चर्चा छेड़ दी जिस पर दोनों में कई बार बहस हो चुकी थी।

'देखो, आज मैंने एक लेख पढ़ा है', रमाकांत ने कुसुम के चेहरे की उदासी की ओर ध्यान दिए बिना ही कहना आरम्भ किया, 'जिसमें लेखक ने यह भली प्रकार सिद्ध कर दिया है कि प्रेम में वासना रहती अवश्य है, चाहे मनुष्य जीवन भर उस भावना पर विजयी रहे। जब किसी के रूप, गुण, अथवा व्यवहार से हम प्रभावित होते हैं तो उसके प्रति एक प्रकार की श्रद्धा सी हो जाती है और जब उसमें एक बिन्दु भी वासना-तत्व का आ जाता है तो वही श्रद्धा प्रेम में परिणत हो जाती है।'

कुसुम सदा की भाँति बीच ही में व्यग्र नहीं हुआ, वह चुपचाप बैठा सुनता रहा।

'जब हम श्रद्धा, स्नेह और प्रेम की विवेचना कर उनमें अन्तर देखते हैं तो यह बात सुगमता से समझ में आ जाती है।'

'प्रेम मनुष्य को देवत्व प्रदान करता है,' कुसुम ने शांति के साथ उत्तर दिया, 'वासना उसे पशुत्व के गर्त में ढकेलती है। मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि प्रेम का आधार वासना है, या इन दोनों में कुछ सम्बन्ध भी है। हो सकता है आप लोग 'प्रेम' शब्द का प्रयोग दूसरे ही अर्थ में करते हों किन्तु मेरे लिए तो वह पवित्रतम वस्तु है, क्योंकि पूर्ण आत्मसमर्पण उसी में सम्भव है।'

'किन्तु एक और बात भी तो है,' रमाकांत कुछ व्यग्रता से बोला, 'एक प्रेमी यह सहन नहीं कर सकता कि जिसे वह प्रेम करता है, उसका विवाह अन्य व्यक्ति से हो जाय। अगर प्रेम बिल्कुल निःस्वार्थ है तो ऐसा होने से प्रेमी को दुःख क्यों हो?'

'मैं तो सच्चा प्रेमी उसे ही कहूँगा जिसके सुख का लय उसके सुख में हो गया है, जिसे वह प्रेम करता है', कुसुम ने संक्षेप में उत्तर दिया।

अंधकार बढ़ता जा रहा था, घटा भी सघन होती जा रही थी। रमाकांत विषय को बीच ही में छोड़ कर चला गया, किंतु जाने से पूर्व उसने कुसुम को बताया कि सतीश सख्त बीमार है। उसी कुसुम ने, जो दो दिन पूर्व सतीश की मृत्यु का समाचार सुन कर भी शायद एक ठंढी साँस लेता, यह अनुभव किया कि उसके हृदय में सतीश के लिए करुणा का सागर सा उमड़ रहा है।

उसने आकाश की ओर देखा, लालिमा की एक भी रेखा शेष नहीं रह गई थी। घटा बहुत ही घनी हो गई थी। आकाश के दूर

वाले छोर पर तूफ़ान सा उठता प्रतीत होता था। जैसे ही वह घर से बाहर निकला टपाटप बड़ी बड़ी बूँदें पड़ने लगीं। वह आध फ़रलाँग भी नहीं गया था कि एकदम मूसलाधार बारिश होने लगी। वह रुका नहीं। कभी कभी घुमड़ते बादलों को करुण नेत्रों से देखता बढ़ता चला जा रहा था। छाते में से पानी छन छन कर अन्दर आ रहा था। तभी अचानक बिजली की चमक ने उसके नेत्रों को चकाचौंध कर दिया, फिर गड़गड़ाहट का भयंकर शब्द हुआ मानो कोई पर्वत दूसरे पर्वत से टकरा कर चूर चूर हो गया हो। किन्तु कुसुम तेज़ी के साथ क़दम बढ़ाता चला ही जा रहा था। इन प्राकृतिक तत्वों का उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं हो रहा था।

पानी से तर वह सतीश के यहाँ पहुँचा। सतीश एक चारपाई पर लेटा हुआ था। चारों तरफ़ की खिड़कियाँ बन्द कर रखी थीं। दोनों मित्र लगभग चार महीने बाद मिले थे। एक दिन सतीश कुसुम का नाम सुनना भी पसन्द नहीं करता था, किन्तु जिस दिन रजनी की बारात बिदा हुई थी, उस दिन उसे अनुभव हुआ था कि कुसुम उसके हृदय के बहुत ही निकट है। इस घटना को पूरा डेढ़ महीना हो गया था, तभी से वह कुसुम के लिए व्यग्र था। मना करने पर भी उसने भीगे हुए कुसुम की गोदी में बच्चे की भाँति सर छिपा लिया—उसके दिल की धड़कन उसकी छाती पर सर रख कर बहुत देर तक सुनता रहा। दोनों बहुत देर तक मौन रहे। अंत में कुसुम ने निस्तब्धता भंग की।

'कब से बीमार हो ?'

'कोई बीस दिन से।... ....तुम कब आये ?'

'आज ही तो आया हूँ।.........कमज़ोर बहुत हो गए !'

'हाँ, शुरू में तो मामूली बुख़ार आता रहा मगर फिर

खाँसी हो गई, उसने काफ़ी परेशान किया।' और इसके बाद फिर दोनों मौन होगए।

रात रात भर जाग कर कुसुम ने सतीश की सेवा की। दो सप्ताह में वह बिल्कुल ठीक होगया।

× × ×

उस दिन सायकाल को देहली के एक होटल में जब सतीश ने तीसरा पेग भरा तो अचानक उसकी दृष्टि एक अन्य टेबिल पर बैठे कुसुम पर पड़ी। उसने देखा उसके हाथ में भी पेग है। तभी कुसुम की निगाह भी सतीश पर पड़ी, फिर दोनों मित्र पास आ बैठे।

'कहो कुसुम, कब आए?' सतीश ने प्रश्न किया।

'परसों। तुम कब आए!'

'मैं तो यहाँ एक सप्ताह से हूँ। कैसे आए?'

'यहाँ के प्रकाशकों के पास कुछ रुपया बाक़ी था। उसी के लिए आया था। तुम कैसे आए?'

'प्रयोगशाला के लिए कुछ सामान ख़रीदना था।'

इसके बाद कुछ देर तक दोनों चुप रहे।

'तुम तो शराब से बहुत घृणा करते थे' सतीश ने गम्भीर होकर कहा, 'पीने कैसे लगे?'

'आज दिन भर घूमते घूमते बहुत थक गया था इसलिए सोचा... ......किन्तु पीने के आदी तो तुम भी नहीं थे?'

'जरा ठंढ महसूस कर रहा था।' उसने उसी प्रकार गम्भीर होकर उत्तर दिया।

कुसुम सोच रहा था सतीश के प्रत्येक उत्तर में शायद उतनी ही सचाई है जितनी मेरे उत्तर में। प्रयोगशाला की स्मृति से सतीश के हृदय में टीस सी पैदा हो गई थी क्यों कि सामान की बात दूर रही

उसका ध्यान भी उसे आज महीनों बाद आया था।

इतनी बात भी दोनों ने ज़बरदस्ती ही की। दोनों एक दूसरे से छुट्टी चाहते थे। दोनों के चेहरे बहुत उदास थे। 'देखो अवसर मिला तो फिर मिलेंगे', कह कर दोनों होटल से चल दिए। सतीश अब भी सोच रहा था, प्रेम केवल मस्तिष्क की वस्तु है या हृदय से भी उसका कुछ सम्बन्ध है? और कुसुम के सम्मुख इस समय भी वही गुत्थी थी, प्रेम का वासना से कुछ भी सम्बन्ध है या नहीं! उनकी इन शंकाओं का समाधान कौन करे?



स्वप्न, चित्र

जब आकाश, उसमें दिनकर, निशिपति और नक्षत्र-समूह तथा भूमंडल की सृष्टि हो चुकी तो विश्वकर्मा ने ब्रह्मा के सम्मुख उपस्थित होकर पूछा 'अब क्या आज्ञा है ?'

'अवनि-तल पर स्रष्टा के अनुरूप मानव का निर्माण करो, जिससे सृष्टि सार्थक हो !' उसे उत्तर मिला ।

विश्वकर्मा ने मानव का निर्माण किया, उसमें जीवन था, किन्तु वह पाषाण खंड के समान गति हीन रहा । उसमें बोलने की शक्ति थी किन्तु वह बोलता न था । ऊषा प्रति दिन आकाश के पूर्वांचल को अबीर से रँग कर नव जीवन का संदेश देती थी और तब पक्षी अपने नीड़ों से निकल निकल कर मंगल गान द्वारा दिवस का स्वागत करते थे । निस्तब्ध निशि में राकापति का शुभ्र हास अवनि-तल के तृण-कलि-पल्लवों को तरल रजत से निखार देता था और तब रत्नाकर का शांत हृदय तरंगित हो उठता था । मानव के समीपवर्ती शैल-शिखर से निर्झर, कभी सोने का हो कर और कभी चाँदी का हो कर, अविरल झरता रहता था और मानव इन सब से अप्रभावित था । जीवन उसमें था, किन्तु वह पाषाण-खंड के समान निश्चेष्ट ही रहा ।

और तब विश्वकर्मा ने पुनः ब्रह्मा के सम्मुख उपस्थित हो कर कहा 'मैंने मानव का निर्माण किया, उसमें जीवन भरा किन्तु वह

निश्चल है, मौन है !'

'तृप्ति मौन है, पूर्णता निश्चेष्ट है ।' उसे उत्तर मिला 'मानव का अंश उससे अलग रखो, तब उसका कंठ मुखरित होगा, उसकी स्थिति को गति प्राप्त होगी ।'

विश्वकर्मा ने मानव को गहरी नींद में सुलाया, उसके शरीर से एक पसली निकाल कर नारी का निर्माण किया और नारी को पुरुष से दूर अवनि-तल के दूसरे छोर पर रखा ।

पुरुप ने जागने पर प्रथम बार अभाव का अनुभव किया, उसका कंठ मुखरित हुआ । उसके क्रन्दन और गान से दिशाएँ गूँज उठीं, उसमें गति उत्पन्न हुई । वह अपने अभाव की पूर्ति के लिए खोज में चल दिया, विश्वकर्मा प्रसन्न था, क्योंकि उसने देखा वह अपने उद्देश्य में सफल हुआ है ।

पुरुप निशि-दिन चलता रहा । सर, सरिता, सागर, मरुस्थल, कोई भी उसकी गति का अवरोध न कर सका और उसने अमावस्या की अँधियारी में उसी पथ के किनारे, जिस पर वह चला जा रह था, नारी को भटकते हुए पा लिया और वह फिर पूर्ववत् निश्चेष्ट हो गया ।

तब विश्वकर्मा ने समझा कि उसकी सफलता चिरंतन नहीं थी । और उसने तीसरी बार ब्रह्मा के सम्मुख उपस्थित हो कर कहा, पुरुप के अंश को मैंने अवनि-तल के दूसरे छोर पर रखा था, किन्तु 'पुरुष ने उसे वहाँ भी पा लिया और वह फिर निश्चेष्ट हो गया । पाताल या स्वर्ग में भी उसे रखूँगा तो वह उसे पालेगा । अब समस्या का हल किस प्रकार हो ?'

'जो कुछ भी मानव पूर्णतया समझ लेगा, उसे अप्राप्य न होगा ।' विश्वकर्मा को उत्तर मिला 'मानव की अन्तरात्मा में स्वप्न-चित्र अंकित करो । उसका मस्तिष्क केवल आंशिकरूप में उसे समझ

पायेगा। अभाव अन्तर्गत हो, और उसकी पूर्ति के लिए खोज की संभावना बाहर हो। इस प्रकार बहिर्मुखी खोज का अन्त कभी न होगा।'

पुरुष और नारी को सुला कर विश्वकर्मा ने उनकी अन्तरात्मा में स्वप्न-चित्र अंकित किये, जागने पर नारी को आलिंगन-पाश में बाँधे हुए पुरुष ने मस्तिष्क में कुछ शून्य-सा अनुभव किया और उसे ज्ञात हुआ कि उसके हृदय में कुछ अभाव-सा है, और इसी से वह उत्पीड़ित है।

उसने नारी को नवीन ढंग से पाने का प्रयत्न किया। नारी माता हुई, वह पिता बना। अपने अनुरूप सृष्टि करके उसने अपने लिए जीर्णता और मृत्यु की भी सृष्टि कर ली; किन्तु इससे उसके अभाव की पूर्ति न हुई।

पिता, पुत्र और माता ने प्रातःकाल उठ कर हिमाच्छादित शैल-शिखर पर शीतलता तथा शांति-प्रदायक अनुपम सौन्दर्य-छटा देखी। उन्होंने सोचा, शायद वहाँ शांति मिल जाय।

तीनों ने शैल पर चढ़ना आरम्भ किया। न जाने कितना रक्त पसीने के रूप में बहा कर वे वहाँ पहुँचे पर इस अशान्ति का अन्त वहाँ भी न मिला।

पर वे निराश होना नहीं जानते थे। उस शैल-शिखर से उन्हों ने देखा, शैल के उस पार सागर के मध्य में एक सोने की नगरी है, जिस में रत्न-जटित महल हैं और जिनमें मणियों के दीपक जलते हैं। नाव गढ़ कर उन्हों ने सागर को पार किया, पर वहाँ पहुँचने पर उन्हें मिला, बालू का ढेर। प्रभातकालीन रवि-रश्मियों ने उसे वह रूप प्रदान किया था!

जो कुछ उन्हों ने समझा, उसे प्राप्त कर लिया, किन्तु प्राप्ति के

साथ मस्तिष्क का शून्य और हृदय का अभाव और भी उत्पीड़क होता गया, मृत्यु को वे नहीं समझ सके।

आज तक भी मानव मृत्यु को नहीं समझ सका है और इसी लिए वह कभी-कभी पुकार उठता है—यदि मृत्यु में ही इस उत्पीड़क अभाव की पूर्ति हो जाय, तो मैं उसका आलिंगन कर लूँ ?

किन्तु उसके इस प्रश्न का उत्तर उसे कौन दे ?



भूत, वर्तमान, भविष्य

सृष्टि के आदि में भूतल पर मानव समाज का जन्म हुआ; उस के जन्म के पश्चात् सैकड़ों वर्ष व्यतीत हो गए किन्तु मानव उस समय तक निरंकुश था—पूर्णतया स्वतंत्र था। उसके व्यक्तिगत जीवन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्धन नहीं था क्यों कि सब समान थे और वह उस समय अरक्षित था। स्वयं उसने प्रतिबन्धन की कामना की।

एक बली पुरुष को मानव समाज ने अपना राजा बनाया। अपनी रक्षा का भार उसने राजा को सौंपा, उसके प्रतिबन्धनों के सम्मुख वह नत मस्तक हुआ, और वह प्रसन्न था। राजा राज्य करता गया और सभ्यता विकसित होती गई, सर्व प्रथम कृषि और फिर मिलों तथा कारखानों का जन्म हुआ। रक्षा के भार को सुचारु रूप से वहन करने

के लिए राजा को सेना की आवश्यकता हुई और उसने सेना का संगठन किया।

राजा के तीन पुत्र थे। एक के हाथ में उसने कृषि सौंपी, दूसरे को मिलों तथा कारखानों का स्वामी बनाया, तीसरा सेनापति हुआ और वह स्वयं राज्य करता रहा। रक्षार्थ नियुक्त सेना का प्रयोग कभी कभी दमन के लिए भी होता था क्यों कि मानव को अपना जीवन सीमित तथा संकुचित-सा प्रतीत होने लगा था। वह हाथ पाँव फैलाने का प्रयत्न करता था और दमन अत्याचार का रूप ग्रहण करता गया।

इस प्रकार बहुत काल बीत गया, राजा शासक हो गया था। उस का महल सुन्दरतम होता जा रहा था और शासितों की झोंपड़ियों के तिनके गलते जा रहे थे। उस के तीनों पुत्रों के संग्रह भवन बढ़ते जा रहे थे और वे शासितों के लिए गले में बँधे भारी पाषाण के समान हो गए थे। उन्हों ने फ़रयाद शासक से की किन्तु पिता पिता था, पुत्र पुत्र और वे थे शासित।

और एक बार शीतकाल में भारी अकाल पड़ा। शासितों के पास पेट भरने को सूखे टुकड़े भी नहीं थे, तन ढकने को चीथड़ों का भी अभाव था, उन की झोंपड़ियाँ सड़ कर नष्ट हो चुकी थीं और शासक के पुत्रों के संग्रह-भवन इस समय भी भरे पूरे थे। उनके बन्दरों के लिए दस्ताने तथा कुत्तों के लिए खीर थी और शासक तो भला शासक ठहरा उसे कमी किस वस्तु की और चिन्ता किस बात की।

यह सब कुछ पीड़ित शासितों ने देखा और वे संगठित हुए। एक अँधेरी रात को, जब आकाश में घने काले बादल थे, उन लोगों ने राजा के महल पर आक्रमण किया और उसे तथा उसके तीनों पुत्रों को, उन्हीं के सिरहाने रखी उनकी तलवारों से क़त्ल कर दिया और चारों को उनके महल की देहली के समीप गाड़ दिया।

शासक उनके ऊपर इसके पश्चात् भी था किन्तु एक विधान मात्र, जिसका निर्माण वे स्वयं करते थे। और अब वे सुखी थे क्योंकि उनकी कामनानुसार अंकुश उनके ऊपर था किन्तु फिर भी वे स्वतन्त्र थे।



कर्तव्य पथ

'कालिंग-बेल' की आवाज़ से सुधीर की आँख सहसा खुल गई। दरवाज़े में लगे शीशे से उसने देखा बाहर के बरामदे में प्रकाश है। शीघ्रता के साथ उसने कमरे की बिजली जलायी और द्वार खोला।

'राजनाथ! इस समय तुम कैसे?' बाहर खड़े व्यक्ति को देखते ही उसने आश्चर्य से कहा।

राजनाथ ने कमरे के अन्दर आकर दरवाज़े की चटखनी लगा दी।

'एक बहुत आवश्यक कार्य है, सुधीर! यहाँ केवल तुम्हीं मेरे विश्वासपात्र व्यक्ति हो।' राजनाथ ने बरसाती के बटन खोलते हुए उत्तर दिया।

सुधीर ने अपने दोनों हाथ उसके कन्धों पर रखे। प्रश्नसूचक दृष्टि से उसके गम्भीर चेहरे की ओर देखते हुए कहा 'क्या?'

काग़ज़ों का एक बण्डल राजनाथ ने अपने कोट की अन्दर की जेब से निकाल कर सुधीर को देते हुए कहा 'देखो इसे हिफ़ाज़त से रखना। या तो मेरा पत्र पाने पर इन्हें मेरे पास भेज देना और यदि छः महीने तक तुम्हें मेरे विषय में कुछ भी ज्ञात न हो तो उसके बाद इन्हें जला देना।' उसके स्वर में दृढ़ता थी।

राजनाथ की दोनों भुजाओं को दृढ़ता से पकड़ कर सुधीर ने उसे झकझोरा 'तुम क्या करने जा रहे हो राजनाथ ?' उसने प्रकम्पित स्वर में कहा 'मैं सुनूँ भी तो कि तुम आखिर इस समय जा कहाँ रहे हो ?'

'मैं नहीं जानता था कि मेरी आवश्यकता इतने शीघ्र पड़ जायगी, किन्तु कार्यक्षेत्र में पदार्पण करने की आज्ञा अभी दो घण्टे पूर्व मुझे मिल गई है। मैंने तुम्हें बताया था सुधीर कि मैं एक क्रान्तिकारी दल का सदस्य हूँ। आज मेरे दल को, मेरे देश को, मेरी आवश्यकता है। हो सकता है दो दिन बाद मुझे अपना सामान लेने के लिए लौटना पड़े किन्तु अधिक सम्भावना यही है कि मेरी तुम्हारी आज की भेंट इस जीवन में अन्तिम भेंट हो।'

'राजनाथ······ ?' सुधीर ने उसे और भी दृढ़ता से झकझोर कर उसके चेहरे की ओर देखा, सुधीर के दोनों नेत्र सजल हो गये थे।

'तुम निर्बल हो रहे हो सुधीर, एक वैज्ञानिक को इतना निर्बल नहीं होना चाहिए।' राजनाथ ने स्नेह के साथ उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा।

सुधीर चुप था। उसने यन्त्र की भाँति बक्स से एक रूमाल निकाल कर उसमें कागज़ों का वह बण्डल बाँध दिया।

'तुम्हारे कागज़······' उसने उस बण्डल को बक्स में रखते हुए कहने का प्रयत्न किया, किन्तु उसका गला भर आया।

'सुधीर' राजनाथ ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा। उसकी वाणी की दृढ़ता भी एक हल्के से प्रकम्पन में परिवर्तित हो गयी थी।

'तुम कहते हो मैं निर्बल हो रहा हूँ, पर तुम नहीं जानते हो कि आज मैं क्या खो रहा हूँ।' सुधीर ने एक बार खाँस कर कहा 'तुम्हारे

चले जाने के पश्चात् मैं यहाँ बिल्कुल अकेला रह जाऊँगा। राजनाथ, मुझे आदर करने वाले बहुत मिले किन्तु मनुष्य की अन्तरात्मा तो स्नेह तथा सहानुभूति के लिए छटपटाती है। वे मुझे केवल तुम से प्राप्त हुई और आज...!' इसके आगे वह कुछ कह न सका। राजनाथ चुप था। उसने सुधीर की पीठ थपथपाई। उसके दोनों नेत्र गीले हो गये थे।

अचानक सुधीर का हाथ समीप रखी पीतल की तश्तरी पर पड़ा। वह नीचे पक्के फ़र्श पर गिरी, झन की आवज़ हुई। सुधीर सहसा चौंका और सीधा होकर बैठ गया।

'मैं स्वयं निर्बल हूँ और तुम्हें भी निर्बल करता हूँ; लेकिन तुम्हें निर्बल नहीं होना होगा।' सुधीर ने सुदृढ़ स्वर में कहा।

'पहली गाड़ी साढ़े बारह बजे जाती है, शायद मिल जाय। अच्छा अब जाता हूँ' राजनाथ ने खड़े होते हुए कहा। 'हाँ थोड़ी दूर तक मेरे साथ चल सकोगे?'

सुधीर बिना कुछ कहे राजनाथ के साथ हो लिया। दोनों बाहर आये तो उन्हों ने देखा आकाश में काले बादल बहुत घने हैं, हल्की-हल्की बौछारें भी पड़ रही हैं।

'बारिश हो रही है, तुम छतरी ले आओ।' राजनाथ ने कहा।

सुधीर चुपचाप अन्दर गया और छतरी ले आया। सड़क पर बिजली का प्रकाश था। वे दोनों चुपचाप चले जा रहे थे और बारिश तेज़ होती जा रही थी। थोड़ी देर में बारिश बहुत तेज़ होगयी और उसके साथ हवा भी चलने लगी।

'आओ कुछ देर दरख्त के नीचे इन्तज़ार करें, शायद कोई टाँगा आ जाय' सुधीर बिना कुछ उत्तर दिये चुपचाप उसके साथ पेड़ के

नीचे चला गया, तभी टन टन टन करके क्लॉक-टावर की घड़ी ने बारह बजाये।

'इस गाड़ी में केवल आध घंटा शेष है।' राजनाथ ने कहा।

'हाँ, दूसरी गाड़ी दो बजे जाती है।' सुधीर ने उत्तर दिया।

राजनाथ बोला, 'मैं तुमसे कहता हूँ सुधीर, तुम जैसे वैज्ञानिक की सेवाएँ देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं, हमारा दल तुम्हारी तथा तुम्हारे नये आविष्कार की सहायता से बहुत कुछ कर सकता है।'

सुधीर—'तुम जानते हो कि मैं मौत से नहीं डरता किन्तु मेरा विश्वास है कि तुम लोगों का मार्ग ग़लत है और ग़लत मार्ग से बचने के हेतु मनुष्य को अपने विश्वास के प्रति दृढ़ रहना होगा।'

राजनाथ—'प्रत्येक भारतीय का प्रमुख कर्त्तव्य स्वतंत्रता की लड़ाई में योग देना होना चाहिए, यह तो तुम भी मानते हो न?'

सुधीर—'क्या तुम्हें आज यह भी बतलाना होगा राजनाथ? पर मैं उत्पादन और निर्माण में विश्वास रखता हूँ; विनाशात्मक क्रांति में नहीं। क्या रक्त में सने हाथों द्वारा माता को राजसिंहासन पर आसीन करना होगा?'

राजनाथ—'तुम यह क्यों मान लेते हो कि हमारे कार्यक्रमानुसार विनाश आवश्यक ही हैं। हो सकता है थोड़े बहुत रक्तपात की आवश्यकता हो किन्तु इस बात पर कैसे विश्वास कर लिया जाय कि बिना रक्तपात के कांग्रेस अपने अंतिम ध्येय तक पहुँच ही जायगी?'

सुधीर—'अगर तुम्हारे पथ से चल कर सफलता प्राप्त करने के लिए रक्तपात निन्यानवे प्रतिशत आवश्यक है तो कांग्रेस-पथ के पथिकों के लिए एक प्रतिशत से भी कम। इसके अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण बात और भी है जिससे इंकार नहीं किया जा सकता: कांग्रेस सारे

देश में जागृति उत्पन्न कर रही है। यदि मुट्ठी भर आदमियों के संगठन से एक बार सफलता प्राप्त हो भी गई तो उसका भविष्य अधिक उज्ज्वल न होगा। कांग्रेस तो भारत के एक-एक किसान और मज़दूर के अन्दर इस बात का बीज बोने के लिए प्रयत्नशील है कि वह अनुभव करे कि स्वतन्त्रता पर उसका जन्म सिद्ध अधिकार है और उसे प्राप्त करने के लिए उसे लड़ना होगा।'

और इतने ही में एक टाँगा आया। दोनों उसमें बैठ कर स्टेशन चले गये। वस्त्र दोनों के भीग गये थे।

× × ×

बहुत प्रतीक्षा के बाद आज सुधीर को रजनी के छोटे भाई सन्तोष का पत्र मिला। जल्दी से खोल कर उसने पढ़ना प्रारम्भ किया—

श्रद्धेय भाईसाहब,

बहन सात आठ महीने से बीमार हैं। डाक्टरों को दिखाया था, उन्होंने तपेदिक बताया है। कहते हैं हल्की-सी हरारत एक वर्ष से रहती होगी, जल्दी खबर नहीं ली गयी। एक फेफड़ा बेकार हो गया है। दूसरा अभी अच्छा है मगर उसके भी ख़राब होना शुरू हो जाने की आशङ्का है। इलाज केवल यही है कि ख़राब फेफड़े का कार्य बिल्कुल बन्द कर दिया जाय। डाक्टर कहते हैं कि हिन्दुस्तान में इस प्रकार का इलाज नहीं होता। विलायत ले जाने में चार-पाँच हज़ार रुपये का ख़र्च है। जीजा जी की आमदनी कुल सत्तर रुपये माहवार है। वे अगर सम्भव हो तो अपनी हड्डियाँ तक बेच कर जीजी को विलायत लेजाने को तैयार हैं, किन्तु वे किसी भी प्रकार इतने रुपये का प्रबन्ध नहीं कर सके।

जीजी ने मुझे इस बात की सख्त मनाही कर दी थी कि मैं आप को इस विषय में कुछ भी न लिखूँ। वे कहती थीं कि नाहक आपको

दुःख होगा। पर मेरा जी नहीं माना। मैं पूछता हूँ, अब जीजी कैसे बचेंगी ?

आपका—

सन्तोष

सुधीर ने पत्र समाप्त ही किया था कि राजनाथ ने कमरे में प्रवेश किया, विचित्र वेशभूषा में। सुधीर उठ कर खड़ा भी नहीं हो सका, साश्चर्य हत्बुद्धि-सा राजनाथ की ओर देखता रह गया।

'किस चिन्ता में बैठे हो ?' राजनाथ ने ही वातावरण की निस्तब्धता भङ्ग की।

'तुम यहाँ कहाँ ?......कब......?' इससे अधिक प्रयत्न करने पर भी सुधीर कुछ कह नहीं सका।

'मेरे विषय में तुम्हें ज्ञात हो जायगा किन्तु मेरे प्रश्न का उत्तर तुमने नहीं दिया। राजनाथ ने दृढ़ता के साथ कहा।

हाथ का पत्र सुधीर ने चुपचाप राजनाथ की ओर बढ़ा दिया। पत्र राजनाथ एक साँस में पढ़ गया और उसके बाद नेत्र बन्द किये, सर कुर्सी पर पीछे लगा कर, मस्तक को हाथ से दबाता मौन बैठा रहा। फिर वह सहसा उठ कर कमरे के एक कोने में मेज़ पर रखे टेलीफ़ोन पर गया।

फ़ोन उठा कर बोला 'हेलो......हेलो......पुलिस स्टेशन।... कोतवाल साहब......कोतवाल साहब ?......जी, मैं बोल रहा हूँ नम्बर १३ सी. से; सुधीर चरण। राजनाथ उर्फ़ 'ब्लड क्रास' इस समय यहाँ है।...जी ?...नम्बर १३ सी।'

सुधीर ने एक दम झपट कर फ़ोन राजनाथ के हाथ से ले लिया। 'यह सब क्या है ?' उसने घबराहट के साथ पूछा।

'देखो उन लोगों को आने में लगभग आध घण्टा लग जायगा, तुम इतने मे ज़रा सचेत होकर मेरी बात सुन लो।' राजनाथ ने अत्यधिक शान्ति और गम्भीरता के साथ कहा।

सुधीर चुपचाप कुर्सी पर बैठ गया। राजनाथ ने कहना प्रारम्भ किया 'दल मे मेरा काम लगभग समाप्त हो चुका है। तुम्हें दल में लाने का कार्य मुझे सौंपा गया है। उस में असफल रहता हूँ तो भी दल के नियमों के अनुसार मैं दल के लिए व्यर्थ हूँ और अगर मुझे खोकर भी दल तुम्हें पा लेता है तो यह उसके लिये महँगा सौदा नहीं है। मुझे गिरफ्तार करने वाले के लिए चार हज़ार रुपया पुरस्कार की घोषणा सरकार कर चुकी है। रजनी के विलायत भेजने का प्रबन्ध इतने में हो चायगा। संकेत की भाषा में पत्र लिख कर एक बन्द लिफ़ाफ़े में मैं तुम्हें अभी दिये देता हूँ। अगर दल की सेवा स्वीकार करने का निश्चय तुम कर लो तो आज की डाक निकलने से पूर्व ही उसे तुम पोस्ट कर देना।

पत्र अगर तुमने पोस्ट कर दिया तो तुम एक व्यक्ति के सम्पर्क में आ जाओगे जो रुपया वसूल होने और रजनी को विलायत भेजने की व्यवस्था होने के बाद तुम्हें उपयुक्त स्थान पर पहुँचा देगा।'

सुधीर को सारा कमरा घूमता सा प्रतीत हो रहा था और राजनाथ फुर्ती से पत्र लिखने लगा।

× × ×

राजनाथ को जब पुलिस की कार ले गई तो सुधीर बेचैनी से कमरे में चक्कर लगाने लगा।

थोड़ी देर के बाद सूटकेस से एक एल्बम निकाल कर उसे उलटना पुलटना शुरू किया। कभी उसकी दृष्टि गांधीजी के चित्र पर अटक

जाती थी, कभी भगतसिंह के चित्र पर और कभी रजनी के चित्र पर।

सहसा एक झटके के साथ गर्दन सीधी करके उसने दीवार घड़ी पर दृष्टि डाली। पौने पाँच बजे थे। राजनाथ का दिया हुआ पत्र उसने निकाला और पोस्ट आफ़िस की तरफ़ शीघ्रता के साथ चल दिया।



स
हा
रा

विनायक को जब पिता का तार आफ़िस में मिला तो तीन ही बजे बड़े साहब से इजाज़त लेकर अपने होटलनुमा मकान पर वापिस आ गया। उसे रात को नौ बजे की गाड़ी से घर जाना है, इस लिये चमड़े के सूटकेस में सामान ठीक करके लगाने लगा। कुछ आवश्यक सामान निकालने के लिये उसने मेज़ का दराज़ खोला तो उसकी दृष्टि एक एलबम पर पड़ी।

एलबम में से एक चित्र, जो उसमें वैसे ही रखा हुआ था अभी लगाया नहीं गया था, निकाल कर देखने लगा। सहसा प्रसन्नता से उसके नेत्र चमक उठे। उसके अधरों पर मुसकान की रेखा विद्युत के समान कौंध गई—"ठीक तो है!" उसने मन ही मन में कहा। चित्र को पुन: रखने के लिए उसने एलबम खोला।

एलबम खोल कर उसमें चित्र रख दिया, किन्तु एलबम खुला का खुला ही रह गया। फिर वह शीघ्र ही बन्द न किया जा सका। विनायक की मुख-मुद्रा गम्भीर हो गई। दो वर्ष हुए, गुलाब से जिस चेहरे को वह अपने हाथों से श्मशान भूमि में चिता की आग में जला चुका है, उसकी स्मृति हृदय पटल से इन दो वर्षों में धुँधली हो गई थी, किन्तु इस चित्र ने सब कुछ फिर एकाएक सजीव-सा कर दिया।

थोड़ी देर बाद विनायक ने एक गहरी सांस ली और एलबम को

बन्द कर दिया। वह कपड़े की आराम कुर्सी पर पड़ा आँखें मूंदे, थोड़ी देर तक, कुछ सोचता रहा। तब तार उसने दो बार फिर पढ़ा और उठ कर कपड़े सामान आदि ठीक करने लगा।

× × ×

जब विनायक स्टेशन पहुँचा तो गाड़ी आने में कुछ देर थी। सामान पास रखवा कर वह एक बेंच पर बैठ गया और स्टेशन की चहल पहल में अपने मस्तिष्क को उलझाने का प्रयत्न करने लगा। चेहरे को सफ़ेद, ओठों को लाल और भौहों को काले रङ्ग से पोते हुए एक हिन्दुस्तानी मेंम, चमड़े का एक बड़ा-सा बटुआ बग़ल में दबाए, उसके सामने से निकल गई। व्यंगपूर्ण शुष्क मुस्कराहट थोड़ी देर के लिये विनायक के ओठों पर आई और वह फिर विचार मग्न हो गया। स्टेशन पर इधर से उधर दौड़ते हुए जन समुदाय को देख कर वह सोचने लगा, संसार में मानव जीवन का प्रवाह, जल-प्रवाह के समान है, वहाँ स्थिरता कहाँ सम्भव है? जो विचार जीवन की प्रगति का अवरोध करें, उन्हें मस्तिष्क से दूर रखना ही होगा। तभी अब से छः महीने पूर्व का वह चित्र उसके हृदय में हरा हो गया जब उसकी बूढ़ी माँ ने नेत्रों में आँसू भर कर उससे दुबारा विवाह कर लेने की अनुनय-विनय की थी। माँ ने उस दिन कहा था—"अब मैं इस योग्य नहीं रही कि खाना बना सकूँ, घर का काम काज कर सकूँ। इन आखिरी दिनों में क्या मेरे लिये थोड़ा-सा भी आराम ज़रूरी नहीं है, भैया?" विनायक ने आज सोचा, माँ की एक भी बात ग़लत नहीं है। जो व्यक्ति चला गया, वह वापिस नहीं आ सकता। जो ज़िन्दा है, उसके आराम-तकलीफ़ की तो चिन्ता होनी ही चाहिये। यद्यपि वह उस समय साफ़ इन्कार करके चला आया। किन्तु जब पिता जी के भी आग्रह पूर्ण पत्र आए तो उसने उत्तर में अपनी

स्वीकृति घर भेज ही दी थी। थोड़े दिनों बाद ही पिता जी ने ललिता का चित्र पसन्द करने के लिये उसके पास भेज दिया। ललिता सुन्दर भी है, पढ़ी लिखी भी है, संगीत भी जानती है और घर के काम काज में भी कुशल है। ललिता का चित्र विनायक को बड़ा सजीव-सा, मनोमुग्ध-कारी-सा लगा था, इसीलिए जब लड़की देख जाने के लिए उसे पिता जी का तार मिला तो वह घर आकर बड़ी उमंग के साथ सामान ठीक करने में जुटा था मगर दो वर्ष पूर्व सदा के लिए बिछुड़ी पत्नी के चित्र पर आज जो अचानक निगाह पड़ गई, उससे मस्तिष्क में खिंचा ललिता का चित्र कुछ धुँधला-सा, मटमैला-सा हो गया। विषाद की घटा-सी उसके मस्तिष्क में उमड़-घुमड़ कर एकत्रित होने लगी। उस विषाद में केवल किसी चीज़ को खो देने का ही दुःख नहीं था, बल्कि गहरा पश्चात्ताप भी था, मानो खो देने की ज़िम्मेदारी भी उसी पर हो और अपनी गलती और अपराध की याद में उसका दिल अन्दर ही अन्दर सिकुड़ा-सा जाता हो। तभी कुली ने आकर कहा, "बाबू, गाड़ी की घण्टी बज गई।" और विनायक बेंच से उठ कर खड़ा हो गया।

विनायक तीसरे दर्जे के भीड़-भड़क्के में घुस कर किसी तरह डब्बे के अन्दर पहुँचा। उसने देखा, अधिकांश मुसाफिर कपड़े से मुंह लपेटे हुए ऐसे लेटे हैं मानों वे बहुत गहरी नींद में हों और उन्हें ज़रा भी सुध-बुध न हो। नए चढ़े हुए मुसाफिर अपने लिए जगह करने के प्रयत्न में लगे हुए थे। बेंच के एक किनारे पर एक स्त्री गोद में छोटा-सा बच्चा लिए उसे हिला कर चुप करने का प्रयत्न कर रही थी और उसकी बराबर में एक वृद्ध सज्जन पीछे तख्ते से पीठ लगाए बैठे ऊंघ रहे थे। विनायक को भी एक सज्जन के ज़रा पैर सिकोड़ कर लेटने के लिये राजी हो जाने पर, उनके चरणारविन्दों में थोड़ी-सी जगह मिल गई।

जब गाड़ी दोबार सीटी देकर चल दी तो विनायक खिड़की से बाहर सर निकाल कर तृषित नेत्रों से प्लेटफार्म पर दो युवकों का रुमाल हिलाना देखता रहा, जिसका उत्तर पास के डब्बे की खिड़की पर खड़ा एक और युवक हाथ हिला कर दे रहा था।

प्लेटफार्म निकल गया मगर विनायक की दृष्टि बाहर के पेड़-पौधों, पत्थरों, मैदानों ही में उलझी रही। बाहर आसमान में तारे खिले हुए थे और पूरे चाँद की चाँदनी छिटकी हुई थी। विनायक के नेत्रों को बाहर का यह दृश्य, डब्बे में सीटों पर गुटपुट हुए पड़े पुलिन्दों, बत्तियों के मटमैली प्रकाश और उन पर भनभनाते हुए पतिङ्गों से कहीं अधिक सुखद प्रतीत हुआ।

दूधिया चाँदनी में स्नान करती हुई प्रकृति की छटा देख कर विनायक को सहसा याद आगया कि ऐसी ही चाँदनी रात में एक बार उसने तारा के साथ यात्रा की थी। यों तो लगभग बचपन ही से साथ साथ रहने, खेलने के कारण वे दोनों एक दूसरे के काफ़ी समीप थे, किन्तु उस यात्रा में वे नए प्रकार से, नए रूप में एक दूसरे के और भी समीप आगए थे। तब उन्होंने अनुभव किया था कि क्षितिज से अंतरिक्ष तक व्याप्त हुई पूर्ण चन्द्र की शुभ्र ज्योत्स्ना में मानों उनकी अंतर्आत्माएं भी कपूर की भाँति घुल कर समा गई हैं और इस प्रकार आकाश से अवनि पर झरते हुए उस अमित सौंदर्य के स्रोत में लय होकर उन दोनों की आत्माएं आपस में मिल कर एकाकार हो गई हैं, उसी प्रकार जैसे पर्वत शिखर से एक सरिता में झरते हुए दो झरनों का जल सरिता-धारा में एकाकार हो जाता है, जैसे दो कुसुमों की सुगन्ध अनिल में लय होकर एक दूसरे के साथ घुल मिल जाती है। विनायक अपनी जीवन-यात्रा के उन दस वर्षों के विषय में सोचने लगा, जो उसने तारा के साथ बिताए थे। वे दोनों स्वच्छ

स्नेह की सरिता में सानन्द बहे जा रहे थे और जब विवाह-सूत्र में बँध कर एक दूसरे को और भी पूर्णता में पा लेने का समय आया तो समाज के कठोर नियमों की जंज़ीरें, दोनों के माता-पिताओं की परम्परागत कुल-मर्यादा-रक्षा की भावना तथा उसके अपने निजी संकोच तथा दुर्बलता ने बीच की मामूली-सी दो-तीन खाइयों को भी पार न करने दिया।

उसके नेत्रों के सम्मुख प्रकृति के सौंदर्य में से सिमट सिमट कर तारा की लाल चुनरी में ढकी ढकाई-सी सजल नेत्रों वाली वह मूर्ति साकार हो गई जो उसने फेरों की रात से अगले दिन देखी थी।

तारा के विवाह के सात आठ महीने पश्चात् पिता के आग्रह तथा माता के आँसुओं का मूल्य उसे भी विवाह करके चुकाना पड़ा था। बहुत प्रयत्न करने पर भी अपनी पत्नी कुसुमेश्वरी में वह अपना मन रमा नहीं पाया था, यद्यपि कुसुमेश्वरी कुसुमेश्वरी ही थी। विनायक को सदा उदास और जीवन के प्रति अलिप्त-सा देख कर कुसुमेश्वरी भी कुछ उदास रहने लगी थी। वह यह परिवर्तन देखता रहा था, किन्तु कुछ भी न कर सका था।

एक दिन कुसुमेश्वरी ने विनायक को सूटकेस से तारा का चित्र निकाल कर देखते हुए देखा था। न तो कुसुमेश्वरी ने ही उसके विषय में कुछ पूछा, न विनायक ही ने अपनी ओर से कुछ सफ़ाई पेश की। हाँ, उस घटना से उन दोनों के बीच की दूरी और भी बढ़ गई और कुसुमेश्वरी का विषाद और भी गहरा हो गया।

और जब बीस दिन के बुखार के बाद रक्त-परीक्षा करके डाक्टर ने कह दिया कि कुसुमेश्वरी को क्षय रोग हो गया है, तो विनायक को ऐसा लगा जैसे, आकाश में उड़ता उड़ता वह अचानक चट्टान पर आ गिरा हो। स्नेह वह पत्नी को नहीं दे पाया था, किन्तु उसके लिए

जितनी सहानुभूति, जितनी वेदना विनायक के हृदय में आरम्भ से ही रही है, उसे भगवान् के अतिरिक्त और कौन जान सकेगा?

विनायक ने अनुभव किया कि स्वप्न के पीछे सत्य की वह उपेक्षा करता रहा है। वह सत्य ऐसा है कि जीवन देकर भी उसकी रक्षा की जा सके तो वह महंगा नहीं। प्रयत्न बहुत किए गए, किन्तु फल कुछ भी नहीं हुआ।

कुसुमेश्वरी के दाह संस्कार से जब वह लौटा था तो उसने सोचा था कि पाने खोने की जो स्मृतियाँ है, जीवन पथ पर चलने के लिये उनका सहारा काफ़ी है। किन्तु दो वर्ष के नितांत एकाकी, सहारे-विहीन जीवन ने उसे पराजित किया। उसने सोचा, "इस इतने लम्बे चौड़े संसार में स्मृतियों की डोर पकड़े मनुष्य कब तक भटकता फिरे। कुछ न कुछ ठोस सहारा तो ढूंढ़ना ही होगा और फिर वृद्ध माता की मुसीबतें? कर्तव्य!"

इन सब बातों की याद से चन्द्रविहीन रात्री का अंधकार-सा उसके मानस में उमड़ आया था और उसे लगा था मानों नक्षत्रों के अश्रु-बिन्दुओं से उसके हृदय-कुसुम की पंखुड़ियाँ भीग कर भारी हो गई हैं। तभी हृदय के एक कोने से प्रकाश की एक किरण ऊषा का सन्देश लाती प्रतीत हुई। उसने सोचा, "ललिता सुन्दर हे, पढ़ी लिखी है, संगीत जानती है और उसकी दो चार रचनाएं भी उसने मासिक पत्रों में पढ़ी हैं। जीवन यात्रा के लिए ऐसा साथी और कहाँ मिल सकता है!" उसने निश्चय किया, "अब मैं वास्तविक जगत का व्यक्ति बनूँगा, विवाह अवश्य करूँगा…ललिता…… !"

इन विचारों से उसके मन का अंधकार बिल्कुल दूर हो गया था। उसके हृदय का बोझ हलका हो गया था। उसे लगा—मानो रात्रि भर समुद्र में हाथ पैर फेंकने के बाद थका-सा वह ऊषा के प्रभात

कालीन स्वर्णिम प्रकाश में, ठोस पृथ्वी पर आ खड़ा हुआ है। गाड़ी उस समय भी छकाछक छकाछक करती पृथ्वी की छाती पर दौड़ी चली जा रही थी।

× × ×

विनायक ने घर पहुँच कर एक ऐसा समाचार सुना जिसकी उसने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। जो सुना, वह यह था कि तारा के पति की मृत्यु हो गई है और वह छः महीने के एक शिशु को लेकर अपने पतिगृह से वापस आ गई है। जब से उसके चरण पतिगृह में पहुँचे थे, तभी से उस कुटुम्ब पर एक के बाद दूसरी आपत्ति आती गई और सब से ज़बरदस्त आघात तारा के पुत्र-जन्मके दूसरे ही दिन हुआ—तारा के पति की मौत। तारा अभागिन है और उसका पुत्र भी अभागा है, जो जन्म लेते ही पिता को खा गया। तारा को समझा दिया गया है कि अब अपनी या अपने पुत्र की छाया तक भी कभी इस घर में न पड़ने दे।

विनायक शीघ्र ही तारा से मिलने गया। बिना किनारे की सफ़ेद धोती पहने हुए आभूषण तथा चूड़ियों विहीन तारा की प्रतिमा विनायक की सम्पूर्ण सत्ता को बेधती चली गई। उसने देखा, तारा दुबली हो गई है और इसीलिए बीमारी से उठे हुए व्यक्ति की भाँति कुछ और अधिक सफ़ेद भी प्रतीत होती है, किन्तु विषाद की एक भी रेखा उसके चेहरे पर नहीं है। विनायक को वह नितांत शाँत, हर्ष-विषाद रहित, द्वन्द्वातीत-सी प्रतीत हुई। गोद में वह छोटा-सा शिशु लिए हुए थी।

थोड़ी देर तक ऊपरी इधर उधर की हल्की बातें निस्तब्धता को भंग करती रहीं। फिर विनायक ने कहा—"देखो तारा, मैंने कभी तुम से कुछ नहीं माँगा। अगर आज याचक बनूं तो दान में

कृपण तो नहीं हो जाओगी ?"

"मैंने कब तुम्हारी किसी आज्ञा की अवहेलना की है ?" तारा ने उत्तर दिया।

"देखो, इस बच्चे को मेरे लिए पाल-पोष कर बड़ा कर दो। जिस दिन यह इस योग्य हो जाए कि तुम से अलग मेरे पास रह सके, उस दिन यह मुझे सौंप देना।"

"बस, इतना ही ?" तारा ने पूछा।

विनायक ने कुछ भी नहीं कहा। उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था। वह जाने के लिए उठा।

तारा ने पूछने का प्रयत्न किया—"फिर कब···?"

विनायक ने बीच ही में उत्तर दिया—"बिल्कुल अनिश्चित है। मैं आज ही सायंकाल की गाड़ी से वापिस जा रहा हूँ।"

"किन्तु................!"

"मैं कहता हूँ, किन्तु-विन्तु कुछ मत पूछो तारा!"

एक ही साथ विनायक के हाँथ भी आगे बढ़े और तारा के हाथों में सोता हुआ, वह नन्हा-सा शिशु भी। विनायक ने उसे गोद में लेकर उसके सर पर हाथ फेरा और मुख को चूम कर फिर तारा की गोद में वापिस दे दिया।

सायंकाल को जब विनायक बिना ललिता को देखे ही, सामान लेकर स्टेशन चल दिया और विवाह न करने का अपना अन्तिम निश्चय बताता गया तो घर के सभी प्राणी हतबुद्धि से, पाषाण प्रतिमा से रह गए।



प्र
श्न
का
उ
त्त
र

मैं पुस्तक उठा कर पढ़ने लगा, "मानव समय के सागर में तैरता हुआ एक तिनका है। परिस्थितियों की लहरें कुछ तिनकों को किसी अज्ञात स्थान से ला कर उसी बहाव में डाल देती हैं जिस में वह बह रहा है। कुछ काल तक वह उन तिनकों के साथ बहता है, अचानक फिर हवा का एक झोंका आता है और उसके पश्चात् वह देखता है, उस बहाव में वह एकाकी है—एकाकी ही है।" इतना पढ़ने के पश्चात् मुझे पुस्तक बन्द कर देनी पड़ी क्योंकि विचारों का एक तूफ़ान सा मेरे मस्तिष्क में उठ गया था। अर्द्ध रात्रि की नीरवता को घड़घड़ाहट के शब्द से चीरती हुई हावड़ा एक्सप्रेस दौड़ी चली जा रही थी और असंख्य विचार आ कर मेरे मस्तिष्क में टकरा रहे थे। प्रश्न वे थे किन्तु उन का उत्तर मैं अपने अन्दर नहीं पाता था। "क्या मानव केवल एक तिनका है? क्या व्यक्तिगत दृढ़ता, उसका अपना निजी आंतरिक बल, कुछ भी महत्व नहीं रखते? क्या उसकी निजी दृढता और आंतरिक बल के अस्तित्व से भी इन्कार करना

होगा ?" मैं सोचता चला जा रहा था, किन्तु मुझे अपने विचार जगत् के चारों ओर वैसा ही घना अंधकार प्रतीत होता था जैसे घने अंधकार को चीरती हुई वह एक्सप्रेस धड़धड़ाती चली जा रही थी। "हाँ, तो इस बात से इन्कार मै क्यों करूँ कि मानव व्यक्तिगत विचार-शक्ति तथा निजी आंतरिक बल से विहीन नहीं है ? मैं अपनी इच्छा से कलकत्ता जा रहा हूँ ! मैंने अपने निजी बल से उस सैनिक अफ़सर की हत्या की थी जिसने देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले निर्दोष किसान मजदूरों पर गोली चलवाई थी। व्यक्तिगत विचार-शक्ति...निजी बल ?......किन्तु उस अज्ञात, अदृश्य पर सार्वभौम तथा अनन्त चट्टान के अस्तित्व से कौन इन्कार करे, जिससे टकरा कर मानव की आकांक्षाएँ तथा उन की पूर्ति के लिए किए गए प्रयत्न चूर-चूर हो जाते हैं ? यदि कोई चाहे भी तो अविराम गतिशील, निर्दयता से कुचलने वाले उस अदृश्य किन्तु शक्तिशाली चक्र के अस्तित्व से कैसे इन्कार करे, जब उसका अपना हृदय ही असंख्य अरमानों के मज़ारों का कब्रिस्तान बना हुआ है ?" प्रश्न मेरे हृदय में गहरा उतरता जा रहा था किन्तु समाधान उस का कहीं भी था नहीं और हृदय तीव्रतर उद्विग्नता से पुकार उठता था, "तो क्या मानव तिनका है ? वह एक तिनका मात्र है ?"

मैं उस समय कम्पार्टमेंट में अकेला था। सीट से उठ कर मैं खिड़की पर जा खड़ा हुआ। डिब्बों से गिरने वाली प्रकाश की एक धारा पटरी के समीप की भूमि को प्रकाशमान् करती तीव्रगति से दौड़ी चली जा रही थी। मैंने देखा, सब कुछ अंधकार के गर्त में विलीन है। सैकड़ों जीवित मनुष्यों को लिए दौड़ी चली जाने वाली इस निर्जीव रेल के डिब्बे से निकलने वाला प्रकाश क्षण भर के लिए समीप की वस्तुओं को प्रकाशमान् कर देता है और फिर सब कुछ अन्धकार में

दृष्टि से ओझल हो जाता है, और उस प्रकाश में मै ने पीछे की ओर दौड़ते प्रतीत होने वाले कुछ शिलाखंडों को देखा, वृक्षों को देखा और हरी घास में बिदकते पशुओं की कल्पना की। मै ने सोचा ये सब कितने अशक्त है ? कितने निर्बल ? मानव इन सब पर शासन करता है। किन्तु मानव ? अपने आप को सर्वोच्च समझने वाला वह शासक मानव ? क्या वह शक्तिशाली है ? स्वतन्त्र है ? क्या यह उस की शक्ति के अन्दर की बात है कि जिस धारा में वह बह रहा है उसे त्याग कर, उस से अलग हो जाय ? जिधर उसकी इच्छा हो उधर चला जाय ? या जहाँ वह है वहीं रुक जाय ?" और इन बातों की प्रतिकार बन कर मेरे जीवन की चूर्ण हुई अकांक्षाएँ तथा असफलताएँ पुनः सजीव बन कर मेरे नेत्रों के सम्मुख नाचने लगीं।

उन दिनों की याद मुझे हो आई जब मैं आठ वर्ष का था। मेरे पिता की मृत्यु तो बचपन ही में हो गई थी, पिछले वर्ष मेरी माता को भी वायु के एक तीव्र झोंके ने मुझसे अलग कर न जाने किस अज्ञात स्थान पर पहुँचा दिया था और उस के पश्चात् मैं अपने चचा के साथ रहने लगा था। मेरे घर के समीप ही सुधीर का घर था। हम दोनों अभिन्न मित्र थे। न जाने कितनी बार हम ने भावी जीवन इकट्ठे व्यतीत करने का निश्चय किया था। सुधीर कहा करता था 'देखो शंकर, जब हम बड़े हो जायँगे तो एक खूब बड़ी दूकान खोलेंगे...... हैं ? और एक मोटर लेंगे, जिसमें दोनों साँझ को घूमने जाया करेंगे।' और तब मुझे लगता था कि माता पिता विहीन होने पर भी मैं अकेला नहीं हूँ।

सुधीर के घर में एक और भी प्राणी था जिस में मैं अपनापन देखता था। वह सुधीर की छोटी बहिन श्यामा थी। श्यामा मुझसे दो वर्ष छोटी थी। इतवार के दिन हम तीनों पीपल के पत्तों के पान

बना कर बेचा करते थे।

इसी प्रकार दस वर्ष व्यतीत हो गए। इतने समय में मैं, सुधीर और श्यामा एक दूसरे से न जाने कितनी बार रूठे होंगे किन्तु प्रत्येक बार के रूठने ने हमें एक दूसरे के और भी निकट पहुँचा दिया था। मुझे ऐसा लगा करता था मानो सुधीर और श्यामा, केवल यही दो डोर है जो आकाश में उड़ती हुई मेरे जीवन की असहाय पतंग को पृथ्वी से संबंधित किए हैं। और कभी-कभी मैं सोचा करता था जिस अज्ञात शक्ति ने पिता को मुझसे बरबस छीन लिया, माता की गोद के सुख से मुझे वंचित कर दिया, उसी ने यदि इन दो डोरों को भी मुझ से काट दिया तो मेरी क्या दशा होगी? और उस समय मुझे लगता, मानो मैं एक बहुत ऊँचे शिखर पर खड़ा हूँ जिसके परली ओर मार्ग हैं नहीं—केवल एक अन्धकारमय अतल गर्त है। सुधीर से अधिक मुझे श्यामा की चिन्ता होती क्योंकि मैं सोचता, "सुधीर जहाँ भी रहे उसके साथ मैं रह सकता हूँ, किन्तु श्यामा?"

नदी-नालों तथा जङ्गलों को पार करती रेल दौड़ती चली जा रही थी और मैं खिड़की के समीप बैठा अतीत के युग में विचरण कर रहा था, "श्यामा के साथ मैं सदा नहीं रह सकता। क्यों कि विवाह जैसी भी तो एक चीज़ है। लड़कियों के लिए विवाह के माने हैं अपने सब पुराने सगी साथियों को छोड़ कर नए व्यक्ति, नए घर, नए वातावरण से सम्बन्ध स्थापित करना।" और तब इन अप्रिय आशंकाओं को बरबस धकेल कर मैं अपने से दूर कर देता और उन मधुर घड़ियों की याद मुझे आ जाती जब मुझे जरा भी चिंतित देख कर श्यामा सहानुभूति तथा स्नेह से पूछा करती थी, "शंकर, तुम आज उदास क्यों हो?" वह कहती, "क्या मुझसे भी अपनी उदासी का कारण न बताओगे?" मानो मुझ पर वह अपना कुछ विशेष अधिकार समझती

थी। और जब मैं उस बात को टालने का प्रयत्न करता तो वह आग्रह करती, "कारण चाहे न बताओ किन्तु प्रसन्न रहा करो शंकर, अपने लिए नहीं तो कम से कम मेरे लिए प्रसन्न रहा करो।" और तब मुझे लगता सहानुभूति तथा स्नेह के इस प्रकाश की एक किरण का मूल्य भी यदि अपना सब कुछ दे कर चुकाना चाहूँ तो नहीं चुका सकता। तब मैं सोचता, विवाह के दृष्टिकोण से मेरे तथा श्यामा के बीच में जो जाति भेद तथा और न जाने किन-किन भेदों की गहरी खाइयाँ हैं, क्या उन्हें भरा नहीं जा सकता? तभी मुझे ध्यान आता कि चाची तो सुधीर के यहां का पानी तक नहीं पीती।

चार महीने के लिए मुझे चाचा जी के साथ विभिन्न स्थानों की यात्रा करने जाना पड़ा और जब वहां से मैं लौटा तो मैं ने देखा सुधीर और श्यामा वहाँ नहीं हैं। इधर उधर पूछने पर जाना कि उन के पिता जी की किसी और शहर को बदली हो गई है और अभी कल सायंकाल वह यहाँ से चले गए।

वहाँ आने के तीन दिन बाद ही एक तीव्र लहर ने मेरी निराधार जीवन नौका को क्रांतिकारी दल में ला पटका। एक प्रकार से उस दल का सदस्य तो मैं पहिले ही से था, किन्तु उस समय मुझे दल की क्रियात्मक सेवा के लिए बुला लिया गया और इसलिये मुझे समाज से बिल्कुल संबन्ध-विच्छेद कर देना पड़ा। एक नवीन रूप में, नवीन वातावरण में मैंने अपना जीवन आरम्भ किया। न जाने कितनी बार मेरे मन में प्रबल इच्छा हुई कि किसी प्रकार सुधीर तथा श्यामा का पता चलाऊँ। मुझे विश्वास था कि चाचा जी के पते से मेरे नाम सुधीर के पत्र आए होंगे। किन्तु अब शंकर के रूप में समाज के सामने आना मेरे लिए असंभव था।

इन सब बातों को सोचते-सोचते मेरे सर में दर्द सा हो गया था।

दोनों हाथों से मैं ने अपने मस्तक को दबाया किन्तु उस विचारधारा से छुटकारा पाना मुझे अपनी शक्ति से बाहर की बात प्रतीत होती थी और रेल के बाहर सुदूर घने अंधकारमय शून्य में देखता हुआ मैं सोचता चला जा रहा था, "दस वर्ष उपरान्त उस सैनिक अफ़सर की हत्या करने के पश्चात् तो मुझे अपना रंग रूप बिलकुल ही बदल देना पड़ा क्यो कि बहुत दिनों तक मुझे पकड़ने में असमर्थ रहने के कारण मुझे पकड़ने वाले के लिए पाँच हजार रुपये के पुरस्कार की सरकार ने घोषणा की थी। किंतु उस बात को भी आज पूरा एक वर्ष होगया।" और इस के पश्चात फिर वही प्रश्न प्रबल लहरो के समान मेरे हृदय में उठने लगा। "हाँ, तो क्या मानव अपने लिए इच्छानुसार पथ निर्धारित करने के लिए स्वतन्त्र है? सबल है? क्या मैं कह सकता कि जो कुछ अब तक हुआ मेरी इच्छा के अनुकुल हुआ?" जैसे-जैसे इन प्रश्नों की लहरें प्रबल होती जातीं, एक विचित्र प्रकार की बेचैनी मेरे मस्तिष्क में बढ़ती जाती और मैं सोचता "जो कुछ हुआ क्या कभी इसकी स्वप्न में भी मैं ने कल्पना की थी? क्या आज मैं स्वतन्त्र तथा सबल हूँ कि भविष्य के लिए जो पथ चाहूँ चुन लूं?" इन सब प्रश्नों का उत्तर मुझे 'नहीं' में मिलता और हृदय विकल हो कर पुकार उठता, "तो क्या मानव एक तिनका मात्र है? वह परतंत्र तथा नितांत शक्तिहीन एक तिनका मात्र है? जब वह क्षुद्र है तो अपनी क्षुद्रता वह स्वीकार क्यों नहीं करता, क्यों नहीं करना चाहता?"

कोई स्टेशन आ जाने से गाड़ी रुक गई और उसके साथ मेरी विचार शृङ्खला भी भंग हो गई। मैं खिड़की के समीप से आ कर अपनी सीट पर बैठ गया। मैं ने देखा एक और व्यक्ति मेरे डिब्बे में आ गया है। अपने उन विचारों से छुटकारा पाने के लिए मैं उस व्यक्ति से वार्तालाप करने लगा।

"आप कलकत्ते जा रहे हैं ?" मैं ने उस नवागंतुक से प्रश्न किया ।

"कलकत्ते से चार पाँच स्टेशन इधर एक छोटा सा गाँव है, वहाँ जाना है ।" उसने उत्तर दिया ।

"गाँव......?"

"हाँ, गाँव शहर से आठ नौ मील की दूरी पर है । वहाँ इक्के से जाना होता है ।"

"आप पुलिस सर्विस में हैं ।" मै ने उसके चेहरे पर एक प्रकार की कठोरता की छाप देख कर पूछा ।

"हाँ, मैं देहली में सर्किल इन्सपेक्टर हूँ ।"

"आप का शुभ नाम !"

"सुधीर चरण ।"

"सुधीर" यह शब्द मेरे अन्दर गूंज सा उठा । मैंने ध्यान से उस व्यक्ति को देखा । उसका रंग साँवला था किन्तु चेहरा सुडौल तथा सुन्दर था । मैंने उसे पहचानने का प्रयत्न किया और पाया कि वह बचपन का साथी मेरा सुधीर ही है । मैं सोचने लगा कि यद्यपि बारह वर्ष का समय कम नहीं होता किन्तु फिर भी समय क्या मनुष्य में इतना अधिक परिवर्तन कर सकता है । जब अंतिम बार मै ने उसे देखा था तो उस का रंग शरद चन्द्र की ज्योत्स्ना के समान उज्ज्वल था, उसके चेहरे पर कोमलता तथा सुकुमारता मानो किसी चतुर चित्रकार ने चित्रित की थी । उस के स्थान पर आज तेज धूप से जला हुआ यह साँवला चेहरा और उस पर अमानुषिक कठोरता की यह स्पष्ट छाप, जो पुकार पुकार कर कहती थी, अवसर पड़ने पर यह क्या नहीं कर सकता । आवाज में भी तो कितना अन्तर हो गया । मेरे हृदय में रह-रह कर यह प्रश्न उठता था—"बारह वर्ष, किन्तु इतना जबर्दस्त

अन्तर ।" अपनी आवाज और रंग को बदलने के लिए मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा था—बहुत से रसायनिक 'पदार्थों' का प्रयोग करना पड़ा था। यह सब करने पर भी मूछ और दाढ़ी बढ़ानी पड़ी। और यह प्राकृतिक परिवर्तन। किन्तु इतना परिवर्तन होने पर भी मुझे निश्चय हो गया था कि यह मेरा परिचित सुधीर ही है। मेरी अन्त-रात्मा उस समय पिंजड़े में बन्द पत्ती के समान छटपटा रही थी। आज बारह वर्ष के बाद मुझे अपने सूने जीवन में एक ऐसा व्यक्ति मिला जिस से मैं ने सहानुभूति तथा स्नेह पाया था, जिस से मै किसी प्रकार का नाता रिश्ता समझ सकता था। मेरा जी चाहता था कि एक बार सुधीर को अपने भुजापाश में बाँध लूं, उसके वक्षस्थल को अपने वक्षस्थल पर इतने जोर से दबाऊँ कि दोनों के दिल की धड़कन एक हो जाय और प्रतीत हो कि कुछ देर के लिए हम दोनों के प्राण भी एक हो गए हैं। किन्तु उफ़! अपना वास्तविक नाम भी आज मै उसे नही बता सकता। "नहीं, मुझे निर्बल नहीं होना है। मैं निर्बल नहीं होऊँगा।" मैं सोचने लगा, "मेरे ऊपर बड़ा जबर्दस्त उत्तरदायित्व है। मेरे साथ इस समय दल के बहुत से ऐसे कागज है, जिनके पकड़े जाने पर दल के सैकड़ों व्यक्ति फाँसी पर लटका दिए जा सकते हैं।" और जल्दी-जल्दी, मन ही मन में मैं उन प्रतिज्ञाओं को दोहराने लगा जो मैने दल का सदस्य बनते समय भारत माता की मूर्ति पर हाथ रख कर की थीं। "आज मै अपना सम्पूर्ण जीवन माँ के चरणों में अर्पित करता हूँ। आज से मेरे जीवन का एक मात्र ध्येय माँ की स्वतन्त्रता के लिए लड़ना होगा।" मेरा हृदय तीव्र गति से स्पंदन कर रहा था और मन में मै दोहरा रहा था, "किसी भी व्यक्ति विशेष से मेरा आज से कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। दल की आज्ञा के सम्मुख

मैं इस बात की भी कभी चिन्ता न करूँगा कि इसके पालन में मेरे प्राणों तक का उत्सर्ग हो सकता है। दल के प्रति विश्वासघात करने का दंड मेरे लिए मृत्यु होगा।" और तब अपनी सीट पर से मैं उठा और फिर खिड़की के समीप आकर खड़ा हो गया। मैंने देखा कि सुधीर ने बिस्तर खोल दिया है और सोने की तैयारी कर रहा है।

मैंने पूछा, "आप गांव...क्या वहाँ कोई..." वाक्य मेरे मुंह से पूरा नहीं निकल रहा था किन्तु उसने बीच ही में उत्तर दिया "वहाँ मेरी बहन है। मुझे सूचना मिली थी कि वह बहुत सख्त बीमार है। उसे ही देखने जा रहा हूँ।" मैं जानता था कि सुधीर के केवल एक ही बहन है। मेरे अन्दर बड़े वेग से उठ-उठ कर यह बात आ रही थी कि एक बार पूछलूं, "क्या श्यामा बीमार है? मेरी श्यामा सख्त बीमार है?" किन्तु इस बात को मैं अन्दर ही दबाए था। फिर भी मैंने धीमे से पूछा, "आप की सगी बहिन हैं?"

"हाँ" उसने लेटते ही कहा और लेट कर नेत्र बन्द कर लिए। मुझे बड़ा विचित्र सा लग रहा था कि सुधीर की बहिन श्यामा सख्त बीमार है, वह उसे देखने जा रहा है किन्तु वह टांग फैला कर सो भी सकता है। द्वन्द्व मेरे अन्दर बढ़ता जा रहा था, "श्यामा एक गाँव में? उसका विवाह तो हो ही गया होगा किन्तु वह एक छोटे से गाँव में क्यों? यदि वह अच्छी न हुई तो फिर कभी भी..." और तभी मुझे लगा मानो ट्रेन के डिब्बे के बाहर श्यामा का चेहरा हवा में तैरता मेरे साथ-साथ चला जा रहा है। मुझे प्रतीत हुआ मानो वह कह रही है "शंकर तुम सदा उदास रहते हो। तुम्हें उदास देख कर मेरा जी न जाने कैसा होने लगता है।" और तभी मैंने सोचा "क्या एक बार

फिर मैं श्यामा को देख नहीं सकता ? किन्तु मैं के क्या अर्थ ? आज से बारह वर्ष पूर्व का शंकर या आज का रामनाथ ? और तभी मैंने पाया दोनों में से एक भी आज जा कर श्यामा को देख नहीं सकता। किन्तु श्यामा बीमार है, सख्त बीमार और शायद फिर जीवन भर उसे देखने का अवसर न मिले !" सुधीर बर्थ पर टांग फैलाए सो रहा था और ट्रेन हम दोनों को लिए उस स्थान की ओर दौड़ी चली जा रही थी जहाँ श्यामा बीमार है, किन्तु मै तो श्यामा को नहीं देख पाऊँगा। मैं अपनी सीट पर आ बैठा और फिर पुस्तक पढ़ने का प्रयत्न करने लगा। "कुछ काल तक वह तिनकों के साथ बहता है। अचानक फिर हवा का झोंका आता है और उसके पश्चात वह देखता है, उस बहाव में वह एकाकी है, एकाकी ही है।"

तभी गाड़ी ने जोर से सीटी दी और सुधीर हड़बड़ा कर उठ बैठा। जल्दी से उसने बिस्तर इकट्ठा कर लिया। थोड़ी देर बाद गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी और सुधीर गाड़ी से उतर गया।

मैं कठपुतली के समान उठा और द्वार पर जा कर खड़ा हो गया। सुधीर सामने चला जा रहा था। जी चाहता था कि एक बार उसे पुकार लूं। "सुधीर" किन्तु मैं किसी प्रकार चुप रहा। गाड़ी सीटी दे कर फिर चल दी और मैं द्वार पर खड़ा का खड़ा ही रह गया। यह सोचता हुआ "मानव की शक्तिहीनता और परतंत्रता शायद पशु की शक्तिहीनता और परतंत्रता से भी कहीं अधिक भयंकर है क्यों कि उसके पास सोचने और समझने के लिए मस्तिष्क है।" और आज भी जब जब मुझे श्यामा की याद आती है तो मैं अपने से पूछता हूँ "क्या मै पता चला सकता हूँ कि वह अभी तक जीवित है या नहीं ? क्या इस जीवन में मैं एक बार, केवल एक बार उस से मिल सकता हूँ ?" और जब इसका उत्तर मुझे एक भयंकर "नही" में मिलता है

तो मेरी अन्तरात्मा चीत्कार कर उठती है "तो क्या मानव एक तिनका है ? व्यक्तिगत दृढ़ता तथा शक्ति से रहित एक असहाय तिनका मात्र है ?" और तभी हृदय के एक कोने में छिपी हुई श्यामा मानो कह देती है—"शंकर मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर हूँ और तुम स्वयं अपने प्रश्न के उत्तर हो !"

